श्रीः ।

बालतन्त्रम् ।

(नानाविधौषधोपचारप्रयोगसंदर्भितम्)

विद्वद्वरकल्याणवैद्यविरचितम् ।

रोहतकजिलान्तर्गतबेरीनिवासिपण्डितवर-
नन्दकुमारराजवैद्यविरचितया,
भाषाटीकया समेतम् ।

तदेतत्

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन)

[स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

आषाढ संवत् १९७१ शके १८३६.

श्रीः ।

अथ बालतंत्रस्थविषयानुक्रमणिका ।



॥ श्रीः ॥

अथ बालतंत्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।



विघ्नव्रततिविध्वंसकारिणं दुःखहारिणम् ॥ कल्याणोऽहं नमस्कुर्वे विघ्नेशं ग्रंथसिद्धये ॥ १ ॥ प्रयोगसारप्रमुखागमेषु प्रोक्तेषु शास्त्रेषु च सुश्रुताद्यैः ॥ यदुक्तमेकत्र नियुक्तमस्मिन् ग्रंथे मया तत्खलु बालतंत्रे॥२॥अष्टौ दोषास्तु नारीणां नवमःपुरुषस्यच ॥ रक्तात्पित्तात्तथावाताच्छ्लेष्मणः संनिपातकात् ॥३ ॥ ग्रहदोषविकारेण देवतानांप्रकोपनात् ॥ अभिचारकृताच्चैव रेतोहीनः पुमांस्तथा ॥ ४॥ काकवंध्या मृतवत्सागर्भस्राव्यस्तु याः स्त्रियः ॥ आदिवंध्याश्च गीयंते दोषैरेभिर्नचान्यथा ॥ ५ ॥

दोहा–इष्ट देवके चरणको, नुतके बारंबार ॥
बालतंत्र भाषा करूं, संस्कृतके अनुसार ॥ १ ॥
जिले रोहतक बेरीपुरी, है गो हमरो ग्राम ॥
पंडितनंदकुमारजी, वैद्य हमारो नाम ॥ २ ॥

वार्तिक भाषा–विघ्नोंके विस्तारोंके नाश करनेवाळे दुखोंके हरनेवाळे एतादृश विघ्नोंके ईश गणेशजी महाराजको ग्रंथकी

इति बालतंत्रस्थविषयानुक्रमणिका समाप्ता॥

कारं कृष्णं स्रवति शोणितम् ॥७ ॥ कटिशूलं नवे-त्तस्या उदरं परिदह्यते॥ प्रदरं च करोत्युष्णमेतत्पि-त्तस्य लक्षणम् ॥८॥ प्रत्योषधं प्रवक्ष्यामि येन गर्भो-भिजागते ॥ उत्पलं तगरं कुष्ठं यष्टीमधुकचंदनम् ॥ एतानि समभागानि छागीक्षीरेण पेषयेत् ॥९॥ पिबे-न्नारी त्रिरात्रं वा यावत्स्रवति शोणितम् ॥ ततो योन्यां विशुद्धायामिमां दद्यान्महौषधिम् ॥ १० ॥ लक्ष्मणां क्षारसंयुक्तां नस्ये पाने प्रदापयेत् ॥ तेन ना लभते पुत्रं रूपवंतं महाकविम् ॥ ११ ॥

भाषा—जिस स्त्रीके फूल आवे फल नहीं लगे अर्थात् ऋतुमती होवे गर्भाधान नहींहो उसका आर्तव दूषित होताहै. प्रथम उसके विकारोंको देखके पश्चात् चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ॥ ६ ॥जिस स्त्रीका फूल पित्तसे दूषितहै उसका आर्तव वैद्यने देखना चाहिये.जैसा पका हुवा जामुनका फल होताहै ऐसा काला रुधिर ऋतुकालमें योनिद्वारा स्रवै ॥ ७ ॥ और कटिमें शूल हो पेटमें जलनहो हाथ पैर गरम रहें रुधिर गर्म गिरे इतने लक्षण पित्तदूषित आर्तवके हैं ॥८ ॥ अब इसकी औषध कहते हैं, जिस्से यह विकार शांतहो.और गर्भ स्थितहो.—कमलगट्टा,तगर, कूट, मुलहटी, सफेदचंदन ये द्रव्य सब समान लेके कूटकर बकरीके दूधमें पीसके कपड़ासे छानके तीन दिन ऋतुकालमें स्त्री पान करे या जितने दिन आर्तव जारी रहे उतने दिन पर्य्यंत पानकरे. इससे योनि शुद्ध होजानेसे पीछे इस महौषधी

आदिमें कल्याण नामक मैं वैद्य नमस्कार करताहूं किसवास्ते ग्रंथकी सिद्धिके वास्ते अर्थात् निर्विघ्नतासे समाप्तिके वास्ते ॥ ॥ १ ॥ सुश्रुतादिक मुनियोंके कहे हुए प्रयोगसारसे आदि लेके बहुत तंत्र हैं उन्होंमें जो सार सुश्रुतादिकोंने कहाहै सोई सार इस बालतंत्रग्रंथमें हम नियोजना करते हैं ॥ २ ॥ स्त्रियोंके आठ दोषहोते हैं और नवमा दोष पुरुषका होता है, रक्तसे १पित्तसे२ वातसे ३ कफसे ४ संनिपातसे ५ ग्रहके दोषसे ६ देवताओंके कोपसे ७ अभिचारसे अर्थात् गुरु वृद्ध देवताओंके शापसे ८ ऐसे आठ प्रकारके स्त्रियोंके विकार होतेहैं और पुरुषका वीर्यहीनताका एक दोष होता है ऐसे नव विकारोंसे संतानका अवरोध होताहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ अब स्त्रियोंके वंध्यापनके तीन भेद और कहतेहैं, प्रथम काकवंध्या १ जिस स्त्रीकेएक सन्तान होकर फिर नहीं हो. उसको काकवंध्या कहतेहैं,दूसरी मृतवत्सा जिसके संतान हो होके मर जावें उसको मृतवत्सा कहते हैं.तीसरी गर्भस्रावी जिस स्त्रीके गर्भ ; स्थित हो हो कर स्रवजावे गर्भ पूरा न होय उसको गर्भस्रावी कहते हैं.ऐसी तीन प्रकारकी वंध्या आठ प्रकारकी-वंध्याओंसे न्यारी हैं. और एक आदिवंध्या जिसके गर्भमात्रभी स्थित, नहो. ये सब वंध्या अपने उदरके दोषसे होतीहैं और कारणसे नहीं होतीहैं॥ ५ ॥

पुष्पंतु जायते यस्याः फलं चापि न विद्यते॥ तस्या दोषविकारांश्च ज्ञात्वा कर्म्म समारभेत् ॥ ६ ॥यस्याः पित्तहतं पुष्पं प्राज्ञस्तदुपलक्षयेत् ॥ पक्कजंबूफला-

और कटिमें शूल रहै, अर्थात् दर्द रहै और योनिमें शूल रहै ज्वर रहै इतने लक्षण वायुपीडित ऋतु आनेके हैं ॥ १३ ॥ अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं । आंबकी जडकी छाल दोनों कटेलियोंकी जड़ जामुनके जड़की छाल यह सम मात्रा लेकर गौके दूधमांह पीसकर वह स्त्री पीवै ॥ १४ ॥ पांचदिन तथा सात दिन यावत् रक्त स्रवै तावत् पीवे पीछे योनि शुद्धहोनेसे लक्ष्मणा जडी दूधके साथ पीवे और सूंघे यह उपाय॥ १५॥ करनेसे वह स्त्री रूपवान् गुणवान् पुत्रको प्राप्तहो और जिस स्त्रीके कफ विकारसे पीडित फूल आवे उसकेभी फल नहीं लगता है॥ १६ ॥ अब उसके लक्षण कहते हैं, रक्त चिकणा और घणा पड़े और बहुत लाल नहीं अर्थात् प्याजी रक्त पडे और नाभिके विषय शूल दारुण रहै इतने लक्षण कफपीडित ऋतु आनेमें होते हैं ॥ १७ ॥ अब उसकी चिकित्सा लिखते हैं, आककी जड, मेहदी, लोंग, नागकेसर, खरेटीकी जड, गंगेरनकी छाल यह सब औषधी सममात्रा लेके बकरीके दूधमें घोटके वह स्त्री पीवे ॥ १८ ॥ अथवा हरड़, बहेड़ा, आँवला, सूंठ, मिरच, चीता, यह सब औषधी सममात्रा लेके बकरीके दूधमें पीसके घोल छानके पीवे ॥ १९ ॥ तीन दिन तथा पांचदिन जितने खून स्रवे उतने दिन पीवे, फेर योनि शुद्ध होनेसे लक्ष्मणा जडी, बकरीके दूधमें घोटके पीवे और सूंघे उस स्त्रीके गर्भहो रूपवान् गुणवान् पुत्रहो ॥ २० ॥

संनिपातहतं पुष्पं ज्वरस्तीव्रश्च जायते ॥ शोणितं

को दे ॥ ९ ॥ १० ॥ लक्ष्मणा जड़ीको गौके दूधमें पीसके छानके सूंघे और पीवे दिन १२ पर्यंत ऐसे करनेसे स्त्री रूपवाला और गुणवाला पुत्रको उदय करै ॥ ११ ॥

यस्यावातहतंपुष्पंफलंतस्यानविद्यते ॥ अतिसूक्ष्मतररक्तंकुसुंभोदकसन्निभम् ॥ १२ ॥ कटिशूलं भवेत्तस्यायोनिशूलंतथाज्वरम् ॥ १३ ॥ सहकारस्यमूलंचमूलंव्याघ्रीभवंतथा ॥ वृहतीजंबुमूलेच क्षीरेणालोडयसापिवेत्॥ १४॥ सप्ताहंपंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणां क्षीरसंयुताम् ॥१५॥ नस्येपानेचदातव्यंतेनसालभते सुतम् ॥ यस्याः श्लेष्महतं पुष्पं तस्या नापि भवेत्फलम् ॥ १६ ॥ बहुलंपिच्छिलंरक्तंनातिरक्तं वहेत्तदा ॥ नाभिमंडलमूलेतुशूलंभवतिदारुणम् ॥ ॥ १७ ॥ अर्कमूलंप्रियंगुंचकुसुमंनागकेसरम् ॥ वलांचातिवलांचैवछागीक्षीरेणपेपयेत् ॥ १८ ॥ त्रिफलात्रिकटुंचैवचित्रकंसमभागिकम् ॥ अजाक्षीरेणसंपिष्टाचालोडययुवतीपिवेत ॥ १९ ॥ त्रिरात्रं पंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणांनसिदापयेत् ॥ २० ॥

भाषा—जिस स्त्रीके वायुपीडित फूल आवै उसके फल नहीं लगे अर्थात् गर्भ धारण नहीं करे अब उसके लक्षण कहते हैं खून बहुत सूक्ष्म रक्त कुसुंभके रंग सदृश आवे ॥ १२ ॥

कौड़ी, सफेद फूलकी विष्णुकांता ॥ २५ ॥ यह सब समान औषधी लेके गौके दूधमें घोट छानकर नासिका करके वैद्य प्यावै दाहिनीनासिका करके पीवे तो पुत्र होवे और बामीतरफकी नासिकासे पीवे तो पुत्री होय इसमें कुछ संदेह नही ॥ २६ ॥

पूर्वोक्तदोषहीनायाग्रहदोषोनसंशयः ॥ जन्मपत्रींसमालोक्यग्रहपूजांसमाचरेत् ॥ २७ ॥ व्रतंतयाप्रकर्तव्यंमध्यमस्यग्रहस्यच ॥ विकारेणयदावंध्यास्फुटंचिह्नंतदाभवेत् ॥ रोगनाशेभवेद्गर्भोनात्रकार्याविचारणा ॥२८ ॥ देवताकोपवंध्यायास्तस्याश्चिह्नंवदाम्यहम् ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यामावेशोवेदनातथा ॥ २९ ॥ गोत्रदेवींसमाराध्यदुर्गामंत्रंततोजपेत् ॥ गणनाथंसमभ्यर्च्यपुत्रंसालभतेध्रुवम् ॥ ३० ॥ कृत्याकृतंयदादोषंशरीरेवेदनाभवेत् ॥ दुर्गामंत्रंजपेन्नारीततोगर्भोभवेद्ध्रुवम् ॥ ३१ ॥ अन्यद्वंध्याष्टकंवक्ष्येसर्वतंत्रेषुगोपितम् ॥ त्रिपक्षीशुभ्रतीसञ्ज्ञात्रिमुखीव्यात्रिणीबकी ॥ ३२ ॥ कमलीव्यक्तिनीचैवतासांचिह्नंवदाम्यहम् ॥ त्रिपक्षीनामयावंध्यात्रिपक्षेपुष्पिताभवेत् ॥ ३३ ॥

भाषा—पूर्व कहे हुए दोष रक्त,वायु, पित्त, कफ,सन्निपात इन दोषोंके लक्षणों करके रहित स्त्री हो और गर्भधारण न करे उसके ग्रहदोष होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं. तब उसकी या उसके पतिकी जन्मपत्रिकादेखकर अवरोधक ग्रहका जप,पूजन,

तुभवेत्कृष्णंचात्युष्णंपिच्छिलंबहु ॥ २१ ॥ कुक्षिदेशे तथायोन्यांकट्यांशूलंचजायते॥गात्रभङ्गोभवेत्तस्या बहुनिद्राचजायते ॥ २२ ॥ गंधर्वहस्तमूलंच सह-कारंत्रिवृत्तकम् ॥ उत्पलंतगरंकुष्ठंयष्टीमधुकचंद-नम् ॥ २३ ॥ अजाक्षीरेणपिष्टंतुसप्तरात्रंततःपिबेत् ॥ रजोहात्पंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ २४ ॥ ततोयोन्यांविशुद्धायांश्वेतार्कक्षुद्रिणींतथा ॥ लक्ष्म णांवंध्यकर्कोटींश्वेतांचगिरिकर्णिकाम् ॥ २५ ॥ गवां क्षीरेणसंपिष्यनसिपानंप्रदापयेत् ॥ दक्षिणेलभतेपुत्रं वामेपुत्रींनसंशयः ॥ २६ ॥

भाषा-जिस स्त्रीके सन्निपातदोषसे दूषित ऋतु आवे उसके लक्षण कहतेहैं, वह स्त्री ऋतुमती हो जब बडा तीव्र ज्वर होय रक्त काला आवे और बहुत गर्म और चिकना आवे ॥ २१ ॥ और कूखमें योनिमें कटिमें शूल हो अर्थात् पीडाहो और हडफोड रहै नींद जादा आवे यह लक्षण त्रिदोष विकार करके ऋतु आनेमें होते हैं ॥ २२ ॥ अब उसका जतन कहते हैं, अरंडकी छाल आमकी छाल, निसोत, कमलगट्टा, तगर, कूठ, मूलहटी सफेद चंदन ॥ २३ ॥ यह सब समान औषधी लेकर, बकरीके दूधमें पीसके ७ सातदिन पीवे अथवा जिस रोज ऋतुमती हो, उस रोजसे ५ पांच रोजतक पीवे अव्वल यह मतहै जहांतक खून गिरे तहांतक पीवे ॥ २४ ॥ फिर योनि शुद्ध होनेपर, सफेद आमकी जड, छोटी लटाईकी जड, लक्ष्मणा जडी, बांझ क-

द्वेजीरकेश्वेतवचाककोंटयाश्चफलंसमम् ॥ तण्डुलो-
दकसंपिष्टंचोत्थितासूर्यसन्मुखी ॥ ३४॥ त्रिदिनंच
पिबेन्नारीदुग्धभक्तंचभोजनम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नार्याः
सत्यमेतन्नसंशयः ॥ ३५ ॥ शुभ्रतीनामयावंध्याचि-
ह्नंतस्यावदाम्यहम् ॥ गात्रसंकुचनंनित्यंदेहेचैवावि-
वर्णता ॥ ३६ ॥ गर्भस्तस्यानजायेतसज्ञावंध्याच
कथ्यते॥अप्रमाणेश्चदिवसैस्तस्याःपुष्पंप्रजायते॥३७॥

भाषा—अब त्रिपक्षीकी चिकित्सा लिखते हैं स्याहजीरा,सफे
दजीरा, खुरासानीवच, ककोड़का फल यह औषधी सर्व समान
लेके चावलोंके पानीसे पीसके प्रभात समय स्नान कर सूर्यके
सामने खडी होके दिन ३ तांई पीवे और दूध चावल भोजन
करे तो उस स्त्रीके अवश्य गर्भ रहे यह सत्य वार्ता है इसमें कुछ
सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अब शुभ्रती नामक वंध्याके
लक्षण कहते हैं,गात्र सकुचारहै और देहका रूप रंग विवर्ण हो-
जावे ॥ ३६ ॥ शुभ्रती नामक वंध्याके गर्भ स्थित नहीं हो-
वेहै इस ग्रन्थकी यह आम्नाय है और तंत्रोंमें शुभ्रती वंध्याका
इलाज लिखाहै सो यहांभी लिखते हैं नागकेशर टंक ३ हाऊबेर
टंक ३ मोरशिखा टंक ३ मिसरी टंक १८ यह औषधी पीस
कपड़छानकर पुडीटंक३तीनकी बनावे प्रातःकाल स्नानकर सूर्य
सन्मुख खड़ी होय एक वर्णी गायके दूधसे पुड़िया लेवे चावल
दूधका भोजन करे और वस्तुका त्यागकरे शुभ्रती वंध्याके संता
न हो ॥ अब सज्ञानामक वंध्याके लक्षण कहते हैं सज्ञा वं-

दान, हवन करावे तब सन्तान होवे॥ और जो मध्यम ग्रहहो उसका व्रत उस स्त्रीने करना चाहिये ॥ २७ ॥ और जिस विकार करके वंध्या होती है उस विकारके लक्षण प्रकट होते हैं फिर उस विकारकी चिकित्सा करनेसे रोग निवृत्त होनेसे गर्भस्थित होजाता है इसमें कुछ ज्यादा विचार नहीं है ॥ २८॥ और जो स्त्री देवताके कोपसे बांझ हुई हो तिसके लक्षण कहतेहैं अष्टमीमें या चतुर्दशीमें उसके शरीरमें वेदना हो या इन तिथियों में ऋतुमती हो पीडा हो ॥ २९ ॥ तो उस स्त्रीने गोत्रदेवीका आराधन करना चाहिये दुर्गापाठ करनाचाहिये औरगणेशजीका व्रत संकटाचतुर्थीका व्रतविधान करे तब वह स्त्री पुत्रको प्राप्त हो निश्चय करके इसमें सन्देह नहीं ॥ ३० ॥ और किसी स्त्रीनें स्त्रीपर कुछ करा दिया हो उसका जतन यह है ६ छः मास पर्यंत दुर्गा पाठ करावे और देवीके प्रक्षालनके जलसे माथा नाभी कुच धोवे तो दोष मिटे और गुरुदेवके शापसे संतान नहीं हो तो गुरुदेवकी पूजा भक्तिकर आशीर्वाद लेना और मनोवांछित भोजन वस्त्र दान दीजे तो सन्तान होय और जीवे इतने लक्षण उपाय आठ प्रकारकी वन्ध्याके कहे हैं ॥ ३१ ॥ अब औरभी आठ प्रकारकी वंध्या कहते हैं जो सर्व तन्त्रोंमें गुप्त हैं अब उनके नामभेद लक्षण जतन जुदे २ कहते हैं त्रिपक्षी १ शुभ्रती २ सज्ञा ३ त्रिमुखी ४ व्याघ्रिणी ५ बकी ६ कमली ७ व्यक्तिनी ८ यहआठ प्रकारकीवंध्या हैंअबइन्होंके न्यारे न्यारे लक्षण कहतेहैं जो स्त्री तीन पक्षमें ऋतुमती हो उसको त्रिपक्षी कहतेहैं ३२॥३३

होताहै ॥ ४० ॥ अब व्याघ्रिणी वंध्याके लक्षण कहते हैं जिस स्त्रीके एक संतान अवस्था चढकर हो दूसरी होवे नहीं उसको व्याघ्रिणी वंध्या कहते हैं अब उसकी चिकित्सा यहहै कि जो त्रिपक्षी वंध्याकी औषधी कही है सोई पुत्रकी देनेवाली औषधी देनी चाहिये ॥ ४१ ॥ अब बकी नाम वंध्याका लक्षण कहते हैं बकी वंध्याके सफेदखून धातु सदृश आठवें दशमें दिन गिरे उसको बकी वंध्या कहते हैं यह असाध्य होती हैं इस वंध्याकी औषधी वैद्य न करे ॥ ४२ ॥

सलिलंस्रवतेयोन्याःकमलिन्यानिरंतरम् ॥असाध्या साचविज्ञेयाऔषधंनैवकारयेत् ॥ ४३ ॥ व्यक्तिनी नामवंध्यायाःप्रमेहोभवतिस्फुटम् ॥ रक्तापामार्ग- जंबीजंशर्करामर्दकीफलम् ॥ ४४ ॥ औषधींर- त्नमालांचगोदुग्धेनप्रपेपयेत् ॥ त्रिसप्तदिवसंपीत्वा प्रमेहंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४५ ॥ कृष्णागुरुंकेसरञ्च कर्कोटींसरलांतथा ॥ द्वेजीरकेसवत्सागोक्षीरेणा- लोड्यसापिवेत् ॥ ४६ ॥ दिनत्रयंदुग्धपथ्यभो- जनंगर्भधारकम् ॥ लक्षणानिपरिज्ञायह्योषधींका- रयेत्सुधीः ॥ ४७ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रे षोडशवंध्याप्रती- कारो नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

भाषा–अब कमलिनी वंध्याके लक्षण कहते हैं कमलिनी वंध्याकी योनिसे निरंतर पानी झराकरे उस स्त्रीका वंध्यात्व

ध्याके ऋतु अप्रमाणित दिनोंमें आवे है कभी ऋतु देरमें आवे कभी ऋतु जलदी आवे उस स्त्रीको सज्ञा वन्ध्या कहतेहैं ॥ ३७ ॥

जीरेवचांसमंगांचगृह्णीयाच्छुभवासरे ॥ कर्कोटींशृंखलाकारींपिष्टातंडुलवारिणा ॥ दिनत्रयंयतानारी सूर्यस्यसम्मुखीपिवेत् ॥ ३८ सदुग्धंपष्टिकान्नंचभक्षयेद्दिनसप्तकम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नार्य्यास्त्रिमुखीनामकथ्यते ॥ ३९ ॥ तस्याश्चिह्नंप्रवक्ष्यामिमैथुनेसलिलंस्रवेत् ॥ भोजनेमैथुनेलौल्यंगर्भस्तस्यानविद्यते ॥ ४० ॥ व्याघ्रिण्याउत्तरेकालेऽपत्यमेकंप्रजायते ॥ त्रिपक्ष्युक्तंप्रदातव्यमौपधंपुत्रदायकम् ॥ ४१ ॥ वक्यसूक्ष्मस्रवतेश्वेतंदशमेऽष्टमकेदिने॥असाध्यासातुविज्ञेयाऔपधंनैवकारयेत् ॥४२॥

भाषा—अब सज्ञा वंध्याकी चिकित्सा कहते हैं स्याहजीरा, सफेदजीरा, खुरासानीवच, मँजीठ, ककोडी, हडजोडी यह दवा शुभदिन सब समानलेके चावलोंके जलमें वारीक पीस छानकर प्रातः काल स्नानकर सूर्यकेसामने खड़ीहो दिन ३ तीनतक यतनसे नारी पीवे ॥ ३८ ॥ दूध सांठी चावल दिन ७ भोजनकरे इससे सज्ञानाम वंध्याके गर्भ रहे संतान होवे अब त्रिमुखीनाम वंध्याको कहतेहैं ॥ ३९ ॥ त्रिमुखी वंध्याके लक्षण कहतेहैं मैथुन समयमें भोग करते योनिसे जल स्रवै और भोजनसे और मैथुनसे तृप्त नहो, भोजन मैथुनमें चित्त बहुत राखै; यह लक्षण त्रिमुखीवंध्याके हैं उसके गर्भ स्थित नहीं

णाथदिनत्रयम् ॥ २ ॥ सूर्यस्यसम्मुखंपीत्वाक्षीरप-ष्टिकभोजनात् ॥ गर्भोभवतिवंध्यायाध्रुवमस्मिन्नसं-शयः॥३ ॥पुष्येवाशततारायांशंखपुष्पींसमाहरेत् ॥ पिष्ट्वातद्रसमादायऋतुस्नाताचतत्पिबेत् ॥ वंध्या गर्भंदधात्याशुनात्रकार्याविचारणा ॥ ४ ॥ श्वेतकु-लित्थसंभूतंमूलंनागबलोद्भवम्॥ अपराजितामृतुस्ना-तागोदुग्धेनसमंपिबेत् ॥ दिनत्रयंतथासत्तगर्भोभव-तिनान्यथा ॥ ५ ॥ अश्वगंधाभवंमूलंगोघृतेनसम-न्वितम्॥ऋतुस्नातापिबेन्नारीत्रिदिनैर्गर्भधारकम्॥६॥

भाषा-अब पूर्वपटलमें कहीहुई जो वन्ध्याहैं उन्होंके लक्षणों-करके रहित वंध्याओंके और प्रतीकार कहतेहैं. सफेदजीरा, स्याहजीरा, खुरासानी वच,वड़की डाढ़ी,पीपलकी डाढ़ी,स्याल-के गलेका केश, ककोडीकी जड़ और फल, शतावर यह सब दवा समान लेके कूट कपडछानके ६ मासे बच्छावाली गौके दूधके साथ दिन ३ तक लेवे ॥ १ ॥ २ ॥ स्नानकर सूर्यके सन्मुख ऊभी होय पीवे और दूध चावलका भोजन करे तो वन्ध्या स्त्रीके गर्भ स्थित हो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ३॥ पुन-रुपायः । पुष्यनक्षत्रमें अथवा शतभिषानक्षत्रमें धोलफूलीको पंचांगसमेत लावे, पीसके उसका रस निकालके ऋतुमती स्त्री स्नान करके पीवे तो वह वंध्या शीघ्र गर्भको धारण करे।इस-में कुछ संदेह नहीं ॥४ ॥ पुनरुपायः १ और तंत्रको लिखतेहैं. मोरशिखाजडीको प्रथम दिन संध्याको नोत आवे. अगलेदिन

असाध्य होताहै उसकी औषधी वैद्यकरे नहीं उसके संतानहोनी असंभवहै ॥ ४३ ॥ अथ व्यक्तिनी वंध्याके लक्षण कहतेहैं । व्यक्तिनी वंध्याको प्रकटतारो प्रमेह होताहै श्वेत धातु नित्य गिरतीरहै सिद्धांत वार्ता यह है कि स्त्रियोंके प्रमेह होता नहीं है और यहां प्रमेह लिखा इसका यह तात्पर्य है सोमनामक प्रदर होजाताहै अब इसका जवन यह है कि लाल चिरचिराके बीज, मिसरी, आँवला, रतनजोत यह औषधी सर्वसमान लेके गौके दूधमें पीसके छानके दिन २१तक पीवै तो व्यक्तिनीका प्रमेह निश्चयकरके दूर होजावे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ फिर प्रमेह दूर होनेपर काला अगर, केसर, ककोड़ा, मोरशिखा, स्याहजीरा, सफेदजीरा यह सबसमान औषधी लेके बच्छावाली गौके दूधमें पीस छानकर दिन तीन ३ पीवे ॥ ४६ ॥ तीन दिन यह गर्भधारण करनेवाली औषधीका सेवन करे और दुध चावलका भोजनकरे, अवश्य गर्भ रहै,संतानहो इस बालतंत्र ग्रंथमें सोलह प्रकारकी वंध्या कही हैं तिन्होंके लक्षण देखके विचारके वैद्यवर औषधीकरें, तिससे यशको प्राप्तहो ॥ ४७ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतवालतंत्रेभाषाटीकायां प्रथमःपटलः॥१॥

पूर्वोक्तचिह्नहीनानांप्रतीकारंवदाम्यहम् ॥ द्वेजीरकेश्वेतवचावटपिप्पलवंदकौ ॥ १ ॥ शृगालकंठरोमाणिकर्कोटीफलमूलके ॥ सहस्रमूलींसवत्सागोक्षीरे-

भाषा–सफेद कटेलीकी जड़ मोरशिखाकी जड़ इन औष-धियोंका चूर्णकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री दिन ३ पीवे तो निश्चय गर्भ रहे और संतानहो ॥ ७ ॥ पुनरुपायः । बिजौराके बीजोंको गौके दूधमें पीसे. फिर दूधमें छानके दिन ३ वंध्या स्त्री पीवे. और सांठी चावलका भोजन करे गर्भ स्थितहो संतानहो॥ ॥ ८ ॥ पुनरुपायः । मेढासिंगी और दूधीकी जड़ ये औषधी कूट कपडछानकरके गौके दूधसे दिन ३ वंध्यास्त्री ऋतुमतीहो उस समय पीवे तो गर्भस्थितहो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ९ ॥ अब गर्भ धारण करनेवाली बत्तियोंको कहतेहैं. हरड़े बड़ी, बहेड़ा, आंवला, पीपल, मुनक्कादाख, लोद, पुराना गुड, इन औषधियोंको कूट कपडछान करके फिर जलमें पीसके कपडाके दवा लगाके बत्ती ३ अँगूठा समान मोटी आठ अंगुल लंबी बनाकेऋतु समयमें योनिमें रक्खे योनि शुद्ध हो कोष्ठशुद्ध हो स्त्री गर्भधारण करे संतानहो ॥१०॥ अन्यावर्तिः ॥ पीपल, देवदार, लाख, गुग्गुल इन दवाइयोंकी बत्ती करके अंगुल८की योनिमें रक्खे तो योनि शुद्ध हो, गर्भधारण करे, संतानहो ॥ ११ ॥ अन्या वर्तिः सूंठ नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी, खरैंटी, हींग, सौंफ, गूगलयह औषधि सब समान लेके बड़ी बारीक पीसके कपड़ापर लगाकरके बत्ती बनायके योनिमें रक्खे तो योनि शुद्धहो गर्भ स्थितहो ॥१२॥

गंधकंशंखचूर्णञ्चसममात्रांमनःशिलाम् ॥जलेनसह संपिष्यनिक्षिपेद्योनिमंडले ॥ १३ ॥ वेदनाशोफकं डूश्चहरत्येवनसंशयः ॥ १४ ॥ जलासिताढ्यातिव

प्रातःकाल ऐसा योगहो पुष्यनक्षत्र आदित्यवार अथवा हस्त नक्षत्र आदित्यवार ऐसे योगके दिन उपाड लावे फिर पीसकर एकवर्णी गौके दूधके साथ ऋतुस्नानकर सूर्य सन्मुख खडी होके आले केशों आलेकपडों यह औषधी लेवे दुग्ध चावलका भोजनकरे वंध्याके गर्भ रहे संतान हो। पुनरुपायः। सफेद कुलथी गंगेरणकी जडकी छाल, अपराजिताकी जड यह सब समान औषधी ऋतुस्नान करके कपिला गौके दूधके साथ पीवे दिन तीन तक तथा दिन सात तक तो वंध्या स्त्रीके गर्भरहे संतान हो ॥ ५ ॥ पुनरुपायः । असगंध नगौरी कूट कपड़छान करके गौके घीमें मिलाय ऋतुस्नानकर दिन ३ चाटे तो वंध्यास्त्रीको गर्भरहे संतान होवे ॥ ६ ॥

सुश्वेतकंटकीमूलंतन्मयूरशिखाभवम् ॥ त्र्यहंगोपयसानारीपिवेद्गर्भोभवेद्ध्रुवम्॥७॥बीजपूरस्यबीजानि गोदुग्धेनचपेपयेत् ॥ पिबेद्गर्भोभवेन्नार्यास्त्रिदिनंपष्टिकादनात् ॥ ८ ॥ मेपीदुग्धीभवंमूलंगोदुग्धेनचसंपिवेत् ॥ ऋतुत्रयेततोगर्भोभवत्येवनसंशयः ॥ ९ ॥
त्रिफलापिप्पलीद्राक्षालोध्रंजीर्णोगुडस्तथा॥
वर्तिःकृतायोनिमध्येक्षितागर्भकरीमता ॥ १० ॥
पिप्पलीदेवतादारुलाक्षागुग्गुलुनिर्मिता ॥
वर्तिकायोनिमध्येतुक्षिप्ताशोधनकारिणी ॥
शुण्ठीमुस्ताहरिद्रेद्वेवलाहिंगुमिसीपरम्॥
एपांवर्तिःकृता योनौक्षिप्ताशोधनगर्भकृत् ॥ १२ ॥

करे इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ १७ ॥ पुनरुपायः ॥ पुष्यनक्षत्रमें विधिपूर्वक लक्ष्मणा जड़ीकी जड लावे और सहदेईकी जड़ लावे फिर गौके घृतमें कन्याके पास पिसवाके गोली बांधकर गौके दूधके साथ वंध्या स्त्री पीवे तो गर्भ रहै ॥ १८ ॥

पत्रमेकं पलाशस्यगर्भिणीपयसान्वितम्॥ पीत्वापुत्रमवाप्नोतिवीर्यवंतंनसंशयः ॥ १९ ॥ कुरंटमूलं धातक्याःकुसुमानिवटांकुराः॥नीलोत्पलंपयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम् ॥ २० ॥ संयोज्यकर्पवृषभस्यमूलंतैलंप्रपीतं कुडवप्रमाणम् ॥ स्त्रियापयोभक्तभुजा दिनांतेसुतंप्रदत्तेनियतंप्रशस्तम् ॥ २१ ॥ पुत्रसंजीविकामूलंशिवलिङ्गीफलान्वितम् ॥ पुष्योद्धृतं पयोमिश्रंपीतंगर्भप्रदंध्रुवम् ॥२२॥ पुत्रसंजीविकामूलविष्णुक्रांतेशलिंगिकाः॥ पीत्वापुत्रमवाप्नोतिनकन्याजायतेस्फुटम् ॥ २३ ॥ रसःप्रपीतःसितकंटकार्य्यामूलस्यपुष्पंत्रिदिनंजलेन ॥ मयूरमूलस्यचनासिकायादत्तेसुतंदक्षिणसंपुटेन ॥ २४ ॥

भाषा—पुत्र होनेका उपाय ॥ गर्भवती स्त्री पुनर्वसु नक्षत्रके दिन संध्यासमयमें पलाश वृक्षको नोत आवे प्रभात समय सूर्योदयमें जाके पलाश वृक्षके पत्ते ३०० तीनसौ तोड़ लावे छायामें सुकाले फिर एक पत्ता रोज प्रातःकाल पीसके गौके दूधके साथ जितने संतान हो इतने पीवे तो बडा पराक्रमी पुत्रको प्राप्त हो इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ १९ ॥ गर्भरहनेका

लामधूकंवटस्यशुंगगजकेसरञ्च ॥ एतन्मधुक्षीरगतौर्निपीतंवन्ध्यापिपुत्रंनियतं प्रसूते ॥ १५ ॥ एरंडधात्रीफलमातुलुंगबीजानिमूलंसितकंटकार्याः ॥ दिनत्रयं क्षीरयुतंप्रपीतमेतत्सुखंगर्भवरंप्रधत्ते ॥ १६ ॥ अश्वगन्धाकषायेणपयःसिद्धं घृतान्वितम् ॥ प्रातः पीत्वाऋतुस्नाताधत्तेगर्भनसंशयः ॥ १७ ॥ पुष्योद्धृतंसदिधिलक्ष्मणाग्रामूलंतथान्यत्सहदेविकायाः ॥ घृतान्वितंकन्यकयाप्रपिष्टंदुग्धेनपीतंप्रकरोतिगर्भम्

भाषा—योनिलेप कहते हैं आँवलासारगंधक, शंखका चूना दोनोंके बराबर मनशिल इन तीनों दवाइयोंको जलमें पीसके योनिके बीचमें रखदे अर्थात् लेप करनेसे योनिकी पीडा मिटे सोजा दूरहो खुजली योनिकी दूरहो इसमें कुछ सन्देह नहीं॥ १३॥ ॥ १४ ॥ पुनर्वन्ध्योपायः ॥ खरैंटी, मिसरी, सहदेई, मुलैठी, बड़की डाढ़ी, नागकेशर यह औषधी सर्व समान लेके कूट कपड़ छानकर दूधमें सहद और घी मिलाके दवाखाके ऊपरसे यह दूध पीवे वंध्या स्त्री नेमकरके इस दवाको दिन सात करे तो अवश्य पुत्रको उत्पन्न करे ॥ १५ ॥ पुनरुपायः। अरंडकी गिरी,आँवला, बिजौरेके बीज, सफेद कटेलीकी जड़ यह सब दवाई कूट कपडछानकर ऋतुस्नान किये पीछे वन्ध्या स्त्री दिन ३ गौके दूधके साथ पीवे तो सुखपूर्वक गर्भको धारणकरे ॥ १६ ॥ पुनरुपायः।असगंधका कषाय करके सिद्धकिया हुआ दूधको घृत डालके ऋतुस्नाता वंध्या स्त्री प्रातःकाल पीवे तो गर्भको धारण

एतत्सर्पिर्नरः पीत्वास्त्रीषुनित्यंप्रवर्वते ॥ २८ ॥ पुत्रान्संजनयेच्छ्रेष्ठाञ्छ्रीयुक्तान्प्रियदर्शनान् ॥ वंध्या चलभतेगर्भंनात्रकार्याविचारणा ॥ २९ ॥ याचैवाऽस्थिरगर्भास्याद्यावाजनयतेमृतम् ॥ स्वल्पायुषं प्रसूतेवायाचकन्याः प्रसूयते ॥ ३० ॥ कल्याणेयोगुणः प्रोक्तोगुणः सोप्यत्रवैभवेत् ॥ हितमेतत्कुमाराणां सर्वग्रहविशोषणम् ॥ ३१ ॥ सिद्धकल्याणकंनाम घृतमेतन्महद्वरम् ॥ वीर्यमस्यशतंवारंदृष्ट्वाचकथितंमया ॥ ३२ ॥

भाषा—मजीठ, मुलहटी, कूट, हरड़, बहेडा, ऑवला, मिसरी, चव, अजमोद, हलदी, दारुहलदी, हींग, कुटकी ॥ २५ ॥ काकोली, क्षीरकाकोली, असगंध, गौरी, जीवक, ऋषभ, मेदा, महामेदा, रेणुकवीज, खडीकटेहलीकी जड, पसरकटेलीकी जड ॥ २६ ॥ कमलगट्टा, सफेदचंदनका बुरादा, मुनक्का, दाख, पदमाख, देवदार यह सब दवाई एक एक तोला लेके सेरभर घीको पकावे ॥ २७ ॥ चारसेर गौका दूध डालके दवाइयोंका कल्क करके मंद मंद अग्निसें पकावे फिर सब दूध जलजावे औषधी सिकजावे जब अग्निसे उतारले, ठंटा होनेमें घृत छानके शुद्धपात्रमें रखदे, यह घृत एकतोला रोज पुरुष पीवे तो स्त्रियोंमें नित्य प्रवर्त रहे बलहीन नहीं हो ॥ २८ ॥ इस घृतके प्रतापसे पुरुष बडे सुंदर ओर श्रेष्ठ और लक्ष्मीयुक्त पुत्रोंको उत्पन्न करे और वांझ स्त्री गर्भको धारणकरे, इसमें कुछ विचार नहीं यह

और उपायकहते हैं–कुरंडकी जड़, धायके फूल, वड़की गोभाँ, नीलोफर, यह औषध कूट कपड़छान कर गौके दूधके साथ पीवे तो निश्चय करके गर्भको पैदा करे इसमें सन्देह नहीं॥२०॥ ॥ पुनरुपायः ॥ वांसाकी जड़ एक कर्ष १६ मासे मीठा तेलमें मिलाके पीवे और संध्यासमयमें दूधभातका भोजन करे तो वंध्यास्त्री श्रेष्ठ पुत्रको पैदा करे ॥ २१॥ पुनरुपायः ॥ जीयापोताकी जड़, शिवलिङ्गीका फल, पुष्यनक्षत्रमें लावे फिर गौके दूधके साथ यह औषधी पीई हुई निश्चय करके गर्भको पैदा करती है इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ २२ ॥ जीयापोताकी जड़, विष्णुक्रांता, शिवलिंगी यह औषधी ऋतुस्नान किये पीछे गौके दूधके साथ पीवे तो गर्भधारण करे पुत्र हो कन्या नहीं उत्पन्न हो॥२३॥अन्योपायः ॥ सफेद कटेलीकी जड़का रस दाहिनी नासिका करके पीवे अथवा सफेद कटेहलीका फूल जलमें पीसकर दाहनी नासिका करके पीवे अथवा मोरशिखाकी जड़का रस दाहिनी नासिकाकरके पीवे दिन ३ तो यह औपधी पुत्रको उत्पन्न करती है इसमें सन्देह नहीं ॥ २४ ॥

मंजिष्ठामधुकंकुष्टंत्रिफलाशर्करावचा ॥ अजमोदा हरिद्रेद्वेहिंगुतिक्तकरोहिणी ॥ २५ ॥ काकोलीक्षीर काकोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ॥ जीवकर्षभकौमेदे रेणुकाबृहतीद्वयम् ॥ २६ ॥ उत्पलंचंदनंद्राक्षा पद्मकंदेवदारुच॥ एभिरक्षमितैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ २७ ॥ चतुर्गुणेनपयसायुक्तंतन्मृदुनाग्निना

रहो॥३३॥अन्योपायः॥ जो स्त्री बणीको फूलका अर्थात् बांडीका फूलकी कांसीको दिन३कांजीके पानीसे घोटके पीवे और एक मुष्टि पुराना गुडका सेवन करेतो गर्भको धारण कदाचित नहीं करे॥३४॥अब स्त्रीके ऋतु आनेका उपाय कहतेहैं माल-कांगनीके पत्ते, राई, वच, विजयसार, ठंढा, जलसे पीसके कपडासे छानके ३ दिन पीवे तो गए हुए फूल फेर आने लगें निश्चय करके इसमें संदेह नहीं ॥३५॥ पुनर्गर्भोपायःसूंठ और गुड दोनों पीसके दिन७साततक स्त्री खावे तो स्त्रीके अवश्य गर्भ रहे, कल्याणवैद्य कहता है यह वार्ता मैं सत्य कहताहूं॥ ३६॥

इतिश्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतवालतंत्रभाषाटीकायांद्वितीयःपटलः॥२॥

शुक्रहीनस्यवैपुंसःकथयाम्यौषधीमहम् ॥ माक्षिकंधातुमाक्षीकंलोहचूर्णंशिलाजतु ॥ पारदंचविडंगंचपथ्याभागसमन्वितम् ॥ १ ॥ घृतेनभावयित्वातुपात्रेकृत्वातुलोहजे ॥ विडालपदमात्रंतुभक्षयेच्चदिनेदिने ॥ २ ॥ तस्यव्याधिजरामृत्युर्संपर्णैकेननश्यति ॥ कामयेत्स्त्रीसहस्रंतुबहुशुक्रोबहुप्रजः॥३॥ कपिकच्छुभवंमूलंक्षीरपिपिष्टंपिबेन्नरः॥ अक्षयंजायतेशुक्रंकामयेत्स्त्रीसहस्रशः ॥ ४ ॥ माषोयवःश्वदंष्ट्रावावानरीशतमूलिका ॥ पयसापेपयेत्तेनपक्वयेद्घृतपूपकम्॥ ५ ॥दिनांतेभक्षयेदेकंततः

निश्चयहै ॥ २९ ॥ जो स्त्री गर्भधारण न करै अथवा जो स्त्री मरी संतानको पैदा करती हो, अथवा स्वल्प आयुवाली संतान को पैदा करतीहोअथवा जो स्त्री कन्याओंको पैदाकरनेवालीहो, उन्होंको यह घृत हितकारीहै ॥ ३० ॥ जो कल्याण घृतमें गुण कहेहैं वही गुण इसकेभी हैं और बालकोंकोभी यह हितहै, सर्व बालग्रहोंको दूर करनेवालाहै ॥ ३१ ॥ यह सिद्धकल्याण नाम करके बडा श्रेष्ठ घृतहै, सौ बार इस घृतका गुण देखकर कल्याण वैद्यने कहा है ॥ ३२ ॥ इति सिद्धकल्याणकं घृतम्॥

गुडपलावलेहंचकृत्वातंडुलवारिणा ॥ लीढ्वागर्भन धत्तेस्त्रीसुरतेकरताभवेत् ॥ ३३ ॥ आरनालपरिपे- पितंत्र्यहंवाणिपुष्पसहितं तुकामिनी ॥ सत्पुराणगुड- सुधिसेविनीगर्भमेवधत्तेकदापिन ॥३४ ॥ पीतंज्यो- तिष्मतीपत्रंराजिकोग्रासनंत्र्यहम् ॥ शीतेनपयसा पिष्टंकुसुमंजनयेद्ध्रुवम् ॥ ३५ ॥ शुंठीगुडेनसंपिष्टा भक्षयेद्दिनसप्तकम् ॥ तेनगर्भोभवेन्नार्याःसत्यंसत्यं मयोदितम् ॥ ३६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे साधारणवंध्यौप- धकथनं नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

भाषा–जो स्त्री गर्भधारण किया नहीं चाहती है उसका उपाय कहतेहैं, पुराना गुड तोले ४ चारको लेके चावलोंका पानी करके अवलेह बनावे७दिन उसको चाटे उतनाही अंदाज हररोज चाटे तो यह स्त्री गर्भधारण न करै चाहिये नित्य विषयमें रत

धातकीत्रिफलाचूर्णंरसेनेक्षुजकेनतु ॥ भावयित्वा ततःपश्चान्मधुशर्करसंयुतम् ॥ ८ ॥ जीर्णकायोपि तल्लीढ्वापिवेत्क्षीरंततोनिशि ॥ कामयेत्स्त्रीसहस्त्राणि कामाग्निस्तस्यवर्द्धते ॥ ९ ॥ कपिकच्छुकमूलानितिलाश्चैवाश्वगंधिका ॥ विदारीकंदसंचूर्णंषष्टिकातंडुलानिच॥ १०॥ एतानिपयसापिष्ट्वाघृतेनसहपाययेत् ॥ दिनेदिनेचसंभक्षेद्यदिनारीगृहेभवेत् ॥ ११ ॥ विदारी गोक्षुरंचैवपयसासहभक्षितम् ॥ जीर्णकायेप्रदातव्यं सुरताग्निप्रदीपनम् ॥ १२ ॥ माषयवोऽश्वगंधाच वानरीशतमूलिका ॥ कोकिलाक्षस्यबीजानिशाल्मलीचशतावरी ॥ सघृतंपयसापीत्वाषण्ढोपिरमयेत्स्त्रियः ॥१३ ॥ यवमाषोद्भवंचूर्णंशर्कराक्षीरमिश्रितम्॥जीर्णांतेचपिवेत्क्षीरंशुक्रवृद्धिस्ततोभवेत्॥ १४॥

भाषा—धायके फूल, हरडैबडी, बहेडा, आँवला, यह चारों दवा समान लेके ईखके रसकी भावना देवे पीछे धूपमें सुखाके बराबरकी मिसरी मिलाकर शहदमें चाटे ॥ ८ ॥ जिस पुरुषका शरीर जीर्ण भी होगयाहो, वहभी रात्रिमें इस चूर्णको सहदमें चाटकर ऊपरसे दूध पीवे तो हजारों स्त्रियोंकी इच्छा करने लगे और कामाग्नि उसके अत्यंत बढजाती है ॥ ९ ॥ कौंचवृक्षकी जड, सफेद तिल, असगंध, विदारीकंदका चूर्ण, सांठी चाँवल ॥ १० ॥ यह सब समान औषधी लेके कूट कपड़छानकरके ६ मासेकी फकी लेके ऊपर गरम दूधमें घी डालकर

क्षीरंपिवेन्नरः॥ षण्मासाभ्यंतरेचैववृद्धोपितरुणायते ॥ ६ ॥मासमेकंप्रयोगेणशुक्रवृद्धिर्भवेद्धुवम् ॥७ ॥

भाषा—अव जिस पुरुषके शरीरमें धातु न होय, उसका उपाय लिखतेहैं, शहद, सोनामक्खीकी भस्म, लोहसार,शिलाजीत, रससिंदूर, वायविडंग, वडी हरडैकी छाल, यह औषधी सर्व समानलेके गौके घीकी भावना देके लोहके वर्तनमें अर्थात् हिमामजस्तामें या खरलमें, सर्वदवाका एक जिगर करके नित्य एक कर्ष खावे ऐसा ग्रंथका लेखहै, हमारा मत यहहै शरीर बल माफिक खावे, वर्षभरके सेवन करनेसे रोग,वृद्ध अवस्था, मृत्यु, यह नष्ट होजातीहै और हजारोंस्त्रियोंके संग रमण करनेकी ताकत होजातीहै. वहुत शुक्र शरीरमें पैदा हो जाताहै और बहुतसी संतान होने लगजातीहै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ॥ पुनरुपायः ॥ कौंच वृक्षकी जड दूधमें पीसके जो पुरुष पीया करे तो उस पुरुषके शरीरमें अक्षय वीर्यको पैदा करतीहै और वह पुरुष हजारों स्त्रियोंकी इच्छा करने लगताहै ॥ ४ ॥ पुनरुपायः॥ उडद,जौ, गोखरू, कौंचके वीज,सफेद मुसली यह औषधी सर्व समान लेके कूट कपड्छान करके दूधमें बारीक पीसके उसका घेवर बनाले॥ ५ ॥फेर रात्रिको उसमेंसे तोले४ खायके ऊपरसे दूध गरम पीवे, तो ६ छह महीना सेवन करनेसे वृद्ध पुरुष जवानके माफिक हो जाताहै ॥ ६ ॥ और एक महीना खानेसे निश्चय शरीरमें वीर्यकी वृद्धि होजातीहै. इसमें संदेह नहींहै ॥ ७ ॥

सैंधवंचसमंदद्याद्विश्वभेषजमेवच ॥ २१ ॥ एषां कल्कैःपचेद्धीमाञ्छृंगवेररसेततः ॥ सिद्धंज्ञात्वासुताय्यैमर्दयच्छुभवासरे ॥ २२ ॥ कुब्जायेवामनाश्चैवपंगुपादजडाश्चये ॥ महावातेनयेभग्नाहितंतेषां विसर्पिणाम् ॥ २३ ॥ संकोचनेतुगात्राणांसन्निपाते चदारुणे ॥ ग्रंथिरोगेचहृच्छूलेहितमेतच्छिरोग्रहे ॥ २४ ॥ शमयेत्त्वक्षिशूलानिकर्णशूलान्यनेकशः ॥ रोगानन्तर्गलोत्थांश्चसर्वानेतद्व्यपोहति ॥ २५ ॥ येषांशुष्यतिवैकायोयेषांचित्तभ्रमोभवेत् ॥ क्षीणेन्द्रियाश्चयेमर्त्याजरयाजर्जरीकृताः ॥ २६ ॥ मंदमेधाविनोयेचश्रुतिर्येषांप्रणश्यति ॥ भुक्तंनजीर्यते येषामग्निर्मंदतरोभवेत् ॥ २७ ॥ याचवंध्याभवेन्नारीकाकवंध्याचयाभवेत् ॥ योनिरोगगताकाचिद्गर्भंगृह्णातियानवा ॥ २८ ॥ प्रमेहेषुचसर्वेषुव्रंडवृद्धिगदेषुच ॥ श्रमेषुपांडुरोगेषुकामलायांमदं हितम् ॥ २९ ॥ अपस्मारंगंधमालांवातशोणितमेवच ॥ पिटकाःसर्वकुष्ठांश्चदद्रुपामांविचर्चिकाम् ॥ विनिहंतिज्वरान्सर्वान्वातपित्तकफोत्थितान् ॥ ३० ॥ मासमेकंपिबेद्यस्तुयौवनस्थःपुनर्भवेत् ॥ कामाग्निजननंचैतद्बलवीर्यविवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥ नस्येपानेतथाभ्यंगेनरोनित्यंचसेवयेत् ॥ एतच्छतावरीतैलंनरनारीहितावहम्॥३२॥इति शतावरीतैलम्॥

पीवे. यह योग तब नित्य खावैं जब घरमें स्त्री होवे. नहीं तो नित्य सेवन करना नहीं चाहिये ॥ ११ ॥ विदारीकंद और गोखरू इन दोनोंका चूर्ण दूधके संग खाना चाहिये यह चूर्ण वृद्ध पुरुषकेभी कामाग्निको उत्पन्न कर सक्ताहै ॥ १२ ॥ अन्योपायः॥ उड़द, यव, असगंध, कौंचके बीज,सफेद मुसली, तालमखाना, सिंभलकी मूसली, सतावर यह औषधी सर्व समान लेके कूट कपडछान करके घृतमें भरकोके दूधके संग पीवे तो नपुंसक भी पुरुष स्त्रियोंके संग रमण करनेलगजाताहै ॥ १३ ॥ अन्योपायः यव और उडद इन दोनोंका चूर्ण मिसरीसहित दूधके साथ पीवे और यह हज्म हुये पीछे फिर दूधको पीवे तो वीर्यकी वृद्धिहो. देह पुष्टहो नामर्द मर्द होजावे ॥ १४ ॥

धात्रीफलोद्भवंचूर्णंरसेनेक्षोःसुभावितम् ॥ विबुधो बहुधापश्चात्पेपयित्वापुनःपुनः ॥ १५ ॥ मधुशर्करयायुक्तंसमभागेनकारयेत् ॥ पुरुषाणांचनारीणांभयात्कव्यंसुताप्तये ॥ १६ ॥ शतावरींतुनिष्पीड्यरसप्रस्थद्वयंहरेत् ॥ तैलंतेनपचेत्प्रस्थंक्षीरं दत्त्वाचतुर्गुणम् ॥ १७ ॥ तत्तैलंचपचेद्धीरःशनैर्मृद्वग्निनाशुभम् ॥ औषधीनांततोभागंदापयेत्कर्ष मात्रकम् ॥ १८ ॥ शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंवचा ॥ चंदनंतगरंकुष्टमेलाचांशुमतीबला ॥ ॥ १९ ॥ रास्नाचैवाश्वगंधाचविडंगंमरिचानिच ॥ पीलुपर्णीचत्वक्पत्रंतथागंधर्वहस्तिका ॥ २० ॥

जिसके विसर्परोगहो, उनोंको यह तैल बडा हितकारीहै॥ २३॥ अंगसुकचरोगमें, संनिपातमें, वायुगांठमें, हृदयशूलमें, शिरके दर्दमें और शिरके भारीपनमें यह तैल बहुत बडा हितकारीहै ॥ २४ ॥ नेत्रकी शूलको और कानकी शूलको यह बहुत जलदी घालनेसे शमन कर देताहै और गलके अन्दरके जितने रोगहैं सबको नष्ट कर देताहै ॥ २५ ॥ जिनपुरुषोंका काम सूख जाताहै अर्थात् नपुंसक होजातेहैं और जिनोंके चित्तभ्रम होताहै और जिनोंकी इन्द्रिय कमताकत होजातीहैं और जो वृद्धअवस्थासे बिलकुल कमताकत हैं, उनको यह बड़ा हितकारीहै ॥ २६ ॥ जिन पुरुषोंकी बुद्धि कमहै और जिनको सुनता नहींहै. और जिसके भोजन किया हुआ हाजमा नहीं होताहै और जिनोंका जठराग्नि मंदहै, उनोंके वास्ते यह तैल बडा हितकारी ॥ २७ ॥ जो स्त्री बांझ होतीहै और जिन स्त्रियोंके एक संतान पुत्री होके फिर नहींहो और जिन स्त्रियोंके योनिरोगहैं. अथवा जो स्त्री गर्भको नहीं ग्रहण करतीहैं उनको यह तैल बडा हितकारीहै ॥ २८ ॥ संपूर्णप्रमेहोंमें, अंडवृद्धि रोगमें, भ्रममें, पीलियामें, और कमलवायमें,यह तैल बहुत हितकारीहै ॥ २९ ॥ मृगीको, वेलको, वातरक्तको, फुनसियोंको, सर्वकुष्ठोंको, दादको, पामाको, व्योचीको और सब रकमके बुखारोंको यह तैल नष्ट कर देताहै ॥ ३० ॥जो पुरुष एक मास इसको पीवे तो वह वृद्धभीहो परंतु फिरके जवान होजावे यहतैल कामको तेज करताहै-और बलवीर्यको

भाषा—पुनरुपायः ॥ सूखे आवलोंके चूर्णमें उखके रसकी भावना देवे, पीछे छायामें सुखाके फिर भावना देवे, इसतरह वैद्य ७ भावना दे वारवार ॥ १५ ॥ पीछे समान भाग शहद मिसरी मिलाके अवलेह पकाले फिर पुरुषको या नारीको खवावै तो शरीरमें वल वढे, धातु वढे, संतानहो ॥ १६ ॥ अव शतावरी तेलको कहते हैं । हरीशतावरको लेके कूटके, रस २ सेर निकाले फिर उस रसकरके तिलोंका तेल सेर १ पचावे और उसमें ४ सेर गौका दूध गेरे ॥ १७ ॥ फिर उस तेलको वैद्य मंदाग्निसे शनैःशनैःपकावे, और इन दवाइयोंको एक एक तोला लेके कल्क वनाके उसमें पचते समय घाल दे ॥ १८ ॥ सोंफ, देवदुवार, वालछड, छालछलीरा, वच, लालचंदन, तगर, कूट, इलायची, अंशुमती, खरैंटी ॥ ॥ १९ ॥ रासना, असगंध, वायविडंग, स्याहमिरच, पीलुपर्णी, दालचीनी, पत्रज, एरंडकी जड़की छाल, ॥ २० ॥ सैंधानमक, सूंठ यह सव दवा समान एक एक तोला लेनी चाहिये ॥ २१ ॥ इन दवाइयोंका कल्क करके बुद्धिमान् वैद्य तेलको पकावै फिर अदरखका अर्क देके पकाना चाहिये जव पकजावे तव अग्निसे उतार लेवे, सुंदर पात्रमें छानके रखदेवे, अच्छा शुभ वारमे मालिश करना सुरुकरे इतनी वीमारियोंको दूर करताहै ॥ २२ ॥ जो मनुष्य कूवडे हैं और वामनेहैं और पांगलेहैं और जिनोंके पैर रहगएहों और महावात करके भग्न जो हों, अर्थात् अर्द्धांगवात जिसके हो और

घीमें उनको पकाके जो पुरुष खावे तो वह शतस्त्रियोंको सेवन करने लगजाता है ॥ ३३ ॥ अन्योपायः ॥ बकराके अण्डों करके सिद्धकिया हुआ दूधमें सिद्धकिए हुए तिलोंको जो पुरुष खावे वह शतस्त्रियोंके संग गमनकर सकता है और ऐसी ताकतसे गमन करे मानो पहिले कियाही नहीं है॥ ३४ ॥पुनरुपायः॥ विदारीकंदका चूर्ण कपडछान करके और विदारीकंदके रसकी भावना ७ देके फिर बराबरकी मिसरी मिलाके घी.में मरकोइके रखदे जिसमेंसे १ तोला शहदमें चाटे तो वह पुरुष दश स्त्रियोंके संग रमण करने लग जाता है ॥ ३५॥ पुनरुपायः॥ सूके आवलोंका चूर्ण कपडछान कर हरे आवलोंके रसकी भावना ७ देके छाया सूक करके बराबरकी मिसरी मिलावे,फिर घीमें मरकोके शहदमें तोला १ चाटे ऊपर गौका दूध गरम मीठा गेरके पीवे, तो अस्सी वर्षका वृद्ध भी जवानोंकी तरह रमण करने लगजाता है ॥ ३६ ॥ पुनरुपायः ॥ कौंचके बीज, और तालमखाना,इनदोनोंका चूर्ण कपडछानकरके बराबरकी मिसरी मिलाके तोला१ फंकी लेके ऊपरसे दूध पीवे तो उस पुरुषकी धातु क्षीण नहीं हो ॥ ३७ ॥ पुनरुपायः ॥ सफेद घुंघचीका चूर्ण कपडाछान कर दूधकी साथ पिया हुआ ताकत देनेमें बडा श्रेष्ठ है और शतावरी, सफेद घुंघची इन दोनोंका चूर्ण दूधकी साथ पिया हुवा निहायत उमदा है ॥ ३८ ॥ अन्योपायः ॥ मुलहटीका चूर्ण तोला १ घी मिलाके शहदमें चाटे और ऊपर दूध पीवे तो १०० स्त्रियोंके संग सौ वेगकरने लग जावे॥ ३९॥

चढ़ावताहै ॥ ३१ ॥ सूंघनेमें और पीनेमें और मालिश करनेमें इस तेलको नित्य वर्तना चाहिये यह जो शतावरी तैलहै सो पुरुप स्त्रीको सर्वथा हितका देनेवालाहै ॥ ३२ ॥

इति शतावरीतैलम् ।

पिंप्पलीलवणोपेतौवस्तांडौक्षीरसर्पिपा ॥ साधितौ भक्षयेद्यस्तुसगच्छेत्प्रमदाशतम् ॥ ३३ ॥ वस्तांड सिद्धेपयसिसाधितानसकृत्तिलान् ॥ यःखादेत्सपुमान्गच्छेत्स्त्रीणांशतमपूर्ववत् ॥ ३४ ॥ चूर्णविदार्य्यारचितंस्वरसेनैवभावितम् ॥ सर्पिःक्षौद्रयुतंलीढ्वा दशगच्छेन्नरोंगनाः ॥ ३५ ॥ एवमामलकीचूर्णंस्वरसेनैवभावितम् ॥ शर्करामधुसर्पिभ्यांयुक्तंलीढ्वापयः पिवेत्॥एतेनाशीतिवर्पोपियुवेव रमतेसदा ॥ ३६ ॥ स्वयंगुप्तेक्षुरकजवीजचूर्णसशर्करम् ॥ धातोस्तेननरः पीत्वापयसानक्षयंव्रजेत् ॥ ३७ ॥ उच्चटाचूर्णमप्येवंक्षीरेणोत्तममुच्यते ॥ शतावर्य्युच्चटाचूर्णपीतंक्षीरेणचोत्तमम् ॥ ३८ ॥ कर्पंमधुकचूर्णस्यघृतक्षौद्र समन्वितम् ॥ पयोनुपानंयोलिह्यान्नित्यंवेगशतोभवेत् ॥ ३९ ॥ मुसलीकंदचूर्णचगुडूचीसत्त्वसंयुतम्॥ वानरीगोक्षुराभ्यांचशाल्मलीशर्करामलैः ॥ आलोड्यघृतदुग्धाभ्यांपाययेत्कामवृद्धये ॥ ४० ॥

अत्र और नपुंसकका उपाय कहते हैं ॥

भाषा—वकराके अंडकोश लेके पीपल नमक डालके दूधऔर

घीमें जरा भूने फिर तेजपात, दालचीनी, लौंग, पीपल छोटी, केसर यह एक एक पल ग्रहणकरे, फिर सबकी बराबरकी मिसरी पल ७ लेके उसमें मिलादे फिर दूध दश गुणा पल ७० भैंसका लेके उसमें खूब पकाके खोवा बनाले और उसकी गोली बनाले तोले दो दो की फिर काम तेजकरनेके वास्ते पुरुष नित्य खावे तो इन्द्री प्रबल हो और धातुवृद्धि हो ॥ ४२ ॥ इन गोलियोंको नित्य सेवन करनेसे, वृद्ध पुरुष भी ज़वान होजाताहै और जवान पुरुष सेवन करे तो क्या कहना है ॥ ४३ ॥ पुनरुपायः ॥ छोटी सिंभलकी मुसली और सफेद मुसली इनको कूट कपडछान करके बराबर मिसरी मिलाके तोला १ की फंकी लेके ऊपरसे गरम दूधमें घी डालके पीवे तो पुरुष चिडाकी माफिक कईदफे विषय करे ॥ ४४ ॥ अन्योपायः ॥ बड़ी सिंभलकी मुसलियोंका रस तोले ४ लेकर उसमें मिसरी तोला एक डालकर दिन ७ पीनेसे वीर्यकी वृद्धि हो और कामदेवकी वृद्धिहो ॥ ४५ ॥

त्रैकक्षीरविदारिकाकुरवकश्वेताढकाद्धार्द्धकं प्रस्थं शाल्मलिमूलजातरसतोनीत्वातथाश्नौपचेत् ॥ चातुर्जातफलान्वितोमधुयुतःकार्यःपरंशुक्रलोलेह्योयंपलितांतकोवलकरःस्यातोवलीनाशकः ॥४६॥ शतावरीगोक्षुरकंचदर्भंशृंगाटकंनागवलात्मगुप्ता ॥ सितासमानंनिशिचूर्णमेपांदुग्धेनपीतंप्रकरोतिपुष्टम् ॥ ४७ ॥ विशदाफलवीजानांचूर्णंपीतंनिशामुखे ॥ पयसावर्षमात्रेणषंढत्वंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४८ ॥

अन्योपायः॥ सफेद मुसलीका चूर्ण,और उसीके समान गिलोह सत और कांचके बीज, गोखरू, सिंभलकी मुसली,मिसरी, आँवला, यह सर्व समान लेके कूट कपडछान करके घीमें मरकोइके दूधके संग पीनेसे कामवृद्धिहो इंद्री प्रबल हो धातु पुष्ट हो ॥४०॥

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूलीवानरिनागबलातिबलाच ॥
चूर्णमिदंपयसासहपेयंयस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥
॥ ४१ ॥ वाराहीकंदशृंगाटकपलयुगलंचूर्णितंकिंचिदाज्येश्रेष्ठंजातीदलत्वक्सुरकुसुमकणाकेसराणां पलंच ॥ श्वेतांसर्वंःसमानांपयसिदशगुणेसाधुपक्त्वा महिष्याःकामोद्बोधायकार्य्यास्तदनुचवटकाःकामुकैःशुक्रवृद्ध्यै ॥ ४२ ॥ एनांसदासेव्यमानोवृद्धोपितरुणायते ॥ तरुणीनांशतंयातितरुणस्यतुकाकथा ॥ ४३ ॥ लघुशाल्मलिमूलेनतालमूलींसुचूर्णिताम् ॥ सर्पिषापयसापीत्वानरश्चटकवद्भवेत्॥४४॥
वृद्धशाल्मलिमूलस्यरसंशर्करयापिवेत् ॥
एतत्प्रयोगात्सप्ताहाच्छुक्रवृद्धिःप्रजायते ॥ ४५ ॥

भाषा—गोखरू,तालमखाना, सफेद मुसली,कौंचके बीज, गंगेरणकी छाल,सहदेईकी जड इन दवाइयोंको कूट कपड़छान करके बराबरकी मिसरी मिलाके फिर यह चूर्ण दूधके संग जिसको पीना चाहिये जिसके घरमें शतस्त्री हो.आर्थात् सौ स्त्रियोंको सेवन करनेकी ताकत करता हे ॥ ४१ ॥ अन्योपायः ॥ वाराही कंद, सिंघाड़े यह दोनों पल २ ग्रहण करके कूट कपडछान करके

कूट कपड़छान करके रात्रिको ६ मासे फांकके ऊपरसे दूध पीवे एकवर्षभर सेवन करनेसे नपुंसक पुरुषका नपुंसकपना दूर हो धातु बढे इंद्री प्रवल हो ॥ ४८ ॥ अत्र बँधेजका उपाय लिखतेहैं ॥ पोस्तांके डोडे और सूंठ तोला तोला लेके सोलह गुना पानी चढाकर अष्टांश अवशेष करके मिसरी तोला १ डालके पीवे विषयकरतेसमय वीर्यपात नहीं हो इतने खटाई नहीं खावे ॥ ४९ ॥ पुनरुपायः ॥ जायफल, आककी जड, अककैरा, लौंग, सूंठ, कंकोल, केसर, पीपल, कस्तूरी, इन सबकी बराबर अफीम अफीमकी बराबर मिसरी, लेनी चाहिये॥ सबको कूट कपडछान करके शहदमें गोली बना लेनी चाहिये ॥ ५० ॥ रात्रिको २ मासे खायके ऊपर भैंसका दूध मीठा गेरके गरम पीवे तो वीर्यपात पुरुष न करे और स्त्रियोंका चित्त प्रसन्न होजावे ॥ ५१ ॥

(आर्द्रेचरटीछत्रेनव्येंकदेसुदर्शनाख्यस्य ॥ साधितमतसीतैलंविंदुजवंनाभिलेपतोधत्ते ॥ १ ॥ इति ग्रंथान्तरस्य योगः) ॥ कांचनस्यफलमूलदलानांपूगचूर्णसहितनरसेन ॥ लिंगलेपमसकृत्प्रहरार्द्धंविंदुवेगधरणायनिबद्धम् ॥ ५२ ॥ अहिफेनंदुग्धशुद्धं रक्तिकात्रितयोन्मितम् ॥ विंदुवेगंध्रुवंधत्तेसितयानिशिसेवितम् ॥ ५३ ॥ सूकरविशश्चमधुनालिंगलेपःकृतःसुरतावसरे ॥ द्रावयतिवारवनितावारंवारमनेकधानियतम् ॥ ५४ ॥ चूर्णितैर्मधुसंयुक्तैर्महारा-

खसफलशुंठीक्काथःषोडशशेषःसितायुतः पीतः ॥
कुरुतेरतौनपुंसोरेतःपतनंविनाम्लेन ॥ ४९ ॥
जातीफलार्ककरहाटलवंगशुंठीकंकोलकुङ्कुमकणा-
मृगनाभिजानि ॥ एतैःसमानमहिफेनमनेनतुल्यां
श्वेतांनिधायमधुना वटकंविदध्यात् ॥ ५० ॥
माषद्वयोन्मितमसुंनिशिभक्षयित्वामिष्टंपयस्तदनु
माहिषमाशुपीत्वा ॥ कुर्वन्तुकामुकजनानतुबिंदु-
पातंचेतांसितेनचकितानिकलावतीनाम् ॥ ५१ ॥

भाषा—अन्योपायः॥ त्रिफला,क्षीरकाकोली,विदारीकंद, कुरयक वृक्षकी छाल, और मिसरी यह सर्व औषधी आधा आधा आढ़क लेनी चाहिये और सिंभलकी मूसलियोंका रस सेर १ लेके अग्निके ऊपर शनैःशनैःपकावै फिर जरा गाढा होजावेतब उसमें तज,पतरज, इलायची, नागकेसर, इन दवाइयोंका चूर्णकरके डालि देना चाहिये फिर अवलेह पकजाने पर नीचे उतारकेहिसाब माफिक शहद उसमें मिलादेवे, यह अवलेह बहुत ज्यादा शुक्र पैदा करनेवालाहै और सफेद बालोंको स्याह करदेताहै बलकारक यह अवलेह विख्यातहै और शरीरकी गुलझटोंको दूरकरताहै ॥ ४६ ॥ पुनरुपायः ॥ शतावर, गोखरू,डाभकी जड़, सिंघाड़े, गंगेरणकी छाल, कौंचके बीज, यह दवा समान लेके कूट कपडछानकरके बराबरकी मिसरी मिलाकेतोला १ चूर्ण रातको फांकके ऊपरसे दूधपीवे तो धातुपुष्ट हो इंद्री प्रबलहो काम अधिकहो ॥ ४७ ॥ अन्योपायः ॥ शाल्मलिमिसरीको

अन्योपाय: ॥ हीराकसीस, फटकडी, माजूफल, इनको कूट कपडछान करके फिर शहदमें रगडके लिंगपै लेप करके विषय करे तो स्त्री द्रवजातीहै ॥ ५६ ॥ अबयोनिसंकोचन लिख- तेहैं ॥ मोचरस, आंवलासूतका, तज, काकमाची, इन दवाइ- योंको कूट कपड़छान कर जलमें पीसके वत्ती बनावे फिर स्त्री अपनी योनिमें रक्खे तो विषय समयमें पुरुषको बडा आनंद प्राप्त होताहै. योनि अत्यन्त संकोचको प्राप्त होजातीहै ॥५७॥ और योनिसंकोचनका नुसखा कहते हैं ॥ जो स्त्री अपनी भगको गौकी छाँछकरके या आँवलोंका काढ़ा करके नित्य धोवै तो उसकी भग निहायत तंग होजाती है और विषयमें वह स्त्री बालास्त्रीकी माफिक आनन्द देतीहै ॥ ५८ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां तृतीयः पटलः ३॥

शुद्धार्तवांदोषविमुक्तशुक्रःसुगंधलेपैःपरिलिप्तगात्रः ॥ प्रशस्तनक्षत्रदिनेप्रहृष्टांनारीमुपेयाद्दयितःसुतार्थी ॥ ॥ १ ॥ सेवेतवाजीकरणांश्चनित्यंदुग्धंपिबेच्छर्कर- याविमिश्रम्॥ दानेनमानेनचभूसुराणांमोदंविदध्या- द्विधिनोपयुक्तः ॥ २ ॥ दिनेषुयुग्मेषुपुमान्प्रदि- ष्टःप्रोक्तान्यथास्त्रीतदनल्पबुद्धिः ॥ विचार्यसर्वंसु- खितःप्रमत्तःप्रवृद्धशुक्रोदयितामुपेयात् ॥ ३ ॥ अहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिःसमन्वितौ ॥ स्त्रीपुं-

श्रीफलच्छदैः ॥ लिंगपेलेनसुरतेद्रवोभवतियोपिताम् ॥ ५५ ॥ कासीसंस्फाटिकामाजूफलंक्षौद्रेणवर्षयेत् ॥ तेनलिंगेकृताछेपाद्रतौद्रवतिचांगना ॥ ५६ ॥ मोचरसामलकीत्वक्काकमाचीभिग्नुनिशंसुभगा ॥ स्वभगेविधायवर्ति सुरते कांतसुखंकुरुते ॥ ५७ ॥ भगस्यक्षालनंकृत्वातक्रेणामलकशृतैः ॥ रतेपि कामिनीकामंबालेनकुरुतेनिशम् ॥ ५८ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे पुरुषवीर्यवृद्धिकथनं नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

भाषा–अब धातुबंधके वास्ते लेप कहते हैं, धतुरा वृक्षके फल जड़ पत्तांके रसमें सुपारीका चूर्ण खूब बारीक पीसके लिंगपर लेप करे चारघड़ी पीछे विषय करे धातुका बंधेजरहै स्त्रीका चित्त प्रसन्न हो ॥ ५२ ॥ अन्योपायः ॥ अफीमको दूधमें शोधले पीछे अफीम रत्ती ३ मिसरी तोला १ में रखके रात्रिको सेवन करके ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्यका वेग स्थिरहो अर्थात् बंधेजरहै पुरुषस्त्रीको आनंद प्राप्तहो ॥५३ ॥ अब स्त्रीको द्रवणेके लेप कहतेहैं ॥ सूकरकी विष्टाको शहदमें मिलाके विषय करती दफे लिंग पर लेप करके विषय करै तो स्त्री वारंवार द्रवे और इंद्री शिथिल न पडे ॥ ५४ ॥ और उपाय द्रावके कहतेहैं ॥ जलपीपली के फल;पत्ते लेके खूब बारीक कूट कपडछान कर, शहदमें मिलाके इंद्रियपर लेपकरके विषय करनेमे स्त्री द्रव जातीहै द्रवे पीछे बलहीन होजातीहै ॥ ५५ ॥

और जैसा आचार और जैसी, चेष्टाओंकरके युक्त स्त्री पुरुष भोग करेंगे तो उनके पुत्रभी वैसाही आहार और वैसाही आचार और वैसीही चेष्टावाला होगा ॥ ४ ॥ रजकी ज्यादती गर्भमें होनेसे लडकी होतीहै. और वीर्यकी अधिकता होनेसे लडका होताहै.और रजवीर्य दोनों समान हों तब नपुंसक अर्थात् हीजडा होताहै ॥ ५॥और रजमें वीर्य पडे या चेसमयमें पडे तो वह वीर्य निष्फल होजाताहै गर्भस्थित नहीं हो. और पुरुष धातुहीन हो या नपुंसकहो तबभी गर्भधारण नहीं करे॥६॥ बुद्धिमान ऐसे विचारकेवास्ते वाजीकरण प्रयोगोंको इस मन्त्रसे मंत्रित करके सेवन करना चाहिये ॥७ ॥मन्त्रका उद्धार करतेहैं प्रथम ओंकार उसके पीछेकामबीज क्लीं यह उसके पीछे देवकीसुत यह पद उसके पीछे गोविंद यह. पद और तिसके पीछे वासुदेव पद देना चाहिये ॥ ८ ॥ और उसके अगाडी जगत्पते यह पद उच्चारण करना चाहिये और अगाडी देहि मे तनयं यह पद और इससे अगाडी देव यह पद, इससे अगाडी त्वामहं शरणं गतः यह पद देना चाहिये. बस मंत्र होगया ॥ अब समस्तमन्त्रका स्वरूप लिखतेहैं॥"ॐ क्लीं देवकीसुत गोविंद वासुदेवजगत्पते। देहि मे तनयं देव त्वामहं शरणं गतः"यह मन्त्र है इस करके मंत्रित करदेने चाहियें ॥ ९ ॥

अष्टोत्तरशतंजप्त्वाऔषधंचप्रदापयेत् ॥ औषधीग्रहणेमन्त्राःकथ्यंतेचमयाशुभाः ॥ १० ॥ गत्वौषधीसमीपंतुमूलेकृत्वासमंत्रुचः ॥ कीलकंखादिरं

सौसमुपेयातांतयोः पुत्रोपितादृशः ॥ ४ ॥ रक्ताधिक्येभवेन्नारीशुक्राधिक्येभवेत्पुमान् ॥ रक्तशुक्रसमेनैवभवतीहनपुंसकम् ॥ ५ ॥ रक्तोशुक्रमकाले चपतितंनिष्फलंभवेत् ॥ शुक्रक्षयेनरंपंढेनारीगर्भदघातिन ॥ ६ ॥ विचार्य्यैवंसुधीःपाश्चात्प्रयोगान्कारयेत्सदा ॥ गर्भार्थंचप्रदातव्यान्मंत्रेणानेनमंत्रितान् ॥ ७ ॥ प्रणवःकामराजंचदेवकीसुतसंवदेत् ॥ गोविंदेतिपदंब्रूयाद्वासुदेवपदंततः ॥ ८ ॥ जगत्पतेसमुच्चार्य्यंदेहिमेतनयंततः ॥ ततोदेवपदं चोक्त्वामहंशरणंगतः ॥ ९ ॥

भाषा—अब संतान उत्पत्ति करनेकी रीति लिखतेहैं ॥ निर्दोष वीर्यवाला पुरुष अच्छे २ सुगंधिके अतर लेपन लगाके शास्त्रोक्त दिन देखके बडे प्यारसे, ऋतुदोष करके शुद्ध हुई स्त्रीको पुत्रकी इच्छा करताहुवा सेवन करे ॥ १ ॥ स्त्रीसेवनविधि करके युक्त हुवा पुरुष वाजीकरण योगोंको नित्य सेवन करे और मिसरी गेरके नित्य गरम दूध पीवे, और ब्राह्मणोंको दानदे. और उसका मान करे, फिर चित्तमें आनंदको धारण करना चाहिये ॥ २ ॥ जिसदिन रजस्वला स्त्रीहो उस दिन युग्मरात्रियोंमें विषय करनेसे पुत्रकी संतान होतीहै, और अयुग्म रात्रियोंमें विषय करनेसे पुत्रीकी संतान होतीहै ॥ इसी कारणसे बुद्धिमान् पुरुष सर्व वार्ताको विचारके वाजीकरण द्रव्योंसे वीर्य अधिक करके स्त्रीसे गमन करे ॥ ३ ॥ जैसा आहार

लेनी चाहिये ॥ फिर अगाडी जो मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधी खानी चाहिये ॥ १५ ॥

ॐकुमारजननीयेस्वाहामंत्रोदशाक्षरः ॥ लक्ष्मणा-संग्रहःकार्य्यःप्रवृत्तेचोत्तरायणे ॥ संपूर्णमासपक्षेतु माग्रह्णीयान्महौषधीः ॥ १६ ॥ चिह्नंतस्याः प्र-वक्ष्यामिज्ञायतेचभिषग्जनैः ॥ रक्तबिंदुयुतैः पत्रै-र्वर्तुलाकृतिभिर्युता ॥ १७ ॥ पुरुषाकारसंयुक्ता-लक्ष्मणासानिगद्यते॥ आत्मच्छायांपरित्यज्यगृह्णी-यात्पुष्यभेसुधीः ॥ १८ ॥ प्रणवोहृदयंप्रोच्यव-लवर्द्धनिचोच्चरेत् ॥ शुक्रवर्द्धनिपुत्रेतिजननीवह्नि-वल्लभा ॥ १९ ॥ विंशत्यर्णेनविधिनानिशिखानं प्रदापयेत् ॥ नाड्यांतुदक्षिणायांतुवायौवहतिदाप-येत् ॥ २० ॥ ऋतुस्नानानंतरंतुवंध्यापिपुत्रमाप्नु-यात् ॥ २१ ॥ मृतवत्सातुयानारीदुर्भगाऋतुव-र्जिता॥या सूतेकन्यकांवंध्यास्नानंतासांविधीयते२२॥

भाषा–ॐकुमारजननीये स्वाहा, यह दशाक्षर मंत्रको १०८ वार जपके औषधी खानी चाहिये ॥ अब लक्ष्मणाजडीके ग्रहण करनेकी विधि लिखतेहैं. उत्तरायण सूर्य्यप्रवृत्तहो जब लक्ष्मणा जडीको ग्रहण करना चाहिये. मासांतमें और पक्षांतमें ग्रहण करनी नही चाहिये ॥ १६ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं. वैद्यजनोंने जानना चाहिये कि, लक्ष्मणाके पत्तोंपर लालबिंदु होवैहैं और गोल पत्ते होवैहैं ॥ १७॥ और पुरुषके आकार

आह्यंमंत्रेणानेनमंत्रितम् ॥११॥ हुँनारायणायस्वाहा प्रणवादिर्नवाक्षरः ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वावक्ष्यमाणेनसंखनेत ॥ १२ ॥ प्रणवोभुवनेशानीयेनत्वांखनतेततः ॥ ब्रह्मायेनतुरुद्रोऽथकेशवश्चपदंततः ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहंखनयिष्यामिसिद्धिंदेहिमहौपधि ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणचोद्धरेदौषधींबुधः ॥ १४ ॥ सर्वार्थसाधनीस्वाहाप्रणवादिर्नवाक्षरः ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणप्राशनंकारयेत्सुधीः ॥ १५ ॥

भाषा–एकसौआठ १०८ मंत्र पढकर औषधी देना चाहिये औषधीके ग्रहण करनेमें शुभ मंत्रोंको कहतेहैं ॥ १० ॥ प्रथम औषधीके पास जाके उसकी जडके समीप चारों तरफ समान स्थल करलेना चाहिये फिर खैरवृक्षके काष्ठकी एक खूंटी बनवावे इस मन्त्रसे मंत्रित करे. और पूजन करके नालाकी डोरी बांधे ॥ ११ ॥ ॐ हुँ नारायणाय स्वाहा. इस नव ९ अक्षर मन्त्रसे खदिर कीलकको मंत्रित करके उत्तरकी तरफ मुख करके अगाडी मंत्र कहेंगे उस मंत्रसे औषधीकी जडको खोदनाचाहिये ॥ १२॥ "ॐ ह्रीं येन त्वां खनतेब्रह्मा येनरुद्रोऽथकेशवः॥तेनाहं खनयिष्यामि सिद्धिं देहि महौषधि" ॥ इस मंत्रसे उस औषधीकी जमीन खोदना चाहिये और अगाड़ी मन्त्र कहेंगे उस मन्त्रसे औषधी पाड़नी चाहिये ॥ १३ ॥ १४ ॥ "ॐ सर्वार्थसाधनी स्वाहा"इस नवाक्षर मंत्रको १०८ वार जपके औषधी पाड-

परि ॥ २७ ॥ लिखेद्दलेपुनंबाद्यांश्चतुर्षुविधिपूर्वकम् ॥ देवींविनायकंचैवकार्तवीर्यंमहाबलम् ॥२८॥ इंद्रादिलोकपालांश्चदलाष्टसुततोलिखेत् ॥ ततः शेषदलेष्वेवस्थापयेत्तत्रपार्थिवान् ॥ २९ ॥ दधिदुग्धंघृतंपुष्पंधूपंदीपंयुगानिच ॥ कन्नानांविधिना दद्यात्पुष्पाणिविविधानिच ॥ ३० ॥

भाषा—अब रुद्रस्नानकी विधि लिखतेहैं, अष्टमीको या चतुर्दशीको या रजस्वलाका रज शुद्ध होनेसे चौथे दिन,अथवा रविवारको वह स्त्री व्रत धारणकरे यह कर्म रजसे शुद्ध होके करे यह समझ लेना ॥२३॥ यह कर्म किस जगे करना चाहिये सो कहतेहैं नदियोंका संगम जहां हो वहां करना चाहिये,अथवा गंगाके तटपर या शिवालयमें या गोशालामें या गृहके आंगणमें परंतु अलेधा हो रास्तामें नहीं हो इतनी जगह यह कर्म करना उचितहै ॥ २४ ॥ स्नानकरानेके वास्ते प्रथम ऐसे ब्राह्मणको बुलावे किजो शांत हो धर्मका जाननेवालाहो,सत्य बोलनेवालाहो और शास्त्रमें वेदमें निपुण हो और शिवके पुजनादिक कर्मोंमें निपुणहो ऐसे ब्राह्मणको स्नान करानेके वास्ते योजनाकरे ॥२५॥ फिर उस जगहमें चकोरमंडप कराना चाहिये उत्तराभिमुख मंडपका होना चाहियेफिर गोबरसे लिपाके चंदनसे पुष्पोंसे सुगंधित करना चाहिये ॥ २६॥ फिर उस मंडपके मध्यमें वालूकी वेदी बनावे वेदीपर गोधूमके चूर्णमें सहस्रदलका कमल लिखना चाहिये । उस कमलके

पत्तोंपर हों, उसको लक्ष्मणाजडी कहतेहैं, बुद्धिमान् पुरुष अपनी छायाको बचाके पुष्यनक्षत्रमें जडीको ग्रहण करना चाहिये ॥ १८ ॥ "ॐ नमो बलवर्द्धनी शुक्रवर्द्धनी पुत्रजननी स्वाहा" ॥ १९ ॥ इस वीस अक्षरके मंत्रसे मंत्रितकरके लक्ष्मणाजडीको खूब बारीक पीसके फंकीलेके दूध गौका ऊपरसे पीवे, या दूधमें पीसके छानके पीवे,रात्रिको दहना स्वर चलता हो उस वेलामें पीना चाहिये किसी पुस्तकमें "नसिपानं प्रदापयेत्" ऐसा पाठहै, वहां पर ऐसा अर्थ करना—नासिकासे पीनी चाहिये ॥ २० ॥ ऋतुस्नान किये पीछे स्त्री विधिपूर्वक लक्ष्मणाजडीको सेवनकरे तो वंध्याकेभी पुत्र उत्पन्न हो ॥ २१ ॥ जो स्त्री मृतवत्साहै अर्थात् जिसके बच्चे मरजाते हों और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो, और जिसके कन्या होतीहों अथवा वंध्या हो उन स्त्रियोंको स्नान कराना चाहिये ॥२२॥

अष्टम्यांवाचतुर्दश्यामुपवासपरायणा ॥ ऋतौशुद्धा चतुर्थेह्निप्राप्तेसूर्यदिनेऽथवा ॥ २३ ॥ नद्यास्तुसंगमेकुर्य्यान्महानद्यांविशेषतः ॥ शिवालयेऽथवागोष्ठेविविक्तेवागृहांगणे ॥ २४ ॥ आहूयादौद्विजंशांतंधर्मज्ञंसत्यशीलिनम् ॥ स्नानार्थंशास्त्रवेदेचनिपुणंरौद्रकर्म्मणि ॥ २५ ॥ ततस्तुमंडपंकुर्य्याच्चतुरस्रमुदङ्मुखम् ॥ तच्चचंदनमाल्येनगोमयेनानुलेपितम् ॥ २६ ॥ तन्मध्येश्वेतरजसासंपूर्णपद्ममालिखेत् ॥ मध्येऽजस्यमहादेवंस्थापयेत्कर्णिको-

पारि ॥ २७ ॥ लिखेद्दलेषुनंद्यादींश्चतुर्षुविधिपूर्वकम् ॥ देवींविनायकंचैवकार्तवीर्यंमहाबलम् ॥२८॥ इंद्रादिलोकपालांश्चदलाष्टसुततोलिखेत् ॥ ततः शेषदलेष्वेवस्थापयेत्तत्रपार्थिवान् ॥ २९ ॥ दधिदुग्धंघृतंपुष्पंधूपंदीपंयुगानिच ॥ कञ्जानांविधिना दद्यात्पुष्पाणिविविधानिच ॥ ३० ॥

भाषा—अब रुद्रस्नानकी विधि लिखतेहैं, अष्टमीको या चतुर्दशीको या रजस्वलाका रज शुद्ध होनेसे चौथे दिन,अथवा रविवारको वह स्त्री व्रत धारणकरै यह कर्म रजसे शुद्ध होके करे यह समझ लेना ॥२३॥ यह कर्म किस जगे करना चाहिये सो कहतेहैं नदियोंका संगम जहां हो वहां करना चाहिये,अथवा गंगाके तटपर या शिवालयमें या गोशालामें या गृहके आंगणमें परंतु अलैधा हो रास्तामें नहीं हो इतनी जगह यह कर्म करना उचितहै ॥ २४ ॥ स्नानकरानेके वास्ते प्रथम ऐसे ब्राह्मणको बुलावे कि जो शांत हो धर्मका जाननेवालाहो, सत्य बोलनेवालाहो और शास्त्रमें वेदमें निपुण हो और शिवके पुजनादिक कर्मोंमें निपुणहो ऐसे ब्राह्मणको स्नान करानेके वास्ते योजनाकरे ॥२५॥ फिर उस जगहमें चकोरमंडप कराना चाहिये उत्तराभिमुख मंडपका होना चाहियेफिर गोबरसे लिपाके चंदनसे पुष्पोंसे सुगंधित करना चाहिये ॥ २६॥ फिर उस मंडपके मध्यमें वालूकी वेदी बनावे वेदीपर गोधूमके चूर्णमें सहस्रदलका कमल लिखना चाहिये । उस कमलके प-

पत्तोंपर हों, उसको लक्ष्मणाजडी कहतेहैं, बुद्धिमान् पुरुष अपनी छायाको बचाके पुष्यनक्षत्रमें जडीको ग्रहण करना चाहिये ॥ १८ ॥ "ॐ नमो बलवर्द्धनी शुक्रवर्द्धनी पुत्रजननी स्वाहा" ॥ १९ ॥ इस वीस अक्षरके मंत्रसे मंत्रितकरके लक्ष्मणाजडीको खूब बारीक पीसके फंकीलेके दूध गौका ऊपरसे पीवे, या दूधमें पीसके छानके पीवे, रात्रिको दहना स्वर चलता हो उस वेलामें पीना चाहिये किसी पुस्तकमें "नसिपानं प्रदापयेत्" ऐसा पाठहै, वहां पर ऐसा अर्थ करना—नासिकासे पीनी चाहिये ॥ २० ॥ ऋतुस्नान किये पीछे स्त्री विधिपूर्वक लक्ष्मणाजडीको सेवन करे तो वंध्याकेभी पुत्र उत्पन्न हो ॥ २१ ॥ जो स्त्री मृतवत्साहै अर्थात् जिसके बच्चे मरजाते हों और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो, और जिसके कन्या होतीहों अथवा वंध्या हो उन स्त्रियोंको स्नान कराना चाहिये ॥ २२ ॥

अष्टम्यांवाचतुर्दश्यामुपवासपरायणा ॥ ऋतौशुद्धा चतुर्थेह्निप्रतेसूर्यदिनेऽथवा ॥ २३ ॥ नद्यास्तुसंगमेकुर्य्यान्महानद्यांविशेषतः ॥ शिवालयेऽथवागोष्ठेविविक्तेवागृहांगणे ॥ २४ ॥ आहूयादौद्विजंशांतंधर्मज्ञंसत्यशीलिनम् ॥ स्नानार्थंशास्त्रवेदेचनिपुणंरौद्रकर्म्मणि ॥ २५ ॥ ततस्तुमंडपंकुर्य्याच्चतुरस्रमुदङ्मुखम् ॥ तच्चचंदनमाल्येनगोमयेनानुलेपितम् ॥ २६ ॥ तन्मध्येश्वेतरजसासंपूर्णंपद्ममालिखेत् ॥ मध्येऽजस्यमहादेवंस्थापयेत्कर्णिको-

परि ॥ २७ ॥ लिखेद्दलेषु नंद्यादींश्चतुर्षु विधिपूर्वकम् ॥ देवींविनायकंचैवकार्तवीर्यंमहाबलम् ॥२८॥ इंद्रादिलोकपालांश्चदलाष्टसुततोलिखेत् ॥ ततः शेषदलेष्वेवस्थापयेत्तत्रपार्थिवान् ॥ २९ ॥ दधिदुग्धंघृतंपुष्पंधूपंदीपंयुगानिच ॥ कन्यानांविधिना दद्यात्पुष्पाणिविविधानि च ॥ ३० ॥

भाषा—अब रुद्रस्नानकी विधि लिखतेहैं, अष्टमीको या चतुर्दशीको या रजस्वलाका रज शुद्ध होनेसे चौथे दिन, अथवा रविवारको वह स्त्री व्रत धारणकरै यह कर्म रजसे शुद्ध होके करै यह समझ लेना ॥२३॥ यह कर्म किस जगे करना चाहिये सो कहतेहैं नदियोंका संगम जहां हो वहां करना चाहिये, अथवा गंगाके तटपर या शिवालयमें या गोशालामें या गृहके आंगणमें परंतु अलैधा हो रास्तामें नहीं हो इतनी जगह यह कर्म करना उचितहै ॥ २४ ॥ स्नानकरानेके वास्ते प्रथम ऐसे ब्राह्मणको बुलावे कि जो शांत हो धर्मका जाननेवालाहो, सत्य बोलनेवालाहो और शास्त्रमें वेदमें निपुण हो और शिवके पूजनादिक कर्मोंमें निपुणहो ऐसे ब्राह्मणको स्नान करानेके वास्ते योजनाकरे ॥२५॥ फिर उस जगहमें चकोरमंडप कराना चाहिये उत्तराभिमुख मंडपका होना चाहियेफिर गोबरसे लिपाके चंदनसे पुष्पोंसे सुगंधित करना चाहिये ॥ २६ ॥ फिर उस मंडपके मध्यमें वालूकी वेदी बनावे वेदीपर गोधूमके चूर्णमें अष्टदलका कमल लिखना चाहिये । उस कमलके बीचसे

पत्तोंपर हों, उसको लक्ष्मणाजडी कहतेहैं, बुद्धिमान् पुरुष अपनी छायाको बचाके पुष्यनक्षत्रमें जडीको ग्रहण करना चाहिये ॥ १८ ॥ "ॐ नमो वलवर्द्धनी शुक्रवर्द्धनी पुत्रजननी स्वाहा" ॥ १९ ॥ इस वीस अक्षरके मंत्रसे मंत्रितकरके लक्ष्मणाजडीको खूब बारीक पीसके फंकीलेके दूध गौका ऊपरसे पीवे, या दूधमें पीसके छानके पीवे, रात्रिको दहना स्वर चलता हो उस वेलामें पीना चाहिये किसी पुस्तकमें "नसिपानं प्रदापयेत्" ऐसा पाठहै, वहां पर ऐसा अर्थ करना—नासिकासे पीनी चाहिये ॥ २० ॥ ऋतुस्नान किये पीछे स्त्री विधिपूर्वक लक्ष्मणाजडीको सेवनकरे तो वंध्याकेभी पुत्र उत्पन्न हो ॥ २१ ॥ जो स्त्री मृतवत्साहै अर्थात् जिसके बच्चे मरजाते हों और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो, और जिसके कन्या होतीहों अथवा वंध्या हो उन स्त्रियोंको स्नान कराना चाहिये ॥ २२ ॥

अष्टम्यांवाचतुर्दश्यामुपवासपरायणा ॥ ऋतौशुद्धा चतुर्थेह्निमःतेसूर्यदिनेऽथवा ॥ २३ ॥ नद्यास्तुसंगमेकुर्य्यान्महानद्यांविशेषतः ॥ शिवालयेऽथवागोष्ठेविविक्तेवागृहांगणे ॥ २४ ॥ आहूयादौद्विजंशांतंधर्मज्ञंसत्यशीलिनम् ॥ स्नानार्थंशास्त्रवेदेचनिपुणंरौद्रकर्मणि ॥ २५ ॥ ततस्तुमंडपंकुर्य्याच्चतुरस्रमुदङ्मुखम् ॥ तच्चचंदनमाल्येनगोमयेनानुलेपितम् ॥ २६ ॥ तन्मध्येश्वेतरजसासंपूर्णंपद्ममालिखेत् ॥ मध्येऽजस्यमहादेवंस्थापयेत्कर्णिको-

तामर्कपत्रपुटाम्बुना ॥ चतुःषष्टिऋचाचैवरुद्रेणैका-
दशेनतु ॥३८॥ वर्णानामितिऋचांतासांचतुष्पष्टि-
संख्यानामेकादशत्वंपतितानामियंसंख्या ॥

भाषा—चारों कोनोंमें, यज्ञस्तंभ बहुत सुंदर करने चाहिये और बहुत सुन्दर अग्निकुंड करना चाहिये उसमें कांसी फलके वर्तनसे अग्नि लाके स्थापनकरना चाहिये ॥ ३१ ॥ नमक घृतकी या घृत सहतकी आहुती देनी चाहिये और प्रथम ग्रहोंकी आहुति देके पीछे हवन करना चाहिये ॥ ३२ ॥ और दूसरा अपना कार्यका करनेवाला ब्राह्मण होना चाहिये वह ब्राह्मण मृत्तिकाका रुद्र बनाके सपेद चन्दनसे पूजन करे ॥ ३३ ॥ सफेद वस्त्र शिवपर चढावे और सपेद फूलोंकी माला चढावे. और रुद्र को सोनाके कंकणोंसे कर्णभूषणोंसे अँगूठीसे शोभित करे ॥ ॥ ३४ ॥ मंडपके समीप बैठके मत्सरता, क्रोध, लोभ, काम, मोह सबको दूर करके मन स्थिर कर रुद्रमंत्रका जपकरे उस ब्राह्मणने ११ रुद्री करना चाहिये ११ रुद्री करके फिर रुद्रका जप करना चाहिये ॥३५॥ ऐसे मांगलिक कर्म करके दूसरा मंडप बडा सुंदर करना चाहिये । उसमंडपके बीचमें उस स्त्रीको सपेद फूलोंकी मालापहनाकेऔर सपेद वस्त्रको पहनाके सपेद चंदनको लगाके सुखपूर्वक आसनके ऊपर बैठाना चाहिये और आचार्यको ऊंचा आसनके ऊपर बैठाना चाहिये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ फिर आचार्य ब्राह्मण आकके पत्ताका दोना करके उसमें

शोंके जलसे उस स्त्रीको स्नान करावे॥४२॥ जलसे परिपूरित हुए आठ ८ कलश पीपल वृक्षके पत्तोंसे आच्छादित हुये अष्ट दिशाओंमें स्थित हुये ऐसे जो अक्षत कलसे हैं उनसे स्त्रीको स्नान करना चाहिये ॥ ४३ ॥

स्नात्वैवंस्नापकायैवदद्याद्गांकांचनंतथा ॥ हेतुरेवात्र निर्दिष्टोदक्षिणागौःपयस्विनी ४४॥ब्राह्मणानप्यथान्यांश्वस्वशक्त्यासाधुपूजयेत् ॥ गोवस्त्रकांचनादीनिदत्त्वासर्वान्क्षमापयेत् ॥ ४५ ॥ कृतेनानेनस्नानेननरोवानायिकापिवा ॥ सुभगाकांतिसंयुक्ता बहुपुत्राचजायते ॥ ४६ ॥ सर्वेष्वपिहिमासेपुब्राह्मणानुमतेशुभम् ॥ तस्मादवश्यंकर्तव्यंपुत्रंस्त्रीसुखमृच्छति ॥ ४७॥ यास्नानमाचरतिरुद्रमिति प्रसिद्धंश्रद्धान्विताद्विजवरानुमतेनतांगी ॥ दोषान्निहत्यसकलान्स्वशरीरभाजान्भर्तुःप्रिया भवतिपुत्रजनिश्वसास्त्री ४८

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भाधानकाले रुद्रस्नानकथनं नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

भाषा–ऐसे विधिपूर्वक स्नानकरके वह स्त्री स्नान जाले ब्राह्मणको गौका दान देवे और सुवर्णका दान दे इसमें यह हेतुहै,दक्षिणा और दूधवाली ब्राह्मणोंको साधुवोंको अभ्यागतोंको पूजन करना चाहिये और अपनी सुवर्ण, उनके देके प्रसन्न करै और

भरके ६४ ऋचाका पाठ करके रुद्री महिमन् षडंगका पाठ ११ वार पठन करके उस स्त्रीको अभिषेक करे ॥ ३८ ॥

शतानिसतपर्णानांचतुर्भिरधिकानिच॥अच्छिद्राणि चमंत्रेणस्नानार्थेविनिवेशयेत् ॥ ३९॥ अश्वस्थाना-द्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ वेश्यांगणाच्चतुष्पथाद्गोष्ठादानीयवैमृदम् ॥ सर्वौषधीत्रोचनाश्च नदीतीर्थोदकानिच ॥ ४० ॥ एतत्संक्षिप्यकलशे शिवसंज्ञेसुपूजिते ॥ आपादतलकेशांतंकुक्षिदेशेविशेषतः॥४१॥ सर्वांगंलेपयेद्भक्त्यासुशीलाकाचिदंगना रुद्रमंत्रंजपन्विप्रःस्नापयेत्कलशेश्वताम् ॥ ४२ ॥ तोयपूर्णाष्टकलशैरश्वत्थदलपूरितैः॥ सर्वतोदिक्स्थितैःपश्चात्स्नापयेत्कलशाक्षतैः ॥ ४३ ॥

भाषा–शतनके पत्र १०४ बिगर छिद्रके लेके रुद्रमंत्र पढके स्नान करानेके कलशमें घालदेने चाहिये ॥ ३९ ॥ अश्वशालासे, हाथी खानासे, सर्पकी वॅबईसे, नदियोंके संगमसे, सरोवरसे वेश्याके आंगनसे, चौराहासे, गोशालासे, मृत्तिका ग्रहण करे, और सर्वौषधी गोरोचन, और नदीका या तीर्थका जल यह सब द्रव्य पुजन किया हुआ शिवसंज्ञक कलशमें घालदे, फिर वह स्त्री चरणसे केशोंतक उस जल मृत्तिका औषधियोंसे सम्पूर्ण अंगको लेपन करे. और कुक्षिदेशको विशेषताकरके लेपन करे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुशीलको धारण करके भक्तिसहित अंगको लेपन करे पीछे ब्राह्मण रुद्रका मंत्र जपता हुआ कल-

णालोड्यततिपबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविन-श्यति ॥ ७ ॥ मंजिष्ठंचंदनंकुष्ठंतगरंसमभागिकम् ॥ पिष्ट्वाक्षीरेणसंपेयमौषधंसमुदाहृतम् ॥ ८ ॥

इति प्रथममासे गर्भिणीगर्भरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा—अब गर्भमें स्थित हुए बालककी रक्षाके वास्ते बलि कहतेहैं और अनेक रकमकी औषधी मन्त्र जाप भी कहतेहैं ॥ १ ॥ गर्भिणी स्त्रीकी गर्भकी रक्षाके वास्ते पहिले मासमें प्रजापतिको लक्ष्य करके अर्थात् ब्रह्माकी मूर्ति मृत्तिकाकीबनाके मृत्तिकाके पात्रमें स्थितकरके उसके अगाड़ी सर्वद्रव्यधरके मंत्रका जाननेवाला पुरुष २१ वार मंत्र पढ़के बलि देवे ॥ २ ॥ सपेद वस्त्र,खीर,गौका दूध, घृत, सपेद छत्र,सपेद चंदन, रत्नकी जडी अँगूठी ॥ ३ ॥ जलका कलश उसमें सोना डालदेना यत्किंचित् धूप, दीपक यह सर्ववस्तु एक पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके जहां गौ दोहीजातीहै उस स्थानमें रख आवे ॥ ४ ॥ यह पांचवाँ श्लोकहै यह सर्व मंत्रहै इसीको २१ वार जापना चाहिये ॥ ५॥ और जो पहिले महीनामें गर्भमें कुछ वेदना हो तब नीलोफर, कँवल, ककडी सिंघाडा, कसेरू ॥ ६॥ इनको ठंडे जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे ऐसे करनेसे गर्भ गिरे नहीं और शूल जाती रहे ॥ ७ ॥ अन्य औषधी लिखतेहैं, मँजीठ, लालचन्दन,कूट,तगर;यह सब समानलेके दूधमें पीसके दूधहीमें छानके पीवे यह औषधी भी गर्भकी वेदनाको दूरकरतीहै॥८॥

यह पहलेमासका बलिविधानहै ॥ १ ॥

इस स्नानके करनेसे पुरुष या स्त्री अच्छी ऐश्वर्यवाली कांति-वाली बहुपुत्रवाली होजातीहै ॥ ४६ ॥ तब महीनोंमें ब्राह्म-णके अनुमत होके यह स्नान कर्म्म शुभकारीहै इसवास्ते अव-श्य करना चाहिये इससे स्त्री पुत्रको सुख प्राप्त होजाताहै ॥ ॥ ४७ ॥ जो स्त्री इस प्रसिद्ध रुद्रस्नानको श्रद्धा करके ब्राह्मण के अनुमत होके करतीहै वह स्त्री शरीरके संपूर्ण दोषोंको नष्ट करके पुत्रकी उत्पत्ति करतीहै जिससे भर्ताकी बडी प्यारी होजातीहै ॥ ४८ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

गर्भस्थितस्यबालस्यरक्षार्थंकथ्यतेबलिः ॥ औष-धानिविचित्राणिकथ्यंतेमंत्रजापकम् ॥ १ ॥ गर्भि-णीगर्भरक्षार्थंमासेतुप्रथमेबलिः ॥प्रजापतिंसमुद्दिश्य देयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ २ ॥ श्वेतवस्त्रंपायसंचगव्यंक्षीरं तथाघृतम् ॥ श्वेतच्छत्रंचंदनंचसरलंचांगुलीयकम् ॥ ३ ॥ पूर्णकुंभोहेमयुक्तोधूपदीपावयंत्रलिः ॥ स्थानेगवांदोहनस्यनिःक्षेप्तव्यःप्रशांतये ॥ ४ ॥ तत्रमंत्रः ॥ एह्येहिभगवन्ब्रह्मन्प्रजाकर्तःप्रजापते ॥ बालायागर्भरक्षार्थंरक्षरक्षकुमारकम् ॥ ५ ॥ यदि च प्रथमेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ नीलोत्पलंसनालंच शृंगारंकंकसेरुकम् ॥ ६ ॥ शीतेनोयेनसंपिष्टाक्षीरे-

अश्वशालामें या गोशालामें रस आवे और उस जगेभी मन्त्र पढना चाहिये॥ १०॥ ११॥यह बारहवाँ श्लोकहै.यह सर्व मंत्रहै. इसीको२१वार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर वारके बलि देना चाहिये ॥ १२॥ और जो दूसरे महीनेमें गर्भमें कुछ वेदना हो तब तगर, केसर, बेलगीरी, कपूर ॥ १३॥ यह सर्व समान लेके बकरीके दूधमें पीसे और बकरीके दूधमें छानके पीवे. ऐसा करनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल जाता रहै ॥ ॥ १४ ॥ अन्योपायः ॥ सालममिसरी, नीलोफर, कसेरु, अदरख, यह सब समानलेके जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे ॥ १५ ॥ अन्योपायः ॥ सिंघाडा, कशेरू, जीरा सफेद, बेलपत्र, छुहारा यह सर्व समान लेके ठंडेपानीमें पीसके दूधमें छानके पीवे ॥ १६ ॥

यह दूसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ २ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिमांसेतृतीयके ॥ रुद्रानेकादशोद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ १७ ॥ घृतमन्नंच लाजाश्चध्वजः श्वेतोथचंदनम् ॥ श्वेतपुष्पाणिवस्त्रं चश्वेतंधूपंप्रदापयेत् ॥ १८ ॥ श्वेतपंकजयुक्तश्च पूर्णकुंभःसकांचनः ॥ इत्येवंप्रथमस्थानेईशान्यां दिशिनिक्षिपेत् ॥ १९ ॥ अयंमंत्रः ॥ महादेवः शिवोरुद्रःशंकरोनीललोहितः ॥ ईशानोविजयोभीमोदेवदेवोजयोद्भवः ॥ २० ॥ कपालीशश्चकथ्यंते तथैकादशमूर्त्तयः ॥ रुद्राएकादशप्रोक्ताःप्रगृह्णीत

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंद्वितीयेमासिवैबलिः ॥ समुद्दिश्याऽश्विनौवैद्योदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ९ ॥ दध्यन्नंपायसंलाजापिण्याककुसुमानिच ॥ गंधश्चधूपदीपौच वस्त्रंपूर्णवटस्तथा ॥ १० ॥ हेम्नायुतोऽश्वशालायाः समीपेनिःक्षिपेद्बलिम् ॥ गोदोहस्थानकेन्यस्यमंत्रमेतंपठेत्सुधीः ॥ ११ ॥ मंत्रः ॥ भगवंतौप्रभावंतौप्रगृह्णीतंबलिंत्विमम् ॥ सुरूपौदेवभिषजौरक्षतंगर्भिणींयुवाम् ॥ १२ ॥ यदिचद्वितीयेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ तगरंकुंकुमंबिल्वंकर्पूरेणसमन्वितम् ॥ ॥ १३ ॥ अजाक्षीरेणसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥ १४ ॥ शालूकमुत्पलंनीलंकशेरुशृंगबेरकम् ॥ समंपिष्ट्वोदकेनैवक्षीरेणसहसंपिबेत् ॥ १५ ॥ शृंगाटकंकशेरुंचजीरकंबिल्वपत्रकम् ॥ खर्जूरंशीततोयेन पिष्ट्वाक्षीरेणसंपिबेत् ॥ १६ ॥

इति द्वितीयमासे गर्भरक्षा ॥ २ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते दूसरे मास अश्विनीकुमार देवताके वैद्योंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरु मंत्रके बलि दे ॥ ९ ॥ दही, भात, खीर, धानकी खील, तिल खली, फूल, इतरका फोया, धूप, दीपक, वस्त्र,जलका भरा घ उसमें यत्किंचित् सोना डाल देना चाहिये ॥ यह स वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें एक जगे रखके मंत्र २१ वार पढ

और खस, सफेदचंदन, नागरमोथा, पद्माख, कँवलककड़ी, शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपात नहीहो ॥ ॥ २५ ॥ यह तीसरे महीनेकी गर्भरक्षाविधिहे ॥ ३ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेचतुर्थके ॥ उद्दिश्य द्वादशादित्यानेशान्यांदिशियत्नतः ॥ २६ ॥ आरक्तान्नंगुडान्नंचरक्तगंधध्वजेतथा ॥ रक्तपुष्पं धूपदीपौरक्तवस्त्रंचकांचनम ॥ २७ ॥ कलशः सलिलापूर्णःक्षिपेच्चैवजलाशये ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेण मंत्रिणेतिसमन्वितः ॥ २८ ॥ मंत्रः ॥ यमोवैवस्वत-स्त्वष्टावसुश्चसवितामृगः ॥ विष्णुस्तथामधुर्मित्रः खगःसूर्योथतापनः ॥ २९ ॥ आदित्याद्वादशप्रोक्ताः प्रगृह्णीतबलिंत्विमम् ॥ यूयंवैतेजसांवृद्ध्यानित्यंरक्षत गर्भिणीम् ॥ ३० ॥ शृंगाटकदलीपत्रंद्राक्षंचदाडिमो-द्भवम् ॥ बीजंतुकदलीकंदंशीततोयेनपेपयेत् ॥ ३१ ॥ अजाक्षीरेणसंलोड्यपिबेन्नारीसुखाप्तये ॥ उशीरंकद-लीमूलंतथावैपद्मनालकम् ॥ ३२ ॥ शीततोयेनसं-पिष्यछागीक्षीरेणसंपिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःशूलं चैवविनश्यति ॥ ३३ ॥

इति चतुर्थे मासि गर्भरक्षा ॥ ४ ॥

भाषा–गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते चौथे महीनेमें द्वादश आदित्योंके प्रति ऐशानी दिशामें जतनसे बलिदान देवे ॥ २६ ॥ मसूरकी दाल, गुड़, चावल, लालचंदन, लालध्वजा

वलिंत्विमम् ॥ २१ ॥ युष्माकंतेजसांवृद्धचागर्भ-रक्षतुगर्भिणीम् ॥ यूयंमंत्रावबोवाहिनित्यंरक्षतगर्भि-णीम्॥ २२॥ अथचेत्त्रितयेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥ पद्मकंचंदनोशीरंतगरंसमभागिकम् ॥ २३ ॥ शीततोयेनसंपिष्ट्वाअजाक्षीरेणपाययेत् ॥ एवंनपतते गर्भः शूलंचैवविनश्यति ॥ २४ ॥ उशीरंचंदनंमु-स्तापद्मकंपद्मनालकम् ॥ शीततोयेनसंपिष्यक्षी-रेणालोडचतत्पिवेत् ॥ २५ ॥

इति तृतीये मासि गर्भरक्षा ॥ ३ ॥

भाषा—गर्भवती स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते तीसरे मही-नेके विषय एकादश रुद्रोंके प्रति मंत्रका जाननेवाला बलिको मंत्रितकरके दे॥ १७॥घृत,चावल,धानकी खील,सपेद ध्वजा,स-पेद चंदन,सपेद, पुष्पसपेदवस्त्र,धूप ॥ १८॥ सपेद कमलके फूल और यत्किंचित् सोना, जलका भराहुआ कलशामें घालके यह सब वस्तु एक सहनकमें रखके२१ वार मन्त्र पढके ७ वार स्त्री केऊपरवारकेगोशालामेंईशान,दिशाकी तरफ धर आवे॥ १९॥ वीसका श्लोक और इक्कीसका श्लोक और बाईसका श्लोक इन तीन श्लोकोंका मंत्रहै इसको २१ वार पढाना चाहिये॥ २०॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ और जो तीसरे महीनेमें गर्भमें वेदना हो तब पदमाख, सपेदचंदन, खस, तगर, यह सब समान लेके ॥ २३ ॥ ठंडे पानीमें पीसके बकरीकेदूधमें छानके पीवे ऐसे करनेमे गर्भपात नहींहो और शूल शमन होजावे ॥ २४ ॥

लाजाश्चसूपश्चतिलपिष्टकम् ॥३८॥ इक्षवस्तद्रसश्चै-वमाध्वीपैष्टीगुडोद्भवा ॥ येपुयानिनिषिद्धानितानि त्यजवालिंहरेत् ॥ ३९ ॥ मत्स्यांस्तत्रसमानीयसह-कारतलेक्षिपेत् ॥ अथवान्यस्यवृक्षस्यमूलेमंत्रेण मंत्रवित् ॥ ४० ॥ मंत्रः ॥ एकदंतोंविकापुत्रस्त्रिने-त्रोगणनायकः ॥ रक्तांवरधरः श्रीमान्रक्तमाल्यानु-लेपनः ॥ ४१ ॥ विनायकोगणाध्यक्षःशिवपुत्रोमहा वलः॥प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम्॥४२॥ वलिप्रदायकंमत्यंमायुपाचापिवर्द्धय ॥ अलक्ष्मीं वामयंपापंग्रहंविघ्नविनाशय ॥ ४३ ॥ वक्रतुंडमहा-वीर्यमहाभागमहावल ॥ शिरसात्वामहंवंदेसापत्यां रक्षगर्भिणीम् ॥ ४४ ॥ अथचेत्पञ्चमेमासिगर्भेभव-तिवेदना ॥ नीलोत्पलंमृणालंचपद्मकेसरसंयुतम्४५ अजाक्षीरेणसंपिष्टाक्षीरेणालोड्यतत्पिवेत् ॥ एवंनप-ततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥ ४६ ॥ नीलोत्पल-स्यमूलंतुकाकमाचीसनालकम् ॥ शीततोयेनसं-पिष्यक्षीरेणालोड्यतत्पिवेत् ॥४७ ॥ पुनर्नवासर्प-पाश्चनदरीवीजमाहरेत् ॥ शीततोयेनसंपिष्यअजा-क्षीरेणसंपिवेत् ॥ ४८ ॥

इति पंचममासगर्भरक्षा ॥ ५ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते पांचवें महीनेमें गणेशके प्रति चित्तको रोकके पुरुष बलि दे॥ ३४॥ चकोरस्थल

लालफूल, धूप, दीपक,लालकपडा, यत्किञ्चित् सुवर्ण कलशामें गेरके जलमें पूर्णकरके यह सर्व वस्तु एक मिट्टीकी सहनकमें रखके अगाडी जो मंत्र कहेंगे उस मंत्रको २१ वार जपके नदीके वा तालावके किनारे ईशान दिशाकी तरफ धर आवे ॥२७॥ ॥ २८ ॥ उनतीसका श्लोक और तीसका श्लोक यह दोनोंका मंत्र है इसको २१ वार जपके ७ वार स्त्रीके ऊपर वारके बलि-देना चाहिये ॥ २९ ॥ ३० ॥ और चौथे महीनेमें स्त्रीके वे-दनाहो तब सिंघाडा, केलाके पत्ते,दाख,अनारकी कली, केला का कंद यह वस्तु शीतल जलसे पीमे ॥ ३१ ॥ फिर बकरीके दूधमें छानके पीनेसे वेदना नष्टहो सुखकी शान्ति हो॥अन्योपायः खस, केलाकी जड, कमलककडी ॥ ३२ ॥ शीतल जलसे यह द्रव्य पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे,ऐसा करनेसे गर्भ पात नहीं हो शूल नष्ट होजावे ॥ ३३ ॥

यह चौथे महीनेके गर्भरक्षाविधि है ॥ ४ ॥

गार्भिणीगर्भरक्षार्थंपंचमेमासिदेयबलिः ॥ विनायकं समुद्दिश्यदेयःसंयतचेतसा ॥ ३४ ॥ विनायकंगोमयेनकुर्यात्पिष्टेनवापुनः ॥ चतुरस्रेशुभेलिप्तेस्था-पयेत्तंगणाधिपम् ॥ ३५ ॥ अभ्यर्च्यगंधपुष्पाद्यैर्वलितत्पुरतःक्षिपेत् ॥ अन्नंपक्वंतथाऽपक्वंमांसंपक्वमपक्वकम् ॥ ३६ ॥ पायसंमधुकंद्राक्षागुडक्षीरफलानिच ॥ कदलीफलपिण्डालमधूकानिचमूलकम्३७ पुरुषंनालिकेरंचकंदमूलानिसर्षपाः ॥ सर्वधान्यानि

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंषष्ठेमासितथाबलिः ॥ वसूनष्टस-मुद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ४९ ॥ घृतान्नंचहरि-द्रान्नंतंडुलांश्चैवपायसम् ॥ पीतवर्णप्रसूनानितथा नीलोत्पलानिच ॥ ५० ॥ सकांचनंपूर्णकुंभंसद्यो नद्यास्तटेक्षिपेत् ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणसावधानोभवे-त्सुधीः ॥ ५१ ॥ मंत्रः ॥ प्रवासः पावनः सौम्यः प्रत्यूषः पावकोऽनलः ॥ धरोध्रुवइतिह्येतेवसवोष्टौप्र-कीर्तिताः ॥ प्रगृह्णंतुबलिंचेमंनित्यंरक्षंतुगर्भिणीम् ॥ ॥ ५२ ॥ षष्ठेमासियदास्त्रीणांगर्भेभवतिवेदना ॥ तदावचेलामृद्वीकाचोत्पलंकेसरंपिबेत ॥ ५३ ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलमुत्पलंतुसकेसरम् ॥ शीततो-येनसंपिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ ५४ ॥ रामठं निंबपत्रंचमहिषीशृंगसर्षपाः ॥ कपिविष्टाधूपकंतुद-द्यादेषांमहोत्तमम् ॥ ५५ ॥ गजपिप्पलिकंचैवतथा नागरमुस्तकम् ॥ भार्ङ्गीचजीरकेद्वेचपद्माक्षंरक्त-चंदनम् ॥ ५६ ॥ वचाछागलदुग्धेनपिबेन्नारीसु-खाप्तये ॥ एवंनपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति ॥५७॥

इति षष्ठमासगर्भरक्षा ॥ ६ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते छठे महीनेमें अष्टवसुओंके प्रति मंत्रका जाननेवाला पुरुष बलिको मंत्रित करके देवे ॥ ४९ ॥ घृतके चूर्माकी पिंडी, चणाकी दाल, चावल,खीर,पीलेरंगके फल,नीले कमलके फूल ॥५०॥ जलका

दीपके उसपै गोबरका या आटाका गणेश बनाके स्थापन कर देना चाहिये ॥ ३५ ॥ फिर उनका गंधपुष्पादिकोंसे पूजन करके उनके अगाडी बलिदान दे ॥ पके हुये मूँगभात और कच्चा मूँगभात पकामांस और कच्चामांस ॥ ३६ ॥ खीर, सहत, दाख,गुड,दूध,फल,केलाकीजड,पिंडालकंद,महुवा,मूली॥ ३७॥ फालसा,नारियल,कंदमूलफल, सिरसम,सर्वधान्य,धानकी खील दाल, तिल, पीठी ॥ ३८॥ ईख, ईखका रस, मदिरा यह समस्त द्रव्य एकपात्रमें स्थित करना चाहिये जो वस्तु इनमें निषेध हैं वह त्यागकर देना चाहिये ॥ ३९ ॥ और मच्छीभी बलिमें सामिल करनी चाहिये,यह बलि २१ वार मंत्रसे मंत्रित करके ७ वार सीपर वारके गणेशसहित आम्रवृक्षके तले रख आवे आम्रवृक्षका अभाव हो तब और वृक्षके तले रख आवे॥ ४०॥ इकतालीसके श्लोकसे लेके चँवालीसके श्लोकपर्यंत मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ और जो पांचवें महीनेमें गर्भमें पीडा हो तब नीलोफर, कमलककडी, कमलगट्टा, नागकेशर यह औषधी बकरीके दूधमें पीसके छानके पीवे ऐसा करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल निवृत्त होजावे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ अन्योपायः ॥ नीककमलकी जड, काकमाची, कमलककडी यह औषधी ठण्डे जलसे पीसके दूधमें छानके पीवे गर्भपातोपद्रव शांत हो॥४७॥अन्योपायः ॥ सांठीकी जड,सिरसम,बेरकी गीरी यह दवाई शीतलजलसेपीसके बकरीके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपातोपद्रव शांत होजावै॥ ४८॥

यह पांचवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥५॥

चेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ५९ ॥ कपित्थंचन्द्रवालंचलाजाः शर्करायवान्विताः ॥ पिष्ट्वादुग्धेनदातव्यं गर्भिणीसुखहेतवे ॥ ६० ॥ कपित्थंशालुकंलाजाः शर्कंचतोयपेपितम् ॥ क्षीरेणालोड्यदातव्यंगर्भिणीसुखहेतवे ॥ ६१ ॥ अश्वत्थवटमूलेचभृंगराजस्तथेवच ॥ सूर्य्यमुख्याःपुनर्नव्यामूलंचरक्तचन्दनम् ॥ ६२ ॥ अजादुग्धेनसंपिष्यछागीदुग्धेन संपिवेत् ॥ एवंनपततेगर्भस्तस्याःशूलंविनश्यति ॥६३॥

इति सप्तमे मासि गर्भरक्षा ॥ ७ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते सप्तम महीनेमें स्वामिकार्तिकके प्रति बलि देवे, जो बलि छठेमहीनेमें जिस विधिसे दई जातीहै उसी विधिसे देनी चाहिये. परंतु मंत्र यह जपना चाहिये ॥ ५८ ॥ यह जो उनसठका श्लोकहै यह समस्त मंत्रहै इसको २१ वार पढके ७ सातवार वारकरके जलके किनारे पुरुप धर आवे ॥ ५९ ॥ और जो सातवें महीनेमें गर्भमें कुछ पीडा हो तो कैथकी गीरी, मूँगाकी शाख, धानकी खील, इंद्रजो यह सर्व समानलेके पीसके गौके दूधसे पीनेसे गर्भवती स्त्रीको सुखप्राप्तिहो शूल शांतहो ॥ ६० ॥ अन्योपायः ॥ कैथवृक्षके फलकी गीरी, सालममिश्री, धानकी खील; इंद्रजो यह सर्व समान लेके जलमें पीसकै गौके दूधमें छानके पीनेसे गर्भिणी स्त्रीको सुखप्राप्तिहोवे ॥ ६१ ॥ अन्योपायः ॥ पीपलकी जड, वडकी जड, जलभंगरा,

कलश उसमें यत्किंचित् सोना डालदेना चाहिये, यह सर्व वस्तु एक पात्रमें रखके मंत्रसे मंत्रित करके सावधान होके नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ॥ ५१ ॥ और जो यह बावनका श्लोकहै यह डेढ श्लोकका मंत्र है इसीको २१ बार जपके ७ बार वारके बलिको दे आवे ॥५२॥ और छठे महीनेमें गर्भमें पीडा हो तो वच, इलायची, छोटी मुनका, नीलोफर, नागकेसर,इनको दूधमें पीस छानके पीवे॥ ॥ ५३ ॥ अन्योपायः॥पीपल, पीपलामूल, कमलका फूल, कमलकी केसर यह औषधी शीतल जलमें पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपीडा मिटे ॥ ५४ ॥ और धूप लिखतेहैं—हींग, नीमके पत्ते, भैंसके सींगका छिलका, शिरसम, बंदरकी बीट इनको समान लेके गर्भवतीके शरीरको और योनिको धूप देवे तो पेटकी शूल मिटे यह धूप बहुत उत्तमहै ॥ ॥ ५५ ॥ अन्योपायः ॥ गजपीपल, नागरमोथा,भारंगी,सफेद जीरा, स्याहजीरा, पद्माख, लालचंदन ॥ ५६ ॥ वच यह औषधी सर्व समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके सुखकी प्राप्तिके वास्ते स्त्री पीवे ऐसा करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल शमन होजावे ॥ ५७ ॥

यह छठे महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥ ६ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंसप्तमेमासिवैबलिः ॥ स्कंदमुद्दिश्यदातव्यःपूर्वोक्तविधिनैवहि ॥ ५८ ॥ मंत्रः ॥स्कंदषण्मुखदेवेशशिवप्रीतिविवर्द्धन ॥ प्रगृह्णीष्वबलिं

भाषा–गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते आठवें महीनेमें दुर्गादेवीके प्रति बलि देना चाहिये जिस्से गर्भिणीकों सुख शांति हो और रीति करनेसे आनंद प्राप्ति न हो ॥ ६४ ॥ खीर,खांड, धानकी खील,तृणधान्यकाभात,घृत,पोली,खीचड़ी,भैंसका दही, मूली ॥ ६५ ॥ उडदके बाकले, चौले,किसी रकमका कंद, काले रंगके फूल, निलोफर,तिल, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना घाल देना चाहिये ॥ ६६ ॥ यह सब एक पात्रमें रखके मन्त्रसे मंत्रित करके नदीके किनारे या जलके किनारे बलिको रख आवे ॥ ६७ ॥ और अडसठका श्लोक उन्हत्तरका श्लोक सत्तरका श्लोक यह तीन श्लोकोंका मंत्रहै इसको २१ वार जपके ७सातवार स्त्रीपर वारके बलिको धर आवे ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ और जो आठवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो पद्माख, गजपीपल, कमलका फूल, कमलगट्टाकी गीरी, धनियां, यह सर्व दवाई समान लेके शीतल जलसे पीसके गायके दूधमें छानके पीनेसे गर्भका उपद्रव शांत होवे ॥ ७१ ॥ अन्योपायः ॥ सांठीकी जड़,सिंघाड़े, बेलपत्र, कसेरू, अर्जुनवृक्षका फल, पद्माख, लालचंदन यह सर्व समान लेके कूटके कपडछान करके बकरीके दूधके संग फंकी मासे ६ नित्य दिन ७ सात लेनेसे गर्भपात नहीं हो और शूल शांत हो जावे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

यह आठवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि कहीहै ॥ ८ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेपिनवमेबलिः ॥ देवानांमातु-

खीकी जड, साँठाकी जड, लालचंदन ॥६२॥ यह औषधी सर्व समान लेके बकरीके दूधमें पीसके बकरीके दूधमें छानके गर्भिणी पीवे ऐसे करनेसे गर्भपात नहींहो और शूल शमनहो जावे ॥ ६३ ॥ यह सातवें महीनेकी गर्भरक्षाविधिहै ॥ ७ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंबलिर्मासेपिचाष्टमे ॥ दुर्गामुद्दिश्य दातव्यःसुखंभवतिनान्यथा ॥ ६४ ॥ पायसंशर्करालाजास्तृणधान्योदनोघृतम् ॥ पूपिकाकृशराचैव माहिषंदधिमूलकम् ॥ ६५ ॥ माषानिष्पावकाःकंदःश्यामानिकुसुमानिच ॥ नीलोत्पलतिलादीनिपूर्णकुम्भःसकांचनः ॥ ६६ ॥ बलिःक्षिपेन्नदीतीरेमंत्रेणानेनमंत्रितः ॥ सलिलेवाक्षिपेन्मंत्रीसुखंभवतिनान्यथा ॥६७॥ मंत्रः॥ कात्यायनि महादेविज्येष्ठेविघ्ननिशाप्रिये ॥ दुर्गादेविमहाकालिसिंहशार्दूलवाहिनि ॥ ॥ ६८ ॥ धनुःखड्गधरेदेवि दुष्टदैत्यविनाशिनि ॥ नदीशैलप्रियेदेवि कुमारि सुभगे शिवे ॥ ६९ ॥ अष्टहस्तेचतुर्वक्रेपिंगलेशुभनासिके ॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ७० ॥ पद्मकंहस्तिपिप्पल्यउत्पलंपद्मधान्यकम् ॥ शीततोयेन संपिष्टाक्षीरेणालोडयतत्पिबेत् ॥ ७१ ॥ पुनर्नवाच शृंगाटंबेलपत्रंकशेरुकम् ॥ अर्जुनफलपद्माक्षंरक्तचंदनमेवच ॥ ७२ ॥ छागदुग्धसमंपेयंदिनानिसप्तकंतथा॥ एवं नपततेगर्भःशूलंचैवविनश्यति॥७३॥

इत्यष्टमे मासि गर्भरक्षा ॥ ८ ॥

वलि दे ॥ ७७ ॥ और जो नौमें महीनेमें कुछ गर्भमें पीडा हो तो अरंडकी जड़, काकोली, पलासपापडा यह सब औषधी समान लेके कूट कपड़छान करके जलके साथ पीनेसे और पुराणा अन्न खानेसे स्त्रीको सुखकी प्राप्ति हो ॥७८॥ अन्योपायः ॥ पलासका बीज, काकोली, चीताकी जड़, खस, जलमें पीसके पीवे और पुराना अन्नका भोजन करे ॥ ७९ ॥ अन्योपायः ॥ सूंठ, ढाकके पत्ते, इलायची, वायविडंग, जीरा सफेद, गजपीपल यह सब दवाई समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे, ऐसे करनेसे नवमें महीनेमें स्त्रीका गर्भपात नहीं हो ॥ ८० ॥

यह नवमें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥ ९ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थंमासेऽथदशमेवलिः ॥ उद्दिश्यनिर्ऋतिदेवींदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ८१ ॥ पक्कान्नंकृशरा लाजाःपक्काऽपक्काश्चमत्स्यकाः ॥ पक्कापक्कंचपललं सुराचेक्षुरसस्तथा ॥ ८२ ॥ कृष्णंवस्त्रंकृष्णगंधः कृष्णानिकुसुमानिच ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ निक्षिपेद्दक्षिणस्यांवेदिशिनीलपटावृतः ॥ ८३ ॥ मंत्रः ॥ पितृदेविपितृज्येष्ठेमहादेविमहाबले ॥ प्रेतासनेदिशावासनेर्ऋतेशोणितप्रिये ॥ ८४ ॥ प्रगृह्णीष्ववलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम् ॥ ८५ ॥ शर्करांचोत्पलंचैवमधुकंमुद्गमेवच ॥शीततोयेनसंपिष्टाक्षीरेणालोडयतत्पिबेत् ॥ ८६ ॥

रुद्दिश्यसुखंभवतिनान्यथा ॥ ७४ ॥ दध्यन्नंदधि मुद्गान्नंलाजाश्चकृशरातथा ॥ श्वेतपंकजगंधौचश्वेतानि कुसुमानिच ॥ ७५ ॥ धूपोवस्त्रंहिरण्येनयुतः पूर्णघटस्तथा ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेणवलिर्देयोजलाशये ॥ ७६ ॥ मन्त्रः ॥ प्रगृह्णीतवलिंचेमंयूयंचदेवमातरः ॥यूयंरक्षतसंतुष्टाः सापत्यांगर्भिणीमिमाम्॥ ॥ ७७ ॥ एरंडमूलीकाकोलीपालाशंबीजकंतथा ॥ पिष्ट्वाजलेनसंपेयंजीर्णान्नंभक्षयेत्सुखी ॥ ७८ ॥ पलाशबीजंकाकोलीचित्रमूलेनसंयुतम् ॥ उशीरमुदकेपिप्यजीर्णान्नंचैव भोजयेत् ॥ ७९ ॥ नागरंब्रह्मपत्रंचएलांचैवविडंगकम् ॥ जीरकंगजपिप्पल्याछागदुग्धेनतत्पिवेत् ॥ एतद्यत्नेकृतेनार्गे गर्भपानंनविंदति ॥ ८० ॥

इति नमने मासि गर्भरक्षा ॥ ९ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाकेवास्ते नौवें महीनेमें देवतानकी माताओंके प्रति बलि दे, जिसे सुख प्राप्तिहो, अन्य रीतिसे नहींहो ॥ ७४ ॥ दही, चावल, मूँग, धानकी खील, खिचड़ी,सफेदकमलके फल, रोली, सफेद सुगंधके फूल॥ ७५॥ धूप, वस्त्र, जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना घाल देना चाहिये॥ अगाड़ी मंत्र लिखेंगे उस मन्त्र करके बलि देनाचाहिये जलके किनारे ॥७६॥ यह जो नवचरका श्लोकहै यह मंत्रहै इसको २१ वार जपके गर्भवती स्त्रीके ऊपर ७ वार वारके

नहीं हो शूल शांत होजावे ॥ ८८ ॥ यह दशवें महीनेकी गर्भरक्षा विधि है ॥ १० ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थमासेचैकादशेबलिः॥ वासुदेवंसमुद्दिश्यदेयश्चायंविधिःस्मृतः॥ ८९ ॥ पायसंपूपपैष्टंच गुञ्जालाजाश्चसक्तवः ॥ श्यामध्वजाश्यामगन्धः श्यामानिकुसुमानिच ॥ ९० ॥ धूपदीपौपूर्णकुंभः सनीलोत्पलकांचनः ॥ अश्वत्थस्यतुमूलेवावासुदेवालयेऽथवा ॥ निक्षिपेत्प्रयतोभूत्वातत्रामुंमंत्रमुच्चरेत् ॥९१॥ पांचजन्यःप्रभाव्यक्तः कौस्तुभोद्द्योतभास्करः॥प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसापत्यांरक्षगर्भिणीम्९२॥ पद्मोत्पलंचमधुकंनालकेनापिसंयुतम् ॥ शीततोयेनपिष्ट्वातुक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ ९३ ॥ त्रिफलाककटशृङ्गीत्रिकटुश्चपुनर्नवा ॥ नागरंभृंगराजश्चछागीदुग्धेनसंपिबेत् ॥ ९४ ॥ मंजिष्ठंचन्दनोशीरं शृङ्गाटंचकशेरुकम् ॥ गुडूचीपद्मकंचैवअजादुग्धेन संपिबेत् ॥ ९५ ॥

इत्येकादशे मासि गर्भरक्षा ॥ ११ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते ग्यारहवें महीनेमें वासुदेवके प्रति बलिको दे इसविधिसे॥८९॥खीर,पुडे, कचौरी, घुँघची, धानकी खील,सत्तू,कालीध्वजा,कस्तूरी, काले सुगंधीके फूल ॥ ९० ॥ धूप, दीपक, जलका कलश उसमें नीलोफर सुवर्ण घालदेना चाहिये पीपलवृक्षके तले या नारायणके मंदिरमें

चैवउत्पलंचसनालकम् ॥ शीततोयेनसंपिष्यक्षीरे-
णालोडयततिपवेत् ॥ ८७ ॥ नागरावचशुंठीचतगरं
कुंकुमंतथा॥गोरोचनाचरंभाचअजाक्षीरेणपाययेत्८८

इति दशमे मासि गर्भरक्षा ॥ १० ॥

भाषा–गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते दशवें महीनेमें निर्ऋति देवीके प्रति मंत्रका जाननेवाला बलिको मंत्रित करके देवे ॥ ८१ ॥ पकाहुआ भात, खिचडी, धानकी खील, कच्ची मच्छी, पकीहुई मच्छी, कच्चा मांस, पका मांस, शराब, ईखका रस ॥८२॥ कालावस्त्र, कस्तूरी, कालेफूल, धूप, दीपक, जल-का कलश उसमें यत्किंचित् सुवर्ण घालदेना चाहिये यह सर्व वस्तु एक पात्रमें घालके नीला वस्त्र ओढके २१ वार मंत्र पढके ७ वार ऊपर धारके दक्षिणदिशामें धर आवे ॥ ८३ ॥ और चौरासी श्लोकसे पचासीके श्लोकतक डेढ श्लोकका मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ और जो दशवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो मिश्री, कमलके फूल, मुलहटी, मूंग यह सर्व समान लेके शीतल जलसे पीसके गौके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपातका उपद्रव शांत होजावे ॥८६॥ ॥ अन्योपायः ॥ मुलहटी, कमलगट्टा, कमलपुष्प, कमलककडी यह सब समान लेके शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे॥८७॥अन्योपायः नागरमोथा, वच, सोंठ, तगर, केसर, गोरोचन, केलाकी जड यह सब समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके पीनेसे गर्भपात

चाहिये और उसी देवताके प्रति देनी चाहिये और वही मंत्र पढना चाहिये ॥ ९६ ॥ और जो बारहवें महीनेमें गर्भमें पीडा उत्पन्न हो तो कमलगट्टा, सिंघाडे, कमलका फूल, कमलनाल यह औषधी सर्व समान लेके शीतळ जलसे पीसके गौके दूधमें छानके गर्भवती स्त्री पीवे तो गर्भपातोपद्रव शांत होजावै॥ ॥ ९७ ॥ यह बारहवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि कही है॥ १२॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां पञ्चमःपटलः॥५॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिसुखप्रसवसिद्धये ॥ स्त्रीणांसुखायकर्तव्याउपायाअतिगोपिताः ॥ १ ॥ करंकोभूतगोमूर्द्धासूतिकाभवनोपरि ॥ तत्कालनिहितंनार्याः सुखप्रसवकारकम् ॥ २ ॥ करंजपत्रबीजानां कल्केनचभिषग्वरः ॥ तैलंपक्त्वाह्यजाक्षीरेयोनिंलिंपेत्प्रसूतये ॥ ३ ॥ लेपनमंत्रः ॥ हिमवत्युत्तरेपार्श्वेशर्वरीनामयक्षिणी ॥ तस्या नूपुरशब्देनविशल्याभवगर्भिणीस्वाहा ॥ ४ ॥

भाषा—अब इसके उपरांत स्त्रियोंके सुखसे प्रसव होनेके लिये छठा पटल कहतेहैं. स्त्रियोंके सुखके वास्ते अतिगुप्त यह उपाय जनोंने करना चाहिये ॥ १ ॥ गौके या बैलके शिरका करंक बालक उदय करनेवाली स्त्रीके मकानकी छतपै धर देवें तो उसी समय उस नारीके सुखसे बालक होवे ॥ २ ॥ अन्योपायः ॥ करंजुवाके पत्तोंका और बीजोंका कल्क करके

२१वार मन्त्र पढके७वार स्त्रीके ऊपर वारके पुरुष जतनसे बलि धर आवे ॥ ९१ ॥ यह वानवेंका जो श्लोक है यह मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ९२ ॥ और जो ग्यारहवें महीनेमें कुछ गर्भमें पीडा हो तो पद्माख, कमलगट्टा, मुलहटी,कमलकी नाल यह सर्व समान लेके शीतल जलमें पीसके गौके दूधमें छानके पीवे तो गर्भपातका उपद्रव शांत होजावे॥९३॥अन्योपायः॥ हरडेकी छाल, बहेडा, आंवला, काकडासींगी, सोंठ, मिर्च,पीपल,सांठीकी जड,नागरमोथा, जलभंगरा यहसर्व समान लेके पीसके बकरीके दूधमें छानके पीवे ॥ ९४ ॥ अन्योपायः॥मंजीठ, चन्दन,खस, सिंघाडे, कशेरू,गिलोय,पद्माख यह सब समान लेके पीस छानके बकरीके दूधसे पीनेसे गर्भपात नहीं हो शूल शांत हो ॥ ९५ ॥

यह ग्यारहवें महीनेकी गर्भरक्षाविधि है ॥ ११ ॥

गर्भिणीगर्भरक्षार्थमासेवैद्वादशेबलिः ॥ एकादशोक्तविधिनादेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ ९६ ॥ पद्मशृङ्गाटकंचेवउत्पलंतुसनालकम् ॥ शीततोयेनपिष्ट्वातु क्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ ९७ ॥

इति द्वादशे मासि गर्भरक्षा समाप्ता ॥१२॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे गर्भिणीगर्भरक्षाकथनं नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

भाषा—गर्भिणी स्त्रीके गर्भकी रक्षाके वास्ते बारहवें महीनेमें जिस विधिसे ग्यारहवें महीनेमें बलि दई है उसी विधिसे देनी

भाषा—उसी वक्त कटालीकी जड उत्तरके तरफकी हाथसे उखाडके ल्यावे उसको जलमें पीसके योनिमें लेपनकर देवे तो सुखसे स्त्री बालकको पैदाकरे इसमें संदेह नहीं ॥ ५ ॥ अन्योपायः ॥ सूर्यके सम्मुख होके धतूराकी जडको ग्रहण करे उस जडको शिरपे स्त्री धारण करे तो सुखसे बालकको पैदा करे इसमें सन्देह नहीं ॥ ६ ॥ अन्योपायः ॥ पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके चिरभटीकी जडको उखाडके ल्यावे गूगलकी धूप देके कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांधे तो सुखसे बालक उदय करे इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥ अन्योपायः ॥ पूर्वको मुख करके ऊंगाकी जडको तात्काल उखाडके ल्याके फिर जलसे पीसके योनिमें लेप करे तो स्त्री सुखसे बालकको पैदा करे और कष्टरहित होजावे ॥ ८ ॥ अन्योपायः ॥ सांपकी कांचली लाके भस्म बनावे फिर सहतमें पीसके कष्टवाली स्त्रीके नेत्रोंमें आंजे तो सुखसे प्रसूत होजावे ॥ ९ ॥ अन्योपायः ॥ विधानपूर्वक सपेद शरपुंखाकी जडको ग्रहण करके कष्टवाली स्त्रीके कटिमें बांध दे तो बहुत शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको उत्पन्न करे ॥ १० ॥ अन्योपायः ॥ गूगल सांपकी कांचली दोनोंको कूटके कष्टवाली स्त्रीके योनिको धूप देवे तो सुखसे बालक उत्पन्न करे कष्ट निवृत्तहो ॥ ११ ॥ अन्योपायः ॥ इंद्रायणकी जडको योनिमें रक्खे तो शीघ्र सुखसे स्त्री बालकको पैदाकरे इसमें संदेह नहीं ॥ १२ ॥ अन्योपायः ॥ कलिहारी बूटीकी जड ल्याके उसको पीसके योनिमें लेपकर देवे तो सुखसे कष्टवाली स्त्री संतानको पैदाकरे ॥ १३ ॥

बकरीके दूधमें तिलोंके तैलको पकाके योनिको उस तेलसे लेपन कर दे तो सुखसे बालक उत्पन्न हो ॥ ३ ॥ और यह चौथा श्लोकहै यह तेल लगानेका मंत्रहै इस श्लोकको पढवाजावे॥ ४॥

तत्कालेकंटकामूलमुत्तरस्यांदिशिस्थितम् ॥ उत्पाट्यचैवहस्तेनजलेनसहपेपयेत् ॥ योनौलिप्त्वा तुसानारीसुखंसूतेनसंशयः ॥ ५ ॥ मूलंधत्तूरकस्यैवगृहीत्वासूर्यसम्मुखम् ॥ धत्तेशिरसियानारी सुखंसूतेनसंशयः ॥ ६ ॥ पश्चिमाभिमुखोमंत्रीगुंजामूलंसमुद्धरेत् ॥ कटौबद्धासुखंसूतेकामिनीनात्रसंशयः ॥ ७ ॥ अपामार्गस्यमूलन्तुतत्कालोत्पाटितंसुधीः ॥ पूर्वाशाभिमुखःपश्चादुदकेपिष्य लेपयेत् ॥ योनौसुखंप्रसूतेसानारीरहितवेदना ॥ ॥ ८ ॥ सर्पकंचुकमादायभस्मकृत्वाविधानवित् ॥ मधुनासहसंपिष्यचांजनेनप्रसूयते ॥ ९ ॥ श्वेतायाःशरपुंखायामूलंगृह्यविधानवित् ॥ कटौबद्धासुखंसूतेनारीनात्रविलम्बितम् ॥ १० ॥ गुग्गुलुंसर्पनिर्मोकंचूर्ण्यधूपंप्रदापयेत् ॥ योनौसासुखेनागीवेदनारहितासती ॥ ११ ॥ इंद्रवारुणकामूल निक्षिपेद्योनिमंडले ॥ तेनसासुखेनारीशीघ्रमेवन संशयः ॥ १२ ॥ मूलंचैवसमाहृत्यकलिहार्याःप्रयत्नतः ॥ संपिष्ययोनिसंलिप्यसुखंसूतेतुगर्भिणी॥१३॥

भाषा—अन्योपायः ॥ पुष्य नक्षत्रमें जब सूर्य होतब विधान-पूर्वक धतूराकी जड लावे. उसको कष्टवाली स्त्री कटिमें बांधे तो सुखसे संतान उदय करे इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ अन्योपायः ॥ सम्भालुके पत्ते या निर्गुंडीके,पत्ते शीतल जलमें पीसके योनिमें लेप करे तो सुखसे संतान उत्पन्नहो ॥ १५ ॥ अन्योपायः ॥ बांसके जडको शीतल जलमें पीसके नाभिके नीचे लेप करनेसे या पित्तपापडाके पत्तोंका रस नाभिके नीचे लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न हो॥ १६ ॥ अन्योपायः ॥ लांगलीके जडको कांजीके जलमें पीसके नाभिमें लेपकरे अथवा काकमाचीके जड़ीकूं कांजीमें पीसके नाभिमें लेपकरनेसे शीघ्र बालकको उत्पन्न करे इसमें संदेह नहीं ॥ १७ ॥ अन्योपायः ॥ अरंडकी गीरी,पीपल,वच, इन्होंको मीठे तेलमें पीसके नाभिमें लेपकरे तो कैसाही कष्टहो सो निवृत्तहो जावे. सुखसे संतान उदयहो ॥ १८ ॥ अन्योपायः ॥ मोरशिखाकी जड,विजयसार सहिंजनेकी जड, पाठा, कटाली, खरैंटी यह सब दवाई समान लेके कांजीसे पीसके नाभिमें लेप करेतो नारीके सुखसे बालक उत्पन्नहो॥ १९ ॥ अन्योपायः॥ शालपर्णीकी जडको चावलोंके पानीमें पीसके नाभिपे बस्ति देशपे और भगपे लेप करनेसे सुखसे बालक उत्पन्न करे ॥ २० ॥ धूपमाह ॥ सांपकी कांचली,मनुष्यके माथाके केश, सिरसम, कडवीतुंबी, अमलतास यह औषधी सब समान लेके कडुए तेलमें मरकोयके धूपदेवे तो उसी समय सुखसे बालक उत्पन्नहोवे॥ २१ ॥अन्योपायः ॥ ॥ चिरमठीकी जड-को लाके दश टुकडे़ करके फिर सप्ततारकी लालडोरीमें उसको

पुष्यार्केमूलमाहृत्यकनकस्यविधानतः ॥ कटौव-
द्धासुखंसूतेगर्भिणीनात्रसंशयः ॥ १४ ॥ पत्रकंसिं-
दुवारस्यनिर्गुण्डीपत्रकन्तुवा ॥ जलेनसहसंपिष्य
योनिंलिंपेत्प्रसूतये ॥ १५ ॥ वृषस्यमूलंहिमतो-
यपिष्टंरसोथवापर्पटपत्रजातः ॥ नाभेरधोलेपन-
तोऽगनानांसुखेनगर्भप्रसवंकरोति ॥ १६ ॥ लां-
गल्याः परिलेपः कांजिकयोगेन काकमाच्यावा ॥
नाभौसहसाकुरुते गर्भप्रसवंनसंदेहः ॥ १७ ॥ तैले-
नपिष्ट्वारुबुकस्यकृष्णंवचांप्रलिप्त्वाखलुनाभिदेशे ॥
सुखप्रसूतिंकुरुतेंऽगनानांप्रपीडितानांबहुभिः प्रमादैः
॥ १८ ॥ मयूरमूलासनशिग्रुपाठाव्याघ्रीबलाला-
ङ्गलिकासमेताः ॥ पिष्ट्वारनालेनविलिप्यनाभौसु-
खेननारीः प्रसवं करोति ॥ १९ ॥ शालिपर्ण्यां
भवंमूलंपिष्टंतंडुलवारिणा ॥ नाभिवस्तिभगेलेपा-
त्प्रसूतेप्रमदासुखम् ॥ २० ॥ सर्पकंचुकनृकेश-
सर्षपैस्तिक्ततुंबिकृतबंधनान्वितैः ॥ धूपनात्कुट-
कतैलसंयुतैस्तत्क्षणंखलुसुखंप्रसूयते ॥ २१ ॥
कृत्वा दशधाखण्डंगुंजामूलंनिबध्यकटिदेशे ॥ सूत्रे-
स्सप्तभीरक्तैःसुखप्रसूतिंहिभामिनीलभते ॥ २२ ॥
मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ॥ घृतेनस-
हदातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ २३ ॥

गर्भवती स्त्रीको हितकारी है ॥ २४॥ यह तैल मालिस करनेसे कानमें डालनेसे सब रोगोंका नाश करताहै; तथा गर्भकी पुष्टि करताहै, शरीरको बलवान् करताहै, अग्निको बढाताहै, और रुचिको बढाताहै ॥ २५ ॥ पीपल वृक्षकी उत्तरके तर्फकी जड लेके चावलोंके पानीसे पीसके जो गर्भवती स्त्री पीवे तो मूढगर्भवाली हो तोभी तात्काल कष्टरहित होजावे, सुखसे संतान उत्पन्नहोवे इसमें संदेह नहीं करना चाहिये२६॥ बहुत श्रेष्ठ प्रसूता स्त्रीका स्थान प्रमाण करे और चतुर हितकारी स्त्रियां उस जगह नियुक्त करनी चाहिये फिर रक्षामंत्रसे प्रसूता स्त्रीकी रक्षा करनी चाहिये॥२७॥ॐह्रींह्रीं स्मरस्मर श्रींश्रीं रक्ष रक्ष स्वाहा॥यह पंचदशाक्षर मंत्र रक्षाविधिवास्ते कहाहै॥२८॥ लालसूतका डोरा स्त्रीके प्रमाणमाफिक करना चाहिये परंतु सात तारका होना चाहिये फिर उसमें सात ७ गांठ लगाये पूर्वोक्त कहे हुए मंत्रसे१०८बार मंत्रित करना चाहिये॥२९॥ सूतिकाके भवनके दरवाजेपे बांध देना चाहिये. सब स्त्रियोंके हितके वास्ते यह रक्षाविधि कहीहै ॥ ३० ॥

अबलांरुधिरस्रावादबलांसमुपाचरेत् ॥ स्नेहाभ्यं-गेनमतिमान्निर्वातस्थानरक्षणेः ॥ ३१ ॥ पैष्टिकीं मागधींवापिमदिरामपिपाययेत् ॥ एवंद्वित्रिदिनंत-ज्ज्ञैः कर्तव्यास्तुहिताःक्रियाः ॥ ३२ ॥ यवागूंसघृ-तांवैद्यःकृशराम्वावलादिकम् ॥ सात्म्यंकालंवयोवी-क्ष्यत्रिरात्रंभोजयेत्तथा ॥ ३३ ॥ यवकोलकुलित्था-नांजांगलस्यरसोत्तमेः ॥ ओदनंभोजयेत्सात्म्यंकृ-

अलेधा २ बांधके कष्टवाली स्त्रीके कटीमें बांधे तो सुखसे संतान उत्पन्नहो ॥ २५ ॥ अन्योपायः ॥ बिजौराकी जड मुलहठी, शहद, यह वस्तु जलसे पीसके जलमें छानके गरम करके घी उसमें डालके पीवे तो कष्टवाली स्त्रीको सुखसे संतान हो कष्ट दूरहो ॥ २३ ॥

बालंबलाचांशुमतीबृहत्यौपाठानिशादारुनिशागुडूची ॥ एभिस्सुपिष्टैः खलुगर्भिणीनांतैलंविपक्कंपयसाप्रशस्तम् ॥ २४ ॥ अभ्यंगकर्णांतरपूरकाभ्यांसर्वामयानांप्रलयंविधत्ते ॥ गर्भस्यपुष्टिंसबलं शरीरंकृशानुवृद्धिरुचिरांरुचिंच ॥ २५ ॥ अश्वत्थोत्तरमूलंतंडुलपयसानिघृष्यापिवति ॥ सद्यो भवतिविशल्याविमूढगर्भापिनात्रसंदेहः ॥ २६ ॥ प्रशस्तेरक्षतुदक्षहितस्त्रीभिरलंकृते ॥ प्रसूतांसूतिकागारेरक्षामन्त्राभिमंत्रिताम् ॥२७॥ प्रणवोभुवनेशानिस्मरश्रीरक्षयुग्मकम् ॥ वह्निजायावधिर्मन्त्रः प्रोक्तःपंचदशाक्षरैः ॥ २८ ॥ दोरकंरक्तसूत्रेणस्त्रीप्रमाणतुकारयेत् ॥ सतग्रंथिसमायुक्तंसप्ततंतुविनिर्मितम् ॥२९॥ सूतिकाभवनद्वारेत्वर्भायान्मंत्रमंत्रितम्॥ रक्षामन्त्रःसमाख्यातःसर्वासांहितकाम्यया॥३०॥

भाषा—नेत्रवाला, खरेटी, चादवेल, कटाळीकी जट, पाढर हलदी, दारुहलदी, गिलोय यह सब दवाई पीसके कल्क बनाके तेलसे चौगुना दूध डालके कल्क उसमें डालके पकावे यह तेल

गर्भवती स्त्रीको हितकारी है ॥ २४॥ यह तैल मालिस करनेसे कानमें डालनेसे सब रोगोंका नाश करताहै; तथा गर्भकी पुष्टि करताहै, शरीरको बलवान् करताहै, अग्निको बढाताहै, और रुचिको बढाताहै ॥ २५ ॥ पीपल वृक्षकी उत्तरके तर्फकी जड लेके चावलोंके पानीसे पीसके जो गर्भवती स्त्री पीवे तो मूढगर्भवाली हो तोभी तात्काल कष्टरहित होजावे, सुखसे संतान उत्पन्नहोवे इसमें संदेह नहीं करना चाहिये २६॥ बहुत श्रेष्ठ प्रसूता स्त्रीका स्थान प्रमाण करे और चतुर हितकारी स्त्रियां उस जगह नियुक्त करनी चाहिये फिर रक्षामंत्रसे प्रसूता स्त्रीकी रक्षा करनी चाहिये॥ २७॥ ॐह्रींह्रीं स्मरस्मर श्रींश्रीं रक्ष रक्ष स्वाहा॥ यह पंचदशाक्षर मंत्र रक्षाविधिवास्ते कहाहै॥ २८॥ लालसूतका डोरा स्त्रीके प्रमाणमाफिक करना चाहिये परंतु सात तारका होना चाहिये फिर उसमें सात ७ गांठ लगाये पुर्वोक्त कहे हुए मंत्रसे १०८वार मंत्रित करना चाहिये॥ २९॥ सूतिकाके भवनके दरवाजेपे बांध देना चाहिये. सब स्त्रियोंके हितके वास्ते यह रक्षाविधि कहीहै ॥ ३० ॥

अबलांरुधिरस्रावादबलांसमुपाचरेत् ॥ स्नेहाभ्यंगेनमतिमान्निर्वातस्थानरक्षणैः ॥ ३१ ॥ पैप्पिकीं [illegible] ॥ एवंद्वित्रिदिनंत- [illegible] ॥ ३२ ॥ यवागूंसघृतांवैद्यःकृशराम्वाबलादिकम् ॥ सात्म्यंकालंवयोवीक्ष्यत्रिरात्रंभोजयेत्तथा ॥ ३३ ॥ यवकोलकुलित्थानांजांगलस्यरसोत्तमैः ॥ ओदनंभोजयेत्सात्म्यंकृ-

शानुंरक्षयेत्ततः ॥ ३४ ॥ अनेनविधिना दक्षःप्रशस्ताभिःसुरक्षिताम् ॥ प्रदक्षागर्भजननेस्त्रियस्तांसमुपाचरेत् ॥ ३५ ॥ कोष्णेनपयसास्नेहैःसुस्निग्धां स्नापयेत्ततः ॥ यथायुक्तिविधानज्ञःपश्चाद्दानानि कारयेत् ॥ ३६ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे सुखप्रसवोपायकथनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

भाषा—रुधिरके बहनेसे निर्बलहुई स्त्रीका तैलादिकोंसे मर्दन करके वगैर हवाके मकानमें रख करके रक्षामंत्र करके उपाचरण करे अर्थात बुद्धिमान् वैद्य चिकित्सा करे ॥ ३१ ॥ पैष्टिकीसंज्ञक मदिराको और मागधीसंज्ञक मदिराको वैद्य प्रसूता स्त्रीको प्यावे ऐसे प्रसूताकी विधिके जाननेवाले वैद्यने दो तीन रोजतक हितकारी क्रिया करनी चाहिये ॥ ३२ ॥ बलको सात्म्यताको समयको अवस्थाको देखके तीन रात्रि पर्य्यंत घृतसहित यवागूका भोजन करावे अथवा खिचडी घी सहित खवावे ॥ ३३ ॥ जौका कोलका अथवा कुलित्थके रसके संग अथवा जंगलके पशु पक्षियोंके मांसके सोरुवाके संग भात खानेको वैद्य बलमाफिक देवे अग्निकी रक्षा रक्खे अर्थात मंदाग्नि नहीं होनदे ३४ ॥ इस विधि करके अच्छी श्रेष्ठ हितकारी क्रियाओंसे चतुर वैद्य प्रसूताकी रक्षा करे या बहुत चतुर दाई लोग प्रसूताकी प्रतिक्रिया करे ॥ ३५ ॥ प्रथम तैलादिकोंकी मालिस सर्व शरीरकी

कराके पीछे गरमजलसे स्नान करावे, फिर युक्तिपूर्वक सर्व वि-
धानका जाननेवाला वैद्य दान पुण्य करावे ॥ ३६ ॥

इतिश्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतवालतंत्रभाषाटीकायांषष्ठःपटलः॥६॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिबालरक्षांयथाक्रमम् ॥ प्रथमेदि-
वसेनाम्नीनंदिनीक्रमतेशिशुम् ॥ १ ॥ तद्गृहीतस्यबा-
लस्यज्वरः स्यात्प्रथमंततः ॥ गात्रशोषस्तथास्वेदो
नाहारेष्वभिनन्दनम् ॥२॥ छर्दिर्मूर्च्छाचकंपश्चशोषो
दीनस्वरस्तथा ॥ विधानंतत्रवक्ष्यामियेनमुंचतिनंदि-
नी ॥ ३ ॥ कूलद्वयमृदाकुर्य्यात्पुत्तिकांसुमनोह-
रम् ॥ शुक्लोदनंशुक्लगंधंतथागंधानुलेपनम् ॥ ४ ॥
शुक्लपुष्पाणिपंचैवध्वजाः पंचप्रदीपकाः ॥ स्व-
स्तिकापंचपूर्वाह्लिपूर्वस्यांदिशिसंयुतः ॥ ५ ॥ बलिं
दद्यादथोराजसर्षपोशीरमेवच ॥ शिवनिर्माल्यमा-
र्जारनृकेशानिंवपत्रकम् ॥ ६ ॥ गव्यंघृतंततोऽनेन
धूपयेच्चैवबालकम् ॥ एवंदिनत्रयंकृत्वाचतुर्थेमन्त्रवा-
रिणा॥७॥ स्नापयेद्बालकंपश्चाद्ब्राह्मणंवापिभिक्षुकम्
क्षीरेणभोजयेदेवंस्वस्थोभवतिबालकः ॥ ८ ॥ स्ना-
पनेपूजनेचैवबलिदानेचमार्जने ॥ वक्ष्यमाणेनमन्त्रेण
कर्तव्योविधिरुत्तमः ॥ ९ ॥ मंत्रः ॥ प्रणवोभुवने-
शानिखंखःस्वाहाषडक्षरः ॥ एवंकृतेनबालस्यसुखं
भवतिनान्यथा ॥ १० ॥

इति प्रथमदिवसे बालकस्यग्रहनिवारणविधिःसमाप्तः॥१॥

भाषा—अब इसके उपरांत क्रमपूर्वक बालरक्षाको कहते है-पहिलेदिन नंदिनी नाम देवी बालकको ग्रहण करती है॥ १॥ उस बालकको प्रथम ज्वर हो गात्र सूखे पसीना आवे स्तन ले नही ॥ २ ॥ दूधकी छर्दि करे मूर्च्छा हो कंप हो मुखशोष हो क्षीण स्वर हो यह लक्षण नंदिनीदेवीकरके गृहित बालकके होतेहैं । अब जिस विधानसे वह बालकको छोडदे सो विधान कहते हैं॥ ३॥ नदीके दोनों किनारेकी मट्टी लाके उसकी सुन्दर मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी सपेद भात रकाके रक्खे सपेद फूल सपेद चन्दन घिसके रक्खे कपूर रक्खे ॥ ४ ॥ सपेद चमेलीके फूल पांच,५ सपेद ध्वजा पांच दीवे पांच आटाके दिये यह सब एक जगह रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकपर वारके ४ घडी दिन चढे पूर्व दिशामें धर आवे॥५॥ ऐसे बलिको दे और बली दिये पीछे राई खस आकके फूल बिल्लीके बाल मनुष्यके शिरके बाल नीमके पत्ते ॥ ६ ॥ गौका घी यह सब द्रव्य एकत्र करके बालकको धूप देवें ऐसे तीन दिन यह विधान करे ॥ ७ ॥ फिर चौथे दिन जलमंत्रित करके बालकको स्नान करावे फिर ब्राह्मणको और अभ्यागतोंको दूधका भोजन करावै ऐसा करनेसे बालक निरोग होजाताहै ॥ ८ ॥ स्नान करानेमें पूजनमें बलिका देनेमें मार्जनमें अगाडी कहेंगे उस मंत्रसे उत्तम विधि करनी चाहिये ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं खं खः स्वाहा ॥ यह छः अक्षरके मंत्रको जपना चाहिये, इसीकरके बलि देना चाहिये, इसी करके स्नान करना चाहिये॥ १०॥

इति प्रथमदिवसे बालग्रहग्रस्तविधिः ॥ १ ॥

द्वितीयेदिवसेबालंगृह्णातिचसुनंदना ॥ ततोभवे-
ज्ज्वरः पूर्वसंकोचोहस्तपादयोः ॥ ११ ॥ दंतान्खाद-
तिश्वसिति निमीलयतिचक्षुषी ॥ आहारंचनगृह्णाति
दिवारात्रौचरोदति ॥ १२ ॥ अक्षिरोगंछर्दनंचभ-
वेद्भीतिः पुनःपुनः॥ कृशत्वंजायतेऽत्यन्तंचिह्नमेत-
त्प्रकीर्तितम् ॥ १३ ॥ तंदुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्मा-
याथपुत्तिकाम् ॥ त्रयोदशध्वजादीपाःस्वस्ति-
काधवलोदनम् ॥ १४ ॥ सिद्धार्थसर्षपंमाषंपक्वाप-
क्वं तिलं तथा ॥ मांसंचेतानिसंहृत्यत्रबलिंबालसुखा-
प्तये ॥१५॥पश्चिमायांचसंध्यायामेवंदद्याद्दिनत्रयम्॥
धूपं मंत्रजपंस्नानं कुर्य्यात्पूर्वक्रमेण वै ॥ १६ ॥

इति द्वितीयदिवसेबालकग्रहनिवारणविधिः ॥ २ ॥

तृतीयेऽह्निचगृह्णातिघंटालीबालकंग्रही॥तयास्यात्कं-
पमुद्वेगंकासंश्वासंचरोदनम् ॥ १७ ॥ गजदन्तञ्च
गोदन्तंतथांजन्यास्तुकोशकम् ॥ अजाक्षीरेणसंपि-
ष्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥ १८॥ धूपयेन्निंबपत्राणि न-
खसर्षपराजिकाः ॥ लेपितोधूपितोबालःसुखमाप्नो-
तिनिश्चितम्॥ १९ ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्चका-
रयेत् ॥ एवंकृतेतुसादेवीबालकंमुंचतिस्फुटम् ॥२०॥

इति तृतीयदिनेबालकग्रहनिवारणविधिः ॥ ३ ॥

भाषा—दूसरे दिन सुनंदनानाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै
उसके यह लक्षण होतेहैं-प्रथम ज्वर उत्पन्नहो,हाथ पैरोंको सकुच

रक्खे ॥ ११ ॥ दांतोंको चावे,श्वासको जाजती रहै,नेत्रोंको मिचारक्खे स्तन चूखेनहीं, दिनरात्रि रोयाकरे ॥१२॥ नेत्रोंमें रोगहो अर्थात् दूखे धूधकी छर्दि हो और चमके वारवार शरीर दुर्बल होजावे इन लक्षणोंसे सुनंदना देवीका दोष होताहै॥१३॥ इसका उपाय कहतेहैं—सेरभर चावल पीसके देवीकी मूर्ति बनाके उसको एक सहनकमें रखके १३ ध्वजा पंचरंगी १३ दीपक १३ आटाके दीपक धोले चावल पकेहुए ॥ १४ ॥ गेहूंका दलिया सिरसम उडद बाकले,मांस यह संपूर्णवस्तु अगाडी रखके पात्रमें ॥ १५ ॥ २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकपर वारके संध्यासमय पश्चिमदिशामें धर आवे ऐसे तीन दिन करनेसे बालकको आनंद होजावै और धूप मंत्र स्नान कराना यह सब प्रथम दिनकी विधिके क्रमसे करे ॥ १६ ॥ इति द्वितीयदिवसे बालग्रहरक्षाविधिः ॥२॥तीसरेदिन वंटालि नामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम बालकका शरीर कंपे उद्वेगहो खाँसीहो श्वासका हकारा हो और बहुत रोवे इन लक्षणोंसे वंटाली देवीका दोष जानना ॥ १७ ॥ हाथीदांत गौका दांत कुम्हारी जानवरके घरकी मट्टी यह सब बकरीके दूधमें पीसके बालकके शरीरपे लेपकरे ॥ १८ ॥ नींबके पत्ते नख सिरसन राई इनकी धूपदे ऐसे करनेमे बालकनिश्चय सुखको प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥ और दूसरे दिनकी बलिविधान करे प्रथम दिनकी रीतिसे स्नान करावे उसी मंत्रका जप करे

सबकर्म पूर्ववत् करे ऐसे करनेसे वेताली देवी बालकको छोड देतीहै ॥ २० ॥

इति तृतीयदिवसे बालकग्रहरक्षाविधिः ॥ ३ ॥

चतुर्थेह्निचगृह्णातिकटकोलीग्रहीशिशुम् ॥ तच्चेष्टाऽरुचिरुद्वेगःफेनोद्गारौदिगीक्षणम् ॥ २१ ॥ गजदन्ताऽहिनिर्मोकराजिकाश्चप्रलेपयेत् ॥ धूपयेत्सर्पपारिष्टकेशैर्मुंचतिसाग्रही ॥ २२ ॥ मंत्रस्नानादिकं सर्वंबलिदानादिकंतथा ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ २३ ॥ इतिचतुर्थदिनेबालग्रहनिवारणविधिः ॥४॥ पञ्चमेऽहन्यहंकारिग्रहीगृह्णातिबालकम् ॥ तच्चेष्टाजृंभणश्वासमुष्टिबंधोर्ध्ववीक्षणम् ॥ २४ ॥ शिलातालवचालोध्रमेपशृंगैःप्रलेपयेत् ॥ लशुनंनिंबपत्राज्यसिद्धार्थैर्धूपयेत्ततः ॥ २५ ॥ एवं मुंचतिसाबालंबलिदानाद्विशेपतः ॥ अवशिष्टंतुयत्सर्वंपूर्वरीत्याप्रकारयेत् ॥ २६ ॥ इतिपंचमदिने बालग्रहनिवारणविधिः ॥५ ॥ षष्ठेचदिवसेनाम्नाखट्वांगीक्रमतेशिशुम्॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यरोदनमोहनम् ॥ २७ ॥ कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदन्तैर्घृतान्वितैः ॥ धूपयेल्लेपयेच्चापिततोमुञ्चतिसाग्रही॥२८॥

इति षष्ठदिवसबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ६ ॥

भाषा—चौथे दिन कटकोलीनाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—स्तन चूसे नहीं उद्वेगहो मुँहमें झाग आवे

डकार ले रोवे दश दिशाओंकी तरफ आंख फेरके देखै ॥ २१ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—हाथीदांत, सांपकी कांचली, राई, यह तीनों बराबर लेके पानीमें पीसके शरीरपर लेप करे शिरसम नींबके पत्ते मनुष्यके माथाके बाल इनकी धूनी देनेसे घंटाली देवीका दोष दूर हो बालक चंगाहो ॥ २२ ॥ और मंत्र जाप स्नान कराना बलिदान यह सब वस्तु पहिले दिनके माफिक करे ॥ २३ ॥ इति चतुर्थदिनगृहीतबालरक्षा विधिः ॥ ४ ॥ पांचवें दिन अहंकारी देवी बालकको ग्रहण करतीहैउसके लक्षण कहतेहैं—जंभाई बहुत आवे श्वासका हकारा हो मुट्ठी बँधी रक्खे ऊपरको देखे यह लक्षण होनेसे अहंकारी देवीका दोष कहना ॥ २४ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—मनसिल, हरताल, बच, लोध, मेढासिंगी, यह औषधी सब समान लेके पानीमें पीसके बालकके लेपन करे और लहसन नींबके पत्ते घो राई इनकी धूनी बालककोदे ॥ २५ ॥ ऐसा करनेसे अहंकारी देवी बालक को छोड देतीहै और शेष रहे बलिदान स्नान मंत्रजपादिक कर्म है सो पहिले दिनके माफिक करे बालक चंगाहो ॥ २६ ॥ इति पंचमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ५ ॥ छठे दिन खट्वांगी देवी बालकको ग्रहण करतीहै इसके लक्षण कहतेहैं-प्रथम बालकके अचैनीरहै और हँसे कदाचित् रोवे मोह हो अर्थात् गफलत रहै स्तन चूखे नहीं इन लक्षणोंसे खट्वांगी देवीका दोष कहना ॥ २७ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं-कूट, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, गौका घी, [illegible] के बालकको धूपदे और यही

द्रव्य जलमें पीसके बालकको लेपन करे और दान बलिदान मंत्र जाप स्नान यह सब पहिले दिनकी माफिक करे बालक चंगा हो खट्वांगी देवीका दोष दूर हो ॥ २८ ॥

इति षष्ठदिवसगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ६ ॥

सप्तमेदिवसेनाम्नाहिंसिकाक्रमतेशिशुम् ॥ तच्चेष्टा जृंभणंश्वासोमुष्टिबंधस्तथैवच ॥ २९ ॥ मेषशृंगीवचारोध्रंहरितालंमनःशिला ॥ एतत्तुरुचिरंपिष्ट्वाततोबालंप्रलेपयेत् ॥ ३० ॥ बलिदद्यात्तुप्राग्रीत्याततोमुंचतिसाग्रही ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्तक्रमेणतु ॥ ३१ ॥ इति सप्तमदिवसगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ७ ॥ अष्टमेदिवसेनाम्नाभीषणीक्रतेमशिशुम् ॥ कासतेश्वसतेचैवगात्रसंकोचतेभृशम् ॥ ३२ ॥ अपामार्गमुशीरंचपिप्पलीचित्रकंतथा ॥ अजामूत्रेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥ ॥ ३३ ॥ गोशृंगनखकेशैस्तुधूपयेद्बालकंततः ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३४ ॥ इत्यष्टमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ८ ॥ नवमेदिवसेबालंमेषागृह्णातिवैशिशुम् ॥ तच्चेष्टात्रासनोद्वेगः स्वमुष्टिद्वयखादनम् ॥ ३५ ॥ वचाचंदनकुष्ठोग्रासर्षपास्तत्रलेपयेत् ॥ नखवानररोमाभ्यांधूपनान्मुञ्चतिग्रही ॥ ३६ ॥

इति नवमदिनगृहीतबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

भाषा—सातवें दिन हिंसिकानाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—जँभाई आवे श्वासहो मूठी खोलेनहीं स्तनपान करे नहीं ॥ २९ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं, मेढासींगी बच लोध हरिताल मनसिल यह सब समानलेके पानीसे बारीक पीसके बालकके शरीरको लेपन करे ॥ ३० ॥ और बलिदान मंत्रजप स्नान कराना यह पहिले दिनकी माफिक सब कर्म्म करे बालक चंगाहो हिंसिका देवीका दोष दूर हो ॥ ३१ ॥ इति सप्तमदिवसगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ॥ ७ ॥ आठवेंदिन भीषणी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै इसके लक्षण कहतेहैं—कासश्वास हो अंगको संकोच रखे ज्वर हो आंख खोले नहीं इन लक्षणोंसे भीषणी देवीका दोष जानना ॥ ३२ ॥ अब इसके उपाय कहतेहैं—चिरचिरा खस पीपल चित्रक यह सब दवा समानलेकर बकरीके मूत्रमें पीसके बालकके लेपन करे ॥ ३३ ॥ गौका सींग नख मनुष्यकेबाल इन्होंकी धूप बालकको देवेऔर मंत्रजापस्नान कराना बलिदान देना यह सब कर्म प्रथम दिनकी माफिक करे ॥ बालक चंगाहो भीषणी नाम देवीका दोष दूर हो ॥ ३४ ॥ इत्यष्टमदिवसगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ८ ॥ नवमें दिन मेषा नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै तिसके लक्षण कहतेहैं ॥ प्रथम बालक चमक चमक पडे और अचैनीरहै अपने हाथकी मूँठीको काटै २ खाय इन लक्षणोंमे मेषा नाम देवीका दोष जानना ॥ ३५ ॥ इसका उपाय कहतेहैं—बच चन्दन कूट राई

यह सब दवा समानलेके जलमें पीसके बालकके शरीरको लेपन करे, नख बंदरके रोम इन्होंकी धूनी दे और बलिदानादिक सब कर्म पहले दिनकी माफिक करे बालक चंगा हो मेषानाम देवीका दोष दूर हो ॥ ३६ ॥

इति नवमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

दशमेदिवसेनाम्नारोदनाक्रमतेशिशुम् ॥ तच्चेष्टा कासनंचैवरोदनंमुष्टिबंधनम् ॥ ३७ ॥ कुष्ठोग्रा-सर्जसिद्धार्थैर्लिंपेन्निंबेनधूपयेत् ॥ मत्स्यमांससुरा-युक्तनिशायांबलिमाहरेत् ॥ ३८ ॥ अपामार्गा-कुरोशीरचन्दनक्राथवारिणा ॥ मंत्रमष्टशतंजप्त्वात्रिसं-ध्यंपरिषिंचयेत् ॥ ३९ ॥ एवंकृते तु सादेवी बालंमुंचतिरोदना ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यच्च कारयेत् ॥ ४० ॥

इति दशमदिनग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ १० ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे दिनग्रहीगृहीत-बालरक्षाकथनं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

भाषा—दशवेंदिन रोदना नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—खांसी हो रोवे बहुत चिल्लीमारे मूठीबँधी रक्खे स्तनपान नहीं करे ॥ ३७ ॥ इन लक्षणोंसे रोदना नाम देवीका दोष जानना अब इसका उपाय कहतेहैं । कूट बच राल गई यह सब दवाई लेके पानीमें पीसके बालकके शरीरको लेपन करे और नींबके पत्तोंकी धूनी दे और

पहिले दिनकी माफिक बलिदान संध्या समयमें देना चाहिये परंतु मत्स्यका मांस, मदिरा यह और बलिमें सामिलकर देना चाहिये ॥ ३८ ॥ कंगाके वृक्षके अंकुर, खस, लालचंदन, इन द्रव्योंका क्वाथ बनाके फिर क्वाथ जलको एक सौ आठ बार मंत्रितकरके त्रिकाल बालकको स्नान करावे ॥ ३९ ॥ और मंत्र जपादिक शेष कर्म पहिले दिनकी माफिक करे ऐसे करनेसे रोदना देवीका दोष दूर हो बालक चंगा हो ॥४०॥

इति दशमदिनगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥१०॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां सप्तमःपटलः॥७॥

अथमासगृहीतस्यबालकस्यविमुक्तये ॥ बलिंवक्ष्यामिसुखदंसर्वतंत्रेपुगोपितम् ॥ १ ॥ प्रथमेमासिगृह्णातिकुमारीनामयोगिनी ॥ उद्वेगज्वरशोषादिचेष्टितंतत्रजायते ॥ २ ॥ नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यसंध्याकालेवलिंहरेत् ॥ नदीतटद्वयात्कृष्णमृदादेवीस्वरूपकम् ॥ ३ ॥ कृत्वापूजाप्रकर्तव्यापुष्पधूपादिभिस्ततः ॥ वटकामुष्टिकापूपाअन्नभक्तंगुडोदधि ॥ ४ ॥ चतुर्वर्णपताकाश्चप्रदीपाःपुष्पचंदनम् ॥ अपराह्णेऽथवादद्यान्मंत्रेणानेनमंत्रवित् ॥ ५॥ॐनमो भगवतेचरावणायचबालकम् ॥ मुंचयुगंवह्निजाया मंत्रोविंशतिवर्णकः ॥ ६ ॥ इति प्रथममासग्रहगृहीत बालकरक्षाविधिः ॥ १ ॥ द्वितीयेमासिगृह्णाति

बालकंमुकुटाग्रही ॥ ग्रीवानिवृत्तिर्निष्पंदोवपुषः पीतशीतता ॥ ७ ॥ वक्रसंशोषणोद्गाराराेचका-नितदाश्रयम् ॥ क्षीरान्नंकृशरापूपतिलतंडुलसंयुतम् ॥ ८ ॥ कृष्णपुष्पांशुकालेपैस्तत्रमान्त्रैर्बलिंहरेत् ॥ कुसुंभंलशुनंनिंबंसंचूर्ण्यधूपयेच्छिशुम्॥ ॥ ९ ॥ इति द्वितीयमासे बालरक्षा ॥ २ ॥

भाषा—अब दिनरक्षा कहनेके अनंतर महीनोंमें गृहीत हुए बालकोंकी रक्षाके वास्ते बडे गुन सुखके देनेवाले बलिदानादिक प्रयोग कहतेहैं ॥ १ ॥ पहिले महीनेमें कुमारी नाम योगिनी बालक को ग्रहण करतीहै. उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम बालकके उद्वेगहो, ज्वरहो गात्रशोषहो रोवे बहुत स्तनपान करे नहीं इन लक्षणोंसे कुमारी नाम देवीका दोष कहना ॥२॥ अब इसका उपाय कहतेहैं । नैर्ऋत्य दिशामें संध्याकालमें बलिदे. नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टीलाके उसकी देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें स्थापनकरे॥ ३॥फूल धूप इन्हों करके पूजन करे. बडे मुठीये पडे भात गुड दही चार रंगकी४ ध्वजा ४ दीपक फूल चंदन यह सब वस्तु उसी पात्रमें मूर्तिके अगाडी रखके फिर मंत्रका जाननेवाला मंत्र पढके बलिको देवै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते रावणाय बालकं मुंच मुंच स्वाहा इसमंत्रको २१वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके दे बालक निरोग हो ॥ ॥ ६ ॥इति प्रथममासरक्षा ॥१॥दूसरे बालकके पीडा उत्पन्न होनेसे मुकुटा देवीका दोष जानना इनके लक्षण कहतेहैं—ग्रीवा

ढीली गेरदे अंगकंपै शरीर पीला होऔर महिनामें शीतलरहे॥ ७॥
मुख सूखा रहै स्तन पीवे नहीं, डकार बहुत आवें. अब
इसका उपाय कहतेहैं, मिट्टीकी देवीकीमूर्ति बनाके एक सहन-
कमें रखके फिर खीर खिचड़ी पूडे तिल चावल॥ ८॥ कालेफूल,
कालावस्त्र काली कस्तूरीका घिसाहुआ चंदन यह सब वस्तु
देवीके अगाड़ीधर निवेदन करे, फिर प्रथम लिखे हुए मंत्रको २१
वार पढके ७ वार बालकपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ बलिको
धर आवे. संध्या समयमें फिर कुसुंभ लहसन नीबके पत्ते इन्हों
का चूर्ण करके बालकको धूपदे बालक निरोगहो ॥ ९ ॥

इति द्वितीयमास रक्षा ॥ २ ॥

तृतीयेमासिगृह्णातिबालकंगोमुखीग्रही ॥ तच्चेष्टारो-
दनंनिद्रावहुमूत्रपुरीषकम् ॥ १० ॥ निमीलयति
नेत्राणिगोगंधोमधुकंधवा ॥ प्रियंगुतिलकुल्माषं
चतुःपिंडयमोदकैः ॥ ११ ॥ जपाकुसुमसंयुक्तं
मध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ धूपयेत्तिलसिद्धार्थैस्ततोमुं-
चतिसाग्रही ॥ १२ ॥ इति तृतीयमासे बालरक्षा ॥
॥ ३ ॥ चतुर्थेमासिगृह्णातिबालकंपिंगलाग्रही ॥
पयःपानारुचिःशैत्यंभजस्पंदास्यशोषणे ॥ १३ ॥
पूतिगन्धस्तुतच्चेष्टातत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ नमंत्रंनौ-
षधंतत्रबलितत्रनकारयेत् ॥ १४ ॥ इति चतुर्थ-
मासे बालरक्षा ॥ ४ ॥ पंचमेमासिगृह्णाति बालकं
रुदवाग्रही ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंकासोमुखशोषणगे-

दने ॥ १५ ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिविश्रांतोनपिबे-त्पयः ॥ ओदनंपोलिकाशाकंमत्स्यमांसानिदाप-येत् ॥१६॥ भक्ष्याणिलप्सिकाचैवस्वस्तिकाःपद्मकं तथा ॥ दक्षिणांदिशमाश्रित्यमध्याह्नेबलिमाहरेत्॥ ॥१७॥ इति पंचममासे बालरक्षा ॥ ५ ॥

भाषा—तीसरे महीनेमें गोमुखी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै, उसके लक्षण कहतेहैं. बालक बिलक बिलक रोवे. नींद बहुत आवे, वारवार मूत्रकरे, वारवार दस्त जावे ॥ १० ॥ नेत्र बंद राखे, गौके समान गंध आवे. इसका उपाय लिखतेहैं महुवाके फूल, धायके फूल, मेहँदी, तिल, वाकले, पिंडी चूर्णकी ४ मोदक, जयाके फूल इन सब द्रव्योंको एक पात्रमें रखके पूर्व कहा हुवा मंत्र २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्न समयमें जलके किनारे दक्षिण दिशामें धर आवे बालक चंगा हो. तिल राई इनोंकी बालकको धूपदे. गोमुखी देवीका दूषण दूर हो ॥ ११ ॥ १२ ॥ इति तृतीयमासरक्षा ॥ ३॥ चौथे महीनेमें बालकको पीडा उत्पन्नहो उसको पिंगलादेवी ग्रहण करतीहै इसके लक्षण कहतेहैं—स्तनपान नहीं करे, शरीर सपेद होजाय, भुजा फरके, मुख सूखा रहे ॥ १३ ॥ शरीरमें दुर्गंध आवे, इन लक्षणोंसे पिंगला देवीका दोष जानना । चतुर्थमासमें चिकित्सा मंत्र औषधी बलिदान यह वस्तु वैद्य नहीं करे ॥ १४ ॥ इति चतुर्थमासविचारः ॥ ४ ॥ पांचवें महीनेमें बालकको बडवादेवी ग्रहण करतीहै. उसके लक्षण

कहतेहैं—प्रथम अरुचिहो, खांसीहो, मुख सूखा रहे, रोवे बहुत ॥ १५॥ सब शरीरमें तकलीफ रहे, श्रमयुक्त रहे,स्तन पान नहीं करे. अब इसका उपाय कहतेहैं, भात, पूर्णपोली, शाक, मच्छीका मांस, लड्डू, लपसी, आटाके दीवे ५ ध्वजा ५ कमलके सफेद फूल,मिट्टीकी देवीकी मूर्ति बनाके सहनकमें स्थापन करके यह वस्तु उसके अगाडी रखदे पूर्वकथित मंत्र २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्न समयमे दक्षिण दिशामें बलि धर आवे, बालक चंगाहो, वडवादेवीका दोष दूरहो ॥ १६ ॥ १७ ॥ इति पंचममासबालरक्षा ॥ ५ ॥

षष्ठेमासितुगृह्णातिपद्मानामग्रहीशिशुम् ॥ तच्चेष्टारोदनंशूलंस्वरभ्रंशस्तथैवच ॥ १८॥ शिखीकुक्कुटमेषाणांमांसमापोदनंसुरा ॥ कुलित्थंचेतिसंप्रोक्तबलिनामुंचतिग्रही ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासेबालरक्षा॥६॥

सप्तमेमासिगृह्णातिबालकंपूतनाग्रही ॥ क्षीरंपिबति निसृष्टाकृशोरोदतिछर्दिवान् ॥ २० ॥ कृशराचौदनंमांसंमत्स्यंक्षीरंसुरासवः ॥ कुल्माषास्तिलचूर्णं स्रगन्धपुष्पाणिचैवहि ॥ २१ ॥ पूर्वांदिशंसमाश्रित्यमध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ अन्यत्सर्वंप्रकर्तव्यंपूर्वोक्तंतत्क्रमेणवै ॥२२॥ इति सप्तममासे बालरक्षा॥७॥

अष्टमेमासिगह्णातिबालकंचाऽर्जिकाग्रही ॥ गात्रभंगो ज्वरोक्षीरुक्प्रलापश्छर्दिरेवच ॥ २३ ॥ उत्तरांदि-

शमाश्रित्यवलिंतस्यैप्रदापयेत ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ २४ ॥

इत्यष्टममासे बालरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा–छठे महीनेमें पद्मानाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहतेहैं। प्रथम रोवे बहुत शूलहो गला बैठ जाय राल बहुत मुखमें पडे ॥ १८ ॥ अब इसका उपाय लिखते हैं, मयूरका मांस, मुर्गाका मांस, मेढेका मांस, उडदके बाकले,भात दारु,कुलथी यह सब वस्तु एक सहनकमें देवीकी मूर्तिके अगाडी रखदे मंत्रजाप स्नानविधि बलिदानविधि यह शेष कर्म प्रथम मासके क्रमसे करे ॥ १९ ॥ इति षष्ठमासरक्षा ॥ ६ ॥ सातवें महीनेमें पूतनानाम देवी बालकको ग्रहण करती है,उसके लक्षण कहते हैं. ढीलापनसे दूध पान करे स्तनपान समयमें मुखसे दुग्ध गिरे शरीर कृश होजाय दिन दिन प्रति सूखे रोवे बहुत छर्दि करे ॥ २० ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं, जलके किनारेकी मिट्टी लाके एकमूर्ति बनाके सहनकमें रखके उसके अगाडी खीचड़ी, भात,मच्छीका मांस, दूध,मदिरा, आसव, बाकले तिलकुट, सुगंधके फूल सब वस्तु उसी पात्रमें रखदे ॥ २१ ॥ पूर्व मंत्रको २१ वार जपके ७ वार बालकपर वारके मध्याह्न समयमें पूर्वदिशाकी तरफ धर आवे और सब विधान प्रथम मासकी रीतिके अनुसार करने चाहिये ॥ २२॥ इति सप्तममासबालरक्षा॥७॥आठवें महीनेमें अर्जिका नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं,सर्व शरीरमें हडफोडहो

ज्वरहो नेत्रमें पीडा हो वरडवा करे छर्दि करे ॥ २३ ॥ इसका उपाय प्रथम मासके क्रमसे सब करना चाहिये, परंतु बलिदान उत्तरदिशामें देना चाहिये और मंत्रजापस्नानादि कर्म सब प्रथममासके अनुसार करने चाहिये॥ २४॥ इत्यष्टममासबालरक्षा॥

नवमेमासिगृह्णातिबालकंकुंभकर्णिका ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंच्छर्दिर्ज्वरःपातालगन्धता ॥२५॥ कुल्मापपललक्षीरमत्स्यमांसकृतेनच॥ऐशान्यांदिशिमध्याह्नेबलिनामुंचतिग्रही ॥ २६॥ इति नवममासेबालरक्षा ॥ ९ ॥ दशमेमासिगृह्णातिबालकंतापसीग्रही ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेषोऽक्षिमीलनम् ॥ २७ ॥ पीतंरक्तंतथासूपंमत्स्यमांससुरासवम् ॥ कुल्मापंतिलपिष्टंचगंधपुष्पाणिचैवहि ॥ २८ ॥ स्वस्तिकाःपाष्टिकंभक्तंदिश्युदीच्यांसमाहरेत् ॥ मध्याह्नसमयेनूनंततोमुंचतिसाग्रही ॥ २९ ॥ इति दशममासेबालरक्षा ॥ १० ॥ मासिचैकादशेनाम्नागृह्णातिसुग्रही शिशुम्॥ तयागृहीतमात्रस्तुसस्वस्थोनप्रजायते ३० नमंत्रंनौपधंतस्यबलिंचापिनदापयेत् ॥ क्रियतेचेद्बलिस्तत्रप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासे बालरक्षा ॥ ११ ॥ द्वादशेमासिगृह्णातिबालकंत्रालिकाग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनंछर्दिःश्वासस्तृष्णापुनःपुनः ॥ ३२ ॥ दध्यन्नतिलकुल्मापमोदकान्नैर्बलिंहरेत॥मध्याह्नसमयेप्राच्यांततोमुंचतिसाग्रही ॥ ३३ ॥

क्षीरवृक्षकषायेणस्नापयेत्तत्प्रशांतये ॥ प्रथमोक्तप्र-
कारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ ३४ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे मासगृहीत-
बालरक्षा नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

भाषा—नौवें महीनेमें कुंभकर्णिका देवी बालकको ग्रहणकर-
तीहै ॥ उसके लक्षण कहते हैं. प्रथम स्तनपानमें अरुचिहो,
ज्वर हो, छर्दिहो और जमीन खोदते दफे जैसी सुगंध आती है
वैसा बालकके अंगमें गन्ध आवे आंख मीची रक्खे ॥ २५ ॥
अब इसका उपाय कहते हैं, बाकले मांस दुग्ध मत्स्यमांस इनद्र-
व्योंसहित प्रथम मासकी बलिदे, परंतु मध्याह्न समयमें ऐशान
दिशामें दे और मन्त्रजापादिक सब कर्म प्रथम मासकी रीति
माफिक करे बालक चंगा हो कुंभकर्णिका देवीका दोष दूर हो
॥ २६ ॥ इति नवममासबालरक्षा ॥ ९ ॥ दशवें महीनेमेंतापसी नाम
देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहै. हाथ पैर
देदे मारे, स्तन पीवे नहीं, नेत्र मीचे रक्खे, पेट बन्द रहे ॥ २७ ॥
अब इसका उपाय कहते हैं, चणाकी दाल, मसूरकी दाल, मछली-
कामांस, मदिरा, बाकले, तिलकुट, सुगन्धके फूल ॥ २८ ॥ आटा
के दीवे ५ सांठी चावलोंका भात यह सब वस्तु एक सहनकर्मे
मिट्टीकी देवीके आगे रखके मध्याह्नसमयमें उत्तर दिशाकी तरफ
बलिदानदे और मंत्र जाप स्नानधूप इत्यादिक कर्म प्रथम मासके
अनुसार करे बालक चंगाहो तापसीदेवीका दोष दूरहो ॥ २९ ॥
इति दशममासबालरक्षा ॥ १० ॥ ग्यारहवें महीनेमें सुभद्रानाम

ज्वरहो नेत्रमें पीडा हो बरडश करे छर्दि करे ॥ २३ ॥ इसका उपाय प्रथम मासके क्रमसे सब करना चाहिये, परंतु बलिदान उत्तरदिशामें देना चाहिये और मंत्रजापस्नानादि कर्म सब प्रथममासके अनुसार करने चाहिये ॥ २४ ॥ इत्यष्टममासबालरक्षा ॥

नवमेमासिगृह्णातिबालकंकुंभकर्णिका ॥ तच्चेष्टाऽरोचकंच्छर्दिर्ज्वरःपातालगन्धता ॥२५॥ कुल्मापपललक्षीरमत्स्यमांसकृतेनच॥ऐशान्यांदिशिमध्याह्नेबलिनामुंचतिग्रही ॥ २६॥ इति नवममासेबालरक्षा ॥ ९ ॥ दशमेमासिगृह्णातिबालकंतापसीग्रही ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेपोऽक्षिमीलनम् ॥ २७ ॥ पीतंरक्तंतथासूपंमत्स्यमांससुरासवम् ॥ कुल्मापंतिलपिष्टंचगंधपुष्पाणिचैवहि ॥२८॥ स्वस्तिकाःपायिकंभक्तंदिश्युदीच्यांसमाहरेत् ॥ मध्याह्नसमयेनूनंततोमुंचतिसाग्रही ॥ २९ ॥ इति दशममासेबालरक्षा ॥ १० ॥ मासिचैकादशेनाम्नागृह्णातिसुग्रही शिशुम् ॥ तयागृहीतमात्रस्तुसस्वस्थोनप्रजायते ३० नमंत्रंनौपधंतस्यबलिंचापिनदापयेत् ॥ क्रियतेचेद्बलिस्तत्रप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासे बालरक्षा ॥ ११ ॥ द्वादशेमासिगृह्णातिबालकंवा-(ल्मिक)ग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनंछर्दिःश्वासस्तृष्णापुनःपुनः ॥ ३२ ॥ दध्यन्नतिलकुल्मापमोदकान्नैर्बलिंहरेत्॥मध्याह्नसमयेप्राच्यांततोमुंचतिसाग्रही ॥२२ ॥

क्षीरवृक्षकषायेणस्नापयेत्तत्प्रशांतये ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणशेषमन्यत्समापयेत् ॥ ३४ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे मासगृहीतबालरक्षा नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

भाषा—नौवें महीनेमें कुंभकर्णिका देवी बालकको ग्रहणकरतीहै ॥ उसके लक्षण कहते हैं. प्रथम स्तनपानमें अरुचिहो, ज्वर हो, छर्दिहो और जमीन खोदते दफे जैसी सुगंध आती है वैसा बालकके अंगमें गन्ध आवे आंख मीची रक्खे ॥ २५ ॥ अब इसका उपाय कहते हैं, बाकले मांस दुग्ध मत्स्यमांस इनद्रव्योंसहित प्रथम मासकी बलिदे,परंतु मध्याह्न समयमें ऐशान दिशामें दे और मन्त्रजापादिक सब कर्म प्रथम मासकी रीति माफिक करे बालक चंगा हो कुंभकर्णिका देवीका दोष दूर हो ॥ २६ ॥ इति नवममासबालरक्षा ॥ ९ ॥ दशवें महीनेमें तापसी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं. हाथ पैर देदे मारे,स्तन पीवे नहीं, नेत्र मीचे रक्खे,पेट बन्द रहे ॥ २७ ॥ अब इसका उपाय कहते हैं,चणाकी दाल,मसूरकी दाल,मछलीकामांस,मदिरा,बाकले,तिलकुट, सुगन्धके फूल ॥ २८ ॥ आटा के दीवे ५ सांठी चावलोंका भात यह सब वस्तु एक सहनकमें मिट्टीकी देवीके आगे रखके मध्याह्नसमयमें उत्तर दिशाकी तरफ बलिदानदे और मंत्र जाप स्नानधूप इत्यादिक कर्म प्रथम मासके अनुसार करे बालक चंगाहो तापसीदेवीका दोष दूरहो ॥ २९ ॥ इति दशममासबालरक्षा ॥ १० ॥ ग्यारहवें महीनेमें सुग्रहीनाम

देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसका ग्रहण किया बालकअच्छा नहीं होता है॥ ३० ॥ नतो उस बालककी औषधी है न मंत्रहै न बलिदानहै कदाचित् बलिदान देनाही हो तो प्रथममासके क्रमसे करदे॥ ३१ ॥ इत्येकादशमासबालरक्षा॥ ११ ॥ बारहवें महीनेमें बालिका नाम देवी ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहते हैं. रोवे बहुत, छर्दिकरे, श्वासहो, प्यास बारबार लगे॥ ३२॥ इसका उपाय लिखते हैं—दही, चावल, पके, तिल,बाकले, लड्डू यह सब वस्तु मिट्टीकी देवीकी मूर्तिके अगाड़ी पात्रमें रखके मध्याह्नसमयमें पूर्वदिशामें धर आवे ॥ ३३॥ दूधवाले वृक्षोंके वक्कलको उबालके बालककोस्नान करावे और बाकी सबमन्त्र-जपादिक कर्म प्रथम मासके माफिक करे बालक चंगाहो बालिका देवीका दोष दूर हो ॥ ३४ ॥

इति श्रीपंडितनन्दकुमारकृतबालतंत्रभाषाटीकायामष्टमःपटलः ॥ ८ ॥

अथवर्षेगृहीतस्यबालकस्यविमुक्तये ॥ बलिंवक्ष्याभिसुगमंयेनसंपद्यतेसुखम् ॥ १ ॥ प्रथमेवत्सरे बालंग्रहीनन्दा तिनंदिनी ॥ अरोचकाक्षिविक्षेपगात्रदाहप्ररोदनम् ॥ २ ॥ पतनंचसदाभूमौचेष्टितंतंत्रलक्षयेत् ॥ गुडान्नंदधिकुल्माषपोलिकामत्स्यकासवम् ॥ ३ ॥ तिलचूर्णामिषंचैवतिलतैलेन दीपकम्॥पूर्वांदिशंसमाश्रित्यत्रिरात्रंबलिमाहरेत् ॥४॥

केशगोखुरगोदन्तैर्बालकंधूपयेत्ततः ॥
स्नापयेत्पंचगव्येनतदासामुंचतिग्रही ॥ ५ ॥
इति प्रथमवर्षे बालरक्षा ॥ १ ॥

भाषा—महीनेकी रक्षाविधि कहनेके अनंतर वर्षमें गृहीत हुए बालकके छुटानेके वास्ते सुगम उपाय कहतेहैं जिससे बालकको सुखप्राप्ति हो ॥ १ ॥ पहिले वर्षके विषय नंदिनी-नामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं, अरुचिहो, नेत्र बंदरक्खे, शरीरमें दाह हो, जलाकरे, रोवे बहुत ॥ २ ॥ सदा पृथ्वीमें पडारहे अर्थात् शय्या गोदीमें नहीं ठहरे ऐसे लक्षण देखके नंदिनी नाम देवीका दोष कहना । अब इसका उपाय कहतेहैं—गुडके मालपूडे, दही, उडदके बाकले, पूर्णपोली, मदिरा ॥ ३ ॥ तिलकुट, मांस, तिलोंके तेलके दीपक ५, ध्वजा पंचरंगकी ५ यह सब वस्तु एक पात्रमें रखके ॐ नमो भगवते रावणाय बालकं मुंच मुंच स्वाहा, इस मंत्रको २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें धर आवे तीन रात्रि पर्य्यंत बलिदान दे ॥ १ ॥ पीछे मनुष्यके शिरके बाल, गौका खुर, गौका दांत इनोंकी धूप बालकको दे पश्चात् पंचगव्यसे बालकको स्नान करावे फिर ब्राह्मणोंको भोजन करावे ऐसे करनेसे नंदिनी देवी बालकको छोड देतीहै बालक चंगाहोताहै ॥ ५ ॥ इति प्रथमवर्षेबालरक्षा ॥ १ ॥

द्वितीयेवत्सरेबालंग्रहीगह्णातिरोदिनी ॥ रक्तमूत्रं ज्वराध्मानंपद्मकेशरवर्णता ॥ ६ ॥ स्फुरतेदक्षि-

णंहस्तंरोदनंचपुनःपुनः ॥ तिलपूपककुलमापगु-
डान्नदधिमोदकैः ॥ ७ ॥ सफलंसप्रतिच्छादंप्राच्यां
दिशिबलिंहरेत् ॥ धूपयेत्सर्पनिर्मोकगजीभ्यांमुं-
चतिग्रही ॥ ८ ॥ इति द्वितीयवर्षे बालकरक्षा ॥
॥ २ ॥ तृतीयेवत्सरेबालंगृह्णातिधनदाग्रही॥ अवी-
क्षणमनाहारंज्वरःशोषांगसादने ॥ ९ ॥ स्फुरणं
वामपादस्यच्छर्दनंतत्रचेष्टितम् ॥ दधिमांससुराम-
त्स्यसत्तान्नतिलपिष्टकैः ॥ १० ॥ प्रतिमयाफले-
र्दीपैःसहोदीच्यांबलिंहरेत् ॥ पिच्छैर्मयूरसंभूतेर्धू-
पितोमुंचतिग्रही ॥ ११ ॥ इतितृतीयवर्षे बाल-
रक्षा ॥ ३ ॥ चतुर्थे वत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिचंचला ॥
चेष्टितंतत्रविज्ञेयंज्वरःश्वासांगसादने ॥ १२॥ तिल-
कृष्णान्नवासोभिःसार्द्धंतत्रबलिंहरेत् ॥ मेषशृंगस्य
धूपेनततोमुंचतिसाग्रही ॥ १३ ॥

इति चतुर्थवर्षे बालरक्षा ॥ ४ ॥

भाषा—दूसरे वर्षमें रोदिनी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं—लाल पेशाब आवे ज्वर हो अफराहो कमलकी केसरके माफिक शरीरका वर्ण होजावे ॥ ६ ॥ दहना हाथफेरके बारबार रोवे अब इनका उपाय कहतेहैं—तिल, पूडे, चाकले, गुडका भात,दही, लड्डू ॥ ७ ॥ फल किसीरकमका, यह सब वस्तु एक सहनकमें रखके ऊपर लाल कपडा ढकके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके

ऊपर वारके पूर्वदिशामें बलि धर आवे और सांपकी कांचली राई इन्होंकी धूप बालकको दे और सब कर्म पहिले वर्षकी माफिक करे बालक चंगाहो रोदिनी देवीका दोष दूर हो ॥ ८ ॥ इति द्वितीयवर्षबालरक्षा ॥ २ ॥ तीसरे वर्षमे धनदानाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं. समीप नहीं देखे, भोजन नहीं करे, ज्वरहो, कंठशोषहो, शरीरमें तकलीफहो ॥ ९ ॥ वामा पैर फरके छर्दिकरे इन लक्षणोंसे धनदादेवीका दोष जानिये इसका उपाय कहतेहैं—दही, मांस, मदिरा, मच्छी, सातनाज, तिलकुट ॥ १०॥ मिट्टीकी मूर्ति, फल दीपक ५, ध्वजा ५, यह सब वस्तु सहनकमें रखके २१ बार मंत्रपढके ७ बार बालकपर वारके उत्तर दिशाकी तरफ बलि धर आवे और मोरके पंखोंकी धूप देवे और कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ ११ ॥ इति तृतीयवर्षे बालरक्षा ॥ ३ ॥ चौथे वर्षमें चंचलादेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहै— ज्वरहो, श्वासहो, अंग भडके, अचैनीरहै, आंख भारीरहै,रोवे बहुत ॥ १२ ॥ इसका उपाय कहतेहैं—तिल काले, गुड, पूडे चावल उडद, पोली, दीप ५, ध्वजा ५,राई सिरसम, मिट्टीकी पीढी यह सर्व वस्तु एक पात्रमें धरके काले कपडेसे ढकके बलि पूर्व दिशामें धर आवे बलि दिन ३ तक करे । मेंढाके सींगकीबालकको धूपदे और अन्य कर्म प्रथम वर्षके माफिक करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १३ ॥

इति चतुर्थवर्षे बालरक्षा ॥ ४ ॥

पंचमेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिनर्तकी ॥ उद्वेजनंमुहुर्मू-
त्रंगात्रस्फुरणसादनम् ॥ १४ ॥ मुखशोषणवैवर्ण्यं
चेष्टितंतत्रलक्षयेत् ॥ मत्स्यमूलकमांसानिपक्वान्नंकृ
शरापयः ॥ १५ ॥ पायसंचसुरामद्यंतिलंचांकबलिं
तथा ॥ सफलंसप्रतिच्छन्नंसप्तरात्रंबलिंहरेत् ॥ १६ ॥
राजिकाकेशगोदंतलशुनैरपिधूपयेत् ॥ त्रिसंध्यंसंनि-
धानेनततोमुंचतिसाग्रही ॥ १७ ॥ इतिपंचमवर्षे
बालकरक्षा ॥ ५ ॥ षष्ठेचवत्सरेबालंगृह्णातियमुना
ग्रही ॥ तच्चेष्टारोदनोद्गारजृंभाशोषांगदाहकम् ॥
॥ १८ ॥ मत्स्यमांससक्तुशरपोलिकापायसंदधि ॥
सुरामोदकसंमिश्रंप्रक्षिपेच्चत्वरेबलिम् ॥ १९ ॥ गोरो-
मखुरशृंगैश्चधूपयेन्मुंचतिग्रही ॥ स्नानंपंचदलैःकार्यं
सुखंभवतिनान्यथा ॥ २० ॥

इति षष्ठवर्षे बालरक्षा ॥ ६ ॥

भाषा—पांचवें वर्षमें नर्तकीनाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं, कूल्हे बहुत बारबार मूत्र करे गात्र फरके गात्रमें पीडा रहे अर्थात् अचैनी रहे ॥ १४ ॥ मुख सूखारहे शरीरका वर्ण विवर्ण हो जावे यह लक्षण देखके नर्तकी देवीका दोष जानना। अब इसका, उपाय लिखतेहैं मिट्टीकी नर्तकी देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी यह वस्तु रक्खे. मच्छी, मूली, मांस, पक्वान्न, खिचडी, दूध ॥ १५ ॥ खीर, वारुणी मदिरा, तिल और प्रथम

बलिमें लिखी हुई वस्तु, आटाके दीवे ५, ध्वजा पंचरंगी ५ शर्बतकी कुल्हिया,पुडे बालके यह सब वस्तु उसी पात्रमें रक्खे फलभी कुछ रखदेने चाहिये और लाल कपडासे ढकके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशाकी तरफ धर आवे यह उतारा दिन७ ताई करे ॥ १६ ॥ राई, मनुष्यके शिरके बाल, गौके दांत,लहसन इनोंकी धूप बालकको ३वक्त दिया करे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ १७॥ इति पञ्चमवर्षेबालरक्षा॥५॥छठवें यमुना देवी बालकको ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहते हैं-रोवे बहुत,डकार बहुत आवे जँभाई आवें, शरीर सूखता जाय, पेट बंध रहे, अंगमें दाह रहे ॥१८॥ अब इसका उपायलिखतेहैं मिट्टीकी या आटाकी यमुना देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी मच्छी का मांस, खिचडी,पूरणपोली,खीर,दही,मदिरा,लड्डू,पांच दीपक ५ ध्वजा यह सब रखदे फिर२१बार मंत्रपढके ७ बार बालकके ऊपर वारके चुराहामें बलि संध्यासमय धर आवे ऐसे ३ दिनतक करे ॥ १९ ॥गौके रोम खुर सींग इनकी बालकको धूपदेऔर पांचवृक्षोंके पत्तोंकरके बालकको स्नान करावे ब्राह्मणभोजनकरावे बालक चंगा हो यमुना देवीका दोष दूर हो ॥ २० ॥ इति पष्ठवर्षे बालरक्षा ॥ ६ ॥

सप्तमेवत्सरेऽनंताग्रहीगृह्णातिबालकम् ॥ तयागृहीतमात्रेणत्वंधीभवतिबालकः॥ २१ ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिमुखंचपरिशुष्यति ॥ मूत्रंचस्रवतेनित्यमुद्रेगंच

पुनःपुनः ॥ २२ ॥ पायसंकृशरान्नंचतिलपिष्टंसुरासवम् ॥ पक्वान्नमत्स्यमांसानिदधिमूलंचकंदकम् ॥ २३ ॥ सिद्धार्थलशुनैर्धूपंतिलतैलेनदीपकम् ॥ स्नापनंपंचगव्येनसप्तरात्रंबलिंहरेत् ॥ २४ ॥ इति सप्तमवर्षेबालरक्षा ॥ ७ ॥ अष्टमेवत्सरेबालंगृह्णातिचकुमारिका ॥ तयागृहीतमात्रस्तुज्वरेणपरिदह्यते ॥ २५ ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिकंपयंति पुनःपुनः ॥ कृशराचोदनंचैवगंधमाल्यंतथैवच ॥ २६ ॥ मेषशृंगस्यधूपोऽत्रपूर्वस्यांदिशिचाहरेत् ॥ अयंसिद्धबलिःप्रोक्तोबालकानां सुखावहः ॥ २७ ॥

इत्यष्टमवर्षे बालरक्षा ॥ ८ ॥

भाषा—सातवेंवर्षमें अनन्ता नाम देवीबालकको ग्रहणकरतीहै उसको ग्रहणकरनेहीसे तत्काल बालक अन्धा होजाताहै ॥ २१ ॥ सर्वशरीरमें पीडा हो और दुबला होजावे मुख सूखा रहे पेशाब बहुत आवे, चित्तको उद्वेग रहै. आलस्य हो अंग तोडे ॥ २२ ॥ अब उपाय लिखतेहैं, चूनकी या मिट्टीकीदेवीकीमूर्ति बनाके, सहनकमें रक्खे उसके अगाडी खीर, खिचड़ी, भात, तिलकूट, मदिरा, पक्वान्न मत्स्यमांस, दही, मूली, किसी रकमका कंद, जौका आटाके ५, दीपक ५ ध्वजा यह सब वस्तु उसीपात्रमें रखके २१ बार मंत्र पढके ७ बार बालकपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ़ जलके किनारे धर आवे ॥ २३ ॥ राई तथा लहसनकी बालकको धूपदे और बलिमें तिलोंके तेलका दीपक जलाना चहिये और पंच

गव्यसे बालकको स्नान करावे बलिविधान किये पीछे ब्राह्मण-भोजन करावे ऐसे बलिविधान ७ दिनतक करना चाहिये बालक चंगाहो अनंतादेवीका दूषण दूर हो ॥ २४ ॥ इति सप्तमवर्षे बालरक्षा ॥ ७ ॥ आठवें वर्षमें कुमारिका नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उस करके ग्रहणहुए बालकके प्रथम ज्वर बहुत वेगसे होय ॥२५ ॥ सर्व गात्रमें पीडा हों, कंपे, बारबार छर्द करे, पेट बंद रहै यह लक्षणहो । अब इसका उपाय कहतेहैं आटाकी या नदीके किनारेकी मट्टीकी मूर्ति देवी-की बनाके सहनकमें रखके उसके अगाडी खिचडी, चावल,दही, सुगंधके फल, पुडी पापडी, पूर्णपोली, पक्वान्न, ध्वजा ५,दीपक ५ यह सब वस्तु इसके अगाडी रखके २१ वार मंत्र पढके, ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें बलि रख आवे यह बलिविधान ३ दिन तक करना चाहिये ॥२६ ॥ मेढासींगी-की बालकको धूप देनी चाहिये पीछे स्नान और ब्रह्मभोज्य करावे बालक चंगाहो कुमारिकादेवीका दोष दूर होय ॥ २७॥ इत्यष्टमवर्षे बालरक्षा ॥ ८ ॥

गृह्णातिनवमेवर्षेकलहंसाग्रहीशिशुम् ॥ तयागृहीत-मात्रेणस्याद्दाहोज्वरताकृशः ॥ २८ ॥ पोलिकापूप-दध्यन्नैःपंचरात्रिबलिंहरेत् ॥ कुष्ठोग्रारालिलशुनै-र्लेपयेदपिधूपयेत् ॥ २९ ॥ स्नापयेन्निंबक्काथेन बालंमुंचतिसाग्रही ॥ इतिनवमवर्षेबालरक्षा ॥ ९ ॥ गृह्णातिदशमेवर्षेदेवदूतीग्रहीशिशुम्॥तच्चेष्टातत्रजात-

व्यानर्त्तनंचप्रधावनम् ॥ ३० ॥ विवर्द्धनमनंक्रीडाहसनंस्वगृहेक्षणम् ॥ यामियामीतिवचनंनेत्ररोगोऽगसादनम् ॥ ३१ ॥ सदापानासनश्रद्धाविधुरालापनंतथा ॥ कोद्रवौदनकुल्मापापोलिकादधिमोदकम् ॥ ३२ ॥ प्रणवंमुंचमुंचेतिवियोजयवियोजय ॥ आगच्छद्वितयंबालिकेस्वाहेतिप्रकीर्तितः ॥ ३३ ॥ रक्तान्नरक्तपुष्पेश्चत्रिरात्रंबलिमाहरेत् ॥ तिलैश्चजुहुयात्पश्चादष्टोत्तरशतंसुधीः ॥ ३४ ॥

इति दशमवर्षेबालरक्षा ॥ १० ॥

भाषा—नौवें वर्षमें कलहंसा नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके ग्रहण करनेसेप्रथम बालकके दाहहो ज्वरहो दुबला होजावे अंगमें पीडाहो दस्त मूत्र वारंवार आवे छर्दीकरे हाथपैर भडके ॥२८॥ अब इसका उपायकहतेहैं-पुर्णपोली, पूडे, दही, भात, चुरमाकी पींडी, खीर, बडे, सुहाली, दीवे ५ ध्वजा ५यह सब वस्तु एक पात्रमें मिट्टीकी देवीके अगाडी रखके २१ वार मंत्र पढके७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशामें जलके किनारे धर आवे, पांचदिनतक यह बलिदान करना चाहिये और कूट, वच, राई, लहसन इन करके बालकके शरीरको लेपन करे और इन्होंहीकी धूप देनी चाहिये ॥ २९ ॥ नींबके पत्तोंके काथसे बालकको स्नान करावे बालक चंगा हो कलहंसा देवीका दोष शांत हो ॥ इति नवमवर्षे बालरक्षा ॥ ९ ॥ दशवें वर्षमें देवदूती नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै, उसके लक्षण कहतेहैं

बालक नाचे दौड़े ॥ ३० ॥ पेट बंदहो वमन करे अनेकर-कमकी क्रीडाकरे, हँसे,अपने घरको देखाकरे,जाऊँ जाऊं ऐसा वचन कहे, नेत्रोंमें रोगहो, अंगमें पीडाहो ॥ ३१ ॥ सदा खान पानमें श्रद्धा रक्खे विकलताके वचन कहे ज्वरहो । अब इसका उपाय कहतेहैं, काली मिट्टीकी मूर्ति देवीकी बनाके सहनकमें रखके कूट, अन्न,भात,बाकले,पूर्णपोली दही लड्डू मसूरकी दाल, लालफूल, दीपक ५ ध्वजा, ५, तिलकुट, यह सब वस्तु उसके अगाडी रक्खे ॥ ३२ ॥ फिर ॐ मुंच मुंच वियोजय वियोजय आगच्छ आगच्छ बालिके स्वाहा ॥ इस मंत्रको २१ वारपढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशामें जलके किनारे धरआवे यह विधान ३ दिन करै. चौथे दिन बालकको स्नान करावे. तिलोंका हवन करावे १०८ आहुति देनी चाहिये,बालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

इति दशमवर्षे बालकरक्षा ॥ १० ॥

वर्षेएकादशेबालंग्रहीगृह्णातिकालिका ॥ तयागृही-तमात्रेणज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ ३५ ॥ कासश्वा-साक्षिरोगश्चकाकरावोंगसादनम् ॥ पोलिकागुडकु-ल्माषशष्कुलीशाकमोदकैः ॥ ३६ ॥ पक्वमत्स्या-मिषक्षीरैःसंयुक्तंबलिमाहरेत् ॥ त्रिरात्रंनिवसिद्धार्थै-र्धूपयेन्मुंचतिग्रही ॥ ३७ ॥ अनुक्तमपियत्कर्म्म प्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ सर्वंविधिविदाकार्यंतेनसंपद्य-तेसुखम् ॥ ३८ ॥ इत्येकादशवर्षेबालरक्षा ॥ ११ ॥

द्वादशेवत्सरेबालंगृह्णातिवायसीग्रही ॥ तच्चेष्टाव-
क्रसंशोषोज्वरोजृंभांगसादनम् ॥ ३९ ॥ रक्तद्र-
व्यैर्बलिंतत्रहरेन्मुंचतिसाग्रही ॥ स्नापनंपंचगव्येन
धूपोनिंबेनसर्षपैः ॥ ४० ॥ इति द्वादशवर्षेबाल-
रक्षा ॥ १२ ॥वर्षेत्रयोदशेबालंग्रहीगृह्णातियक्षिणी ॥
तच्चेष्टयाचह्रद्रोगंज्वररोदनहासनम्॥ ४१ ॥शाल्यो-
दनसुरामांसमत्स्यकुल्माषपायसैः ॥ दद्यात्स-
कृशरंप्रोक्तैर्मध्याह्नेबलिमाहरेत् ॥ ४२ ॥

इति त्रयोदशवर्षे बालरक्षा॥ १३ ॥

भाषा–ग्यारहवें वर्षमें कालिकानामदेवी बालकको ग्रहण करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं-प्रथम बालकको ज्वरहो ॥ ३५ ॥ खांसीहो, श्वासहो, नेत्रदूखे, कांकां शब्दकरे, रोवे बहुत, अंगमें पीडाहो अर्थात् अंगको बहुत तोडे ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, पूर्णपोली,गुड़, उरदके,बाकले,कचोरी, किनीरकमका शाक, लड्डू ॥ ३६॥ पूड़ी,लपसी,पकाहुवा मच्छीका मांस, दूध, चावल,दीपक५ध्वजा५यह सबवस्तु एकसहनकमें रखके२१वार मंत्र पढके ७वार बालकके ऊपर वारके पूर्वदिशाकी तरफ वृक्षके तले धर आवे और नीबके पत्ते राई इनकी बालकको धूप देनी चाहिये यह बलिविधान तीनदिनतक करना चाहिये॥ ३७॥और तीन दिन पीछे स्नानकर्म ब्रह्मभोज पूर्वोक्त प्रकारसे सब कर्म करावे. कालिका देवीका दोष शांतहो बालक चंगाहो॥ ३८॥ इत्येकदशवर्षेबालरक्षा॥११॥ बारहवें वर्षमें वायसीनाम देवी

बालकको ग्रहण करतीहै, जिसके लक्षण कहतेहैं,बालकका मुख सूखा रहे ज्वर हो जँभाई बहुत आवे, अंगमें पीडाहो ॥ ३९॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, नदीके किनारेकी मट्टी लायके देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाड़ी गुड, पूडी, लपसी,बाकले,तिलकूट, लडूं, राखकी पिंडी,सरसम,राई, दीवे ५, ध्वजा ५ यह सब वस्तु धरके २१ वार मंत्र पढके ७वार बालकके ऊपर वारके दक्षण दिशामें वृक्षतले संध्या-समय धर आवे, तीन दिन पर्य्यंत बलि देवे;चौथे दिन पंचगव्यसे बालकको स्नान करावे, नींबके पत्ते सरसम इनोंकी धूप बालकको देनी चाहिये ब्राह्मणोंको भोजन करावे वायसी देवीका दोष शांतहो बालक चंगाहो ॥ ४०॥ इति द्वादशवर्षे बाल-रक्षा ॥१२॥ तेरहवां वर्षमें यक्षिणी नाम देवी बालकको ग्रहण करतीहै, अब उसके लक्षण कहतेहैं, प्रथम बालकके हृद्रोगहो, ज्वरहो, रोवे बहुत, किसी वखत हँसने लगे ॥ ४१ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं, आटाकी मूर्ति देवीकी बनाके एक सहनकमें धरके उसके अगाड़ी भात पकाहुवा,शर्वतकी कुल्हिया, मदिरा, मांस,मच्छी,बाकली,खीर,खिचडी,धूप,दीपक५, ध्वजा५, फूल यह सब वस्तु उसी सहनकमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमय पश्चिमदिशामें वृक्षके तले धर आवे दिन ३ तक बलिकरे पीछे बालकको स्नान ब्रह्मभोज पूर्वोक्तक्रमसे करावे बालकचंगाहो यक्षिणीदेवीका दोषदूरहो४२

इति त्रयोदशवर्षे बालरक्षा ॥ १३ ॥

वर्षेचतुर्दशेबालंस्वच्छंदानामतोग्रही ॥ गृह्णातिचेत्तुतत्रस्याच्छोणितस्त्रवणंसदा ॥ ४३ ॥शूलंचनाभिदेशे स्यात्तत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ श्रमस्तुव्यर्थतांयातितस्मात्तत्रनकारयेत् ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षेबालरक्षा ॥ १४ ॥ अथ पंचदशेवर्षेगृह्णीतेबालकंकपी ॥ तयाग्रहीतमात्रस्तुभूम्यांपततिनिःस्वनः ॥४५॥ ज्वरश्चजायतेतीव्रोनिद्रात्यंतंप्रजायते ॥ पायसंकृशरामांसंकुल्माषंचसुरासवम् ॥ ४६ ॥ पूपकाः पोलिकाश्चैवपुष्पाणिपांडुराणिच ॥ स्नापनं पंचगव्येनधूपनंवत्सकत्वचा ॥ ४७॥ दिनत्रयंप्रदोषेतुबलिंदद्याद्विचक्षणः ॥ सुखंभवतितेनाशुनात्रकार्याविचारणा ॥४८॥इतिपंचदशवर्षेबालरक्षा॥१५॥

भाषा-चौदहवें वर्षमें स्वच्छंदा नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालकके मुखसे नासिकासे खून पडे, ज्वरहो ॥ ४ ३ ॥ नाभिमें शूल हो, तृषा लगे, वमन करे इस वर्षमें चिकित्सा श्रम और बलि विधानका परिश्रम सर्व निष्फल होजाता है इसवास्ते कुछ करना नहीं चाहिये अग्रे देवेच्छा बलीयसीति ॥ ४४ ॥ इति चतुर्दशवर्षे बालरक्षा ॥ १४ ॥ पंद्रहवें वर्षमें बालकको कपीनाम देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं-बालक पृथ्वीमें सोनेकी बहुत इच्छा करे, कूल्हे बहुत या बिलकूल कूल्हे नहीं ॥ ४५ ॥ ज्वर बड़ा तेजहो, निद्रा बहुत आवे,वमनहो, अंग कंपे,चित्तभ्रमहो। अब इसका उ-

पाय लिखते हैं नदीके पूर्व पश्चिमकेतरफकी मट्टी लाके देवीकी मूर्ति बनाके एक सहनकमें रखके उसके अगाडी एक सराई खीरकी रक्खे खिचडी, मांस, बाकले, मदिरा, आसव ॥ ४६ ॥ पूडे, पूर्णपोली, सिरसम, सफेद फूल, दीपक ५, ध्वजा ५ यह सब उसी पात्रमें रखके मंत्र २१ वार पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके प्रदोषके वखत वृक्षतले धर आवे बालकको चौथे दिन पंचगव्यसे स्नानकरावे कूडालकीछाल, दालचीनी इनकी बालकको धूप देवे ॥ ४७॥ यह बलिविधान दिन ३ तीनतक देना चाहिये जिस्से देवीका दोष शांतहो बालक चंगा हो ॥ ४८॥ इति पंचदशवर्षे बालरक्षा ॥ १५ ॥

षोडशेवत्सरेबालंग्रहीगृह्णातिदुर्जया ॥ तयाछर्दिर्ज्वरःकंपोयास्यामीतिवचोवदेत् ॥ ४९ ॥कुलमापकृशरापूपतिलपिष्टान्नदीपकैः ॥ दध्नासहवलिंदद्यात्प्राच्यांदिशिदिनत्रयम् ॥ ५० ॥ धूपयेद्गोनखशृंगलशुनैर्मुंचतिग्रही ॥ स्नापयेत्पंचगव्येनतिलतोयेन बालकम् ॥५१॥इति षोडशवर्षबालग्रहरक्षा ॥१६॥

इतिकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रेवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाकथनं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

भाषा—सोलहवें वर्षमें दुर्जया नाम देवी बालकको ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम बालक वमन करे ज्वर हो शरीर कंपे नींद आवे मुखसे जाऊंजाऊं ऐसा वचन कहे॥४९॥ इसका उपाय लिखते हैं बाकले,खिचडी,पूडे,तिलकूट, कचोरी,

दही, सीरापुरी, दीपक ५ ध्वजा ५ पांचरंगकी यह सब एक सह-नकमें धरके २१ वार पूर्वोक्त मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पूर्व दिशामें वृक्षके तले संध्यासमय धर आवे ऐसे तीन३ दिनतक यह बलिविधान करना चाहिये ॥ ५० ॥ चौथे दिन बालकको गौका खुर और सींगकी धूप देना चाहिये फिर पंच-गव्यसे स्नानकराके पीछे पानीमें तिल गेरके शुद्ध स्नान करावे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकको नवीन वस्त्र पहरावे देवीका दोष शान्तहो बालक चंगा हो ॥ ५१ ॥ इति षोडश-वर्षे बालरक्षा ॥ १६ ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां नवमः पटलः॥९॥

दिनेमासेचवर्षेचबालशांतिंवदाम्यहम् ॥ प्रथमेदि-वसेमासेवर्षेयोगिनिमातृका ॥ १ ॥ पूतनानंदि-नीनाम्नाबालकंक्रमतेयदा ॥ तद्गृहीतस्यबालस्य ज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ २ ॥ गात्रशोषस्तथास्वे-दोनाहारेच्छाभृशंभवेत् ॥ छर्दिमूर्च्छाचकंपश्चत-थादीनस्वरोभवेत् ॥ ३ ॥ विधानंतत्प्रवक्ष्यामि येनमुंचतिपूतना ॥ नदीमृत्तिकयाकुर्याच्छोभनां पुत्तिकांततः ॥ ४ ॥ शुक्लौदनंशुक्लगंधंतथागंधा-नुलेपनम् ॥ शुक्लपुष्पाणिवेपञ्चध्वजाःपंचप्रदीप-काः ॥ ५ ॥ स्वस्तिकाःपंचपूर्वाह्णेपूर्वस्यांदिशि संयतः ॥ बलिंदद्याद्यथोराजसर्षपोशीरमेवच ॥ ६ ॥ शिवनिर्माल्यमार्जारनृकेशान्निंबपत्रकम् ॥ गव्यंघृतंतथैतेनधूपयेच्चैवबालकम् ॥ ७ ॥ एव

दिनत्रयंकृत्वाचतुर्थेशांतिवारिणा ॥ स्नापयेद्बाल-कंपश्चाद्ब्राह्मणांश्चापिभिक्षुकान् ॥ ८ ॥ क्षीरेण भोजयेदेवंस्वस्थोभवतिबालकः ॥ वक्ष्यमाणेनमंत्रेण अष्टोत्तरशतंजपेत् ॥ ९ ॥ शांतिवारितुतत्प्रोक्तं सर्वागमविशारदैः ॥ पूजायांबलिदानेचस्नापनेमं-त्रमुच्यते ॥ १० ॥ मन्त्रः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च स्कंदोवैश्रवणस्तथा ॥ रक्षंतुत्वारितंबालंमुंचमुंच कुमारकम् ॥ ११ ॥

इति प्रथमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः॥ १ ॥

भाषा—अब दिवसमें,मासमें वर्षमें ग्रहण हुए बालककी शांति कहतेहैं ।। प्रथम दिवसमें प्रथम मासमें प्रथम वर्षमें बाल-कके कष्ट होजावे तो उस बालकको नंदिनी नाम करके देवी ग्रहण करतीहै उसके योगिनी मातृका पूतना यह पर्य्यायशब्द हैं अब उसके लक्षण कहतेहै प्रथम ज्वरहो ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ गात्र सूखे,पसीना आवे, भोजनकी इच्छा बिलकुल होवे नहीं छर्दी करे,मूर्छा हो,शरीर कंपे, मन्दस्वर होजावे ॥ ३ ॥ अब उसका उपाय कहतेहैं जिस्से पूतना उसको छोडदे.नदीके दोनों किनारोंकी मट्टी लाके सुंदर देवीकी मूर्ति बनाके ॥ ४ ॥ एक सहनकमें रखके उसके अगाडी सफेदभात कपूर लोहबान सफेद चन्दन सफेदफूल पंचरंगकी ५ध्वजा५ दीपक ॥ ५ ॥ पाँच ५ चूनकेशथिए पूडा सुहाली पांच रकमकी मिठाई यह सब वस्तु उसी सहनकमें रखके अगाडी लिखा मंत्र २१ वार पढके

७ वार बालकके ऊपर वारके पहरभरदिन चढे पूर्वदिशामें मौन धारण करके,वलि दे आवे.पीछे राई,खस॥ ६॥ आकके फूल बिल्लीके बाल, मनुष्यके शिरके बाल,नींबके पत्ते, गौका घी,इन द्रव्योंसे बालकको धूनी देनी चाहिये ॥ ७ ॥ ऐसे तीन दिन पर्य्यंत कर्म करे चौथे दिन मंत्रसे मंत्रित जल करके बालकको स्नान करावे और ब्राह्मणोंको भिक्षुकोंको ॥ ८ ॥ खीरका भोजन करावे ऐसा करनेमे बालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो अगाडी कहाहुवा मन्त्र एकसौ आठ १०८ वार जपके जलको मंत्रितकरे उसको शांतिवारि पंडित कहतेहैं पूजामें बलिदानमें स्नान करानेमें इसी मन्त्रको पढना चाहिये सो कहतेहैं ॥९॥ ॥ १० ॥ "ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कंदो वैश्रवणस्तथा ॥ रक्षंतु त्वरितं बालं मुंचमुंच कुमारकम्" ॥११ ॥ अयं मंत्रः ॥

इतिप्रथमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः॥ १॥

द्वितीयेदिवसेमासेहायनेचसुनंदनी ॥ गृह्णातिपूतनाबालंयोगिनीस्तनदाऽपिवा ॥ ३२ ॥ ततोभवेज्ज्वरःपूर्वंसंकोचंहस्तपादयोः ॥ दंतान्खादति नियतंनिमीलयतिचक्षुषी ॥ १३ ॥ आहारंचन गृह्णातिदिवारात्रंचरोदिति ॥ अक्षिरोगंछर्दनेचभवेद्भ्राति पुनःपुनः ॥ कृशत्वंजायतेत्यंतंचिह्नमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ १४ ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्मायाथपुत्तिकाम् ॥ अन्नंदशध्वजादीपाः स्वस्तिकाधावलौदनम् ॥ १५ ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनसिद्धापूपा-

श्रमत्स्यकाः ॥ मांसंचेत्येतदखिलंपश्चिमायांदिशिक्षिपेत् ॥ १६ ॥ पश्चिमायांचसंध्यायामेवंद्याद्दिनत्रयम् ॥ धूपंमंत्रजपंस्नानंपूर्वोक्तेनक्रमेणवै ॥ १७ ॥ प्रणवोहृदयंचामुंडायैविच्चेततःपरम् ॥ ततोह्रांद्वितयंह्रींचह्रूंह्रूंदुष्टग्रहावदेत् ॥ १८ ॥ ततो गच्छन्त्वतःस्थानाद्रुद्राज्ञयाऽनलांगना ॥ सर्वकार्येषुमंत्रोऽयंसुखदःसमुदाहृतः ॥ १९ ॥

इति द्वितीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ २ ॥

भाषा—दूसरे दिवसमें दूसरे महीनेमें दूसरे वर्षमें बालकके कष्टहो उसको सुनन्दनानामकरके पूतना ग्रहण करतीहै उसको योगिनीभी कहतेहैं वह स्तनका नाश करनेवाली होतीहै ॥ ॥ १२ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं-प्रथम बालकके ज्वर हो, हाथ पैरको संकोच रक्खे दांतोंको बहुत चाबाकरे नेत्रोंको मीचे नहीं॥ १३॥भोजन किसीतरहका नहींकरे,दिन रात्रि रोया करे, नेत्रमें रोगहो, वमनकरे और भय वारंवार लगे,शरीर दुबला बहुत होजावे॥ १४॥अब इसका उपाय कहतेहैं-सेरभर चावलके चूर्णकी मूर्ति बनाके उसको मिट्टीकी सहनकमें रखके उसके अगाड़ी गेहूं दश१०ध्वजा १० दीपक और१०चूनके शथिए चावल पकेहुए ॥ १५ ॥ सेरभर पूडे मच्छी मांस यह संपूर्ण वस्तु उसी पात्रमें रखके ॥ १६ ॥ संध्यासमयमें २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ बलि दे आवे ऐसे तीन रोज करना चाहिये धूप मंत्रका जप

स्नान यह सब वस्तु पूर्वक्रमके अनुसार करना चाहिये ॥ १७ ॥ ॐनमश्चामुंडायै विच्चेह्रांह्रींह्रूंह्रैंहुंहुंदुष्टग्रहा गच्छन्त्वतःस्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा इसीको पढ़ना चाहिये ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥इतिद्वितीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ २॥

तृतीयेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिपूतना ॥ गात्रभंगः प्रलापश्चकंपोज्वरस्तथारुचिः ॥ २० ॥ निमीलनंनयनयोरोमांचोवमनंतथा ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनपुत्तिकांरचयेत्ततः ॥ २१ ॥ रक्तौदनंध्वजारक्तास्वस्तिकंरक्तमेवच ॥ रक्तपुष्पंरक्तगंधंतथारक्तानुलेपनम् ॥ ॥ २२ ॥ पश्चिमायांचसंध्यायामुदीच्यांनिक्षिपेद्बलिम् ॥ प्रथमोक्तप्रकारेणस्नानंमंत्रंसमाचरेत् ॥ ॥ २३ ॥ इतितृतीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ३ ॥ चतुर्थेदिवसेमासेवर्षेगृह्णाति बालकम् ॥ मुखमंडलिकानाम्नादेवीचाकाशयोगिनी ॥ २४ ॥ गात्रभंगोनतिर्मूर्धोदौर्बल्यंचाक्षिमीलनम् ॥ वैवर्ण्यंश्यामताश्वासःकासोरुचिरनिद्रिताम् ॥ २५ ॥ तिलपिष्टमयींकृत्वापुत्तिकांबिल्वकंटकैः॥ अष्टांगेरखयेच्छ्वेतपुष्पंशुक्लध्वजाऽर्जुनः ॥ २६ ॥ स्वस्तिकाःप्रस्थभक्तंचप्रस्थचूर्णस्यपूपकाः ॥ त्रिसंध्यंपश्चिमायांतुबलिंदद्यात्प्रयत्नतः ॥ अर्द्धप्रस्थमितास्तत्रपोलिकाःसंप्रकीर्तिताः ॥ २७ ॥ गोग्रज्जल-

शुनंसर्पनिर्मोकोनिंबपत्रकम् ॥ मनुष्यकेशमार्जार-
रोमाण्याज्यंचगोस्तथा ॥ २८ ॥ एतैश्चधूपयेद्बालं
संध्यायांचदिनत्रये ॥ मंत्रस्नानादिकंसर्वंप्रथमोक्त-
क्रमेणवै ॥ २९ ॥

इति चतुर्थदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः॥ ४॥

भाषा—तीसरादिवस तीसरा महीना तीसरावर्ष इनकेविषय
बालकके कष्ट होनेमे उसको पुतना नाम करके देवी ग्रहण
करतीहै उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम गात्रभंग हो, प्रलाप हो, कंप
हो,ज्वरहो,अरुचि रहै॥ २०॥ नेत्र मींचे रक्खे, रोमावली खड़ी
हो, वमन करे, अब तिसका उपाय लिखतेहैं ॥ सेर भर गेहूंके
आटाकी मूर्ति देवीकी बनाके उसको मट्टीकी सहनकमें रखके
उसकेअगाडीलालभात लालध्वजा चूनके शथिए रक्तचंदनलाल
फूलरोलीऔरमूर्तिकोलालचंदनकालेपन करदेनाचाहिये॥ २१॥
॥२२॥सायंकालमें संध्याके समय यह संपूर्णवस्तु सहनकमें
रखके२१वारपूर्वोक्त मंत्रपढके७वार बालकके ऊपर वारके उत्तर
दिशामें बलि दे आवे.और स्नान मन्त्र जप धूपादिक सर्व वस्तु
पूर्वोक्त प्रकारसे करे ॥२३॥ इतितृतीयदिवसमासवर्षग्रहगृहीत-
बालकरक्षाविधिः॥ ३ ॥ चौथेदिन चौथे मास चौथेवर्षके वि-
षय बालकके कष्ट होनेमे उसको मुखमंडलिका नाम देवी ग्रहण
करतीहै ॥ २४ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं—गात्रभंग हो
शिरको नीचा रक्खे,दुर्बलता रहै, नेत्र मींचे रक्खे,अंगको वि-

वर्णता और श्यामता हो,श्वास, कास, अरुचिहो, निद्रा नहीं आवे ॥ २५ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—तिलकी पीठीकी मूर्ति देवीकी वनाके मट्टीके पात्रमें रखके बेलके कांटेसे उस मूर्तिके आठों अंगोंमें रेखा करदे उसके अगाडी सफेद फूल, सफेद ध्वजा, अर्जुन वृक्षका पुष्प ॥ २६ ॥ गेहूके चूनके शथिए और सेर १ भर भात पकाहुआ सेरभर चुनकेगुडके पूडे, आधा सेर पूर्णपोली, दीपक ५ ध्वजा ५ यह सव वस्तु उसी पात्रमें रखके २१वार पूर्वोक्त मन्त्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ वृक्षके नीचे धर आवे यह जवन दिनमें प्रातःकाल मध्याह्न व सायंकालमें करना चाहिये॥ २७॥ गौका सींग,लहसन,सांपकी कांचली,निंबके पत्ते,मनुष्यकेमाथेके बाल विल्लीके रोम गौका घी ॥ २८ ॥ इनोंकी धूप बालकको देवे दिन तीन सन्ध्याके समय और मन्त्रजप स्नान यह कर्म पूर्वोक्त क्रमसे करना चाहिये॥ २९ ॥

इति चतुर्थेदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ४ ॥
पंचमेदिवसेमासेवर्षेचैवबिडालिका ॥ हिक्काश्वासश्च शूलंचगात्रभंगोऽरुचिस्तथा ॥ ३० ॥ ज्वरस्तत्र विशेषेणभवत्येवनसंशयः ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनविनिर्मायाथपुत्तिकाम् ॥ ३१ ॥ शुक्लौदनंध्वजाः पंचस्वस्तिकाःपंचचोज्ज्वलाः ॥पंचप्रदीपाःशुक्लानि कुसुमानिचचंदनम् ॥ ३२ ॥ अपपल्लववृक्षमूलेपश्चिमायांदिशिक्षिपेत् ॥ चतुर्थोक्तप्रकारेणधूपोदेयः

प्रयत्नतः ॥३३॥मन्त्रः ॥ ॐभगवतिचोच्चार्य्यह्रींह्रीं ह्रूंह्रूंततः परम् ॥ मुंचरक्षांकुरुकुरुबलिंगृह्णद्वयन्तथा ॥ ३४ ॥ अम्रंठदितयंचामुंडेचशर्वरिचंडिके ॥ ठःठःस्वाहासमाख्यातोमंत्रोबलिनिवेदने ॥ ३५ ॥

इति पंचमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥५॥

भाषा–पांचवाँ दिवस पांचवाँ मास पांचवें वर्षके विषय बालकके कष्टहो उसको विडालिका देवी ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण लिखते हैं हुचकी आवे श्वास हो शूल उदरमें हो गात्रमें भडकहो अरुचि रहै ॥ ३० ॥ और ज्वर बडा तेज रहै अब इसका यत्न लिखतेहैं १ सेर भर चावलका आटा पीसके उसकी देवीकी मूर्ति बनाके मट्टीके पात्रमें रखके उसके अगाडी यह वस्तु रक्खे ॥ ३१ ॥ सफेद भात पकाया हुआ, ध्वजा सफेद५गेहूँके आटाके शंथिए और ५ दीपक, सफेद फूल, सफेद चंदन ॥ ३२॥ यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके संध्याके समय २१ बार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके पश्चिम दिशाकी तरफ वृक्षके नीचे बलि धर आवे और चतुर्थ दिन मास वर्षके विधानमें जो धूप लिखीहै सो धूप बालकको देनी चाहिये ॥ ३३॥ मन्त्रः ॥ यह चौतीसके और पैंतीसके श्लोकमें मंत्रका उद्धार होताहै उसका यह स्वरूपहै ॐभगवति ह्रींह्रीं ह्रूंह्रूं मुंच रक्षां कुरुकुरु बलिं गृह्णगृह्ण अम्रं ठःठः चामुंडे शर्वरि चंडिके ठःठःस्वाहा इसी मन्त्रको जपना चाहिये ॥३४॥३५॥

इति पंचमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ५ ॥

षष्ठेतुदिवसेमासेवर्षेपाक्तरिकाऽग्रहीत ॥ तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यंरोदनमोहनम् ॥ २६ ॥ कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदन्तैर्घृतप्लुतैः ॥ धूपयेल्लेपयेच्चापितता मुञ्चतिसाग्रहा ॥ २७ ॥ बलिदानादिकंसर्वंप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ एवंकृतेनविधिनाबालकःसुखतांव्रजेत् ॥ २८॥ इति षष्ठदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ६ ॥ सप्तमेदिवसेमासेवर्षेचवतुकालिका ॥ तत्रापिचेष्टादृष्टव्याछर्द्यरोचककम्पनम् ॥२९॥ कासश्वासौचविज्ञेयौतत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ एवंसतितुकर्तव्याप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ ४० ॥ इति सप्तमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥७॥ अष्टमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिकामिनी ॥ तयागृहीतमात्रेणज्वरस्तापभयंभवेत् ॥ ४१ ॥ आहारंचन गृह्णातिमुखंचपरिशुष्यति ॥ कुलद्वयमृदाकृत्वापुत्तिकांसुमनोहराम् ॥ ४२ ॥ गोधूमान्नंमसूरान्नंशाकञ्चपललंतथा ॥ ध्वजाःपंचसमाख्याता दीपकाः पंच पोलिकाः॥ ४३ ॥गुग्गुलेनचसंधूप्यरक्तचन्दनपुष्पकैः ॥ पूजयेद्यत्नतःपूर्वंमंत्रेणैवसुमंत्रिणा ॥ ४४ ॥ मन्त्रैस्नानविशेषस्तुप्रथमोक्तक्रमेणवै ॥ एवंकृतेशिशूनांविसुखंचैवप्रजायते ॥ ४५ ॥ इत्यष्टमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालरक्षाविधिः ॥ ८ ॥

भाषा—छठा दिवस छठा महीना छठावर्षविषय बालकके कष्ट

होय उसको पट्कारिका देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहतेहैं–ज्वरहो, अंग फूटे, हँसे, किसी वक्त रोने लगजाय और मोह करे ॥ ३६ ॥ अब उपाय लिखते है–कूट, गूगल, राई, हाथीदांत इनको घीमें मरकोयके बालकको धूनी दे और उसके शरीरको उद्वर्तन करानेसे देवी छोड देती है ॥ ३७ ॥ और बलिदान मंत्रजप स्नानादिक सब कर्म प्रथम दिन मास वर्षकी रीतिसे करने चाहिये ऐसे करनेसे बालकको सुख प्राप्त होताहै और देवीका दोष दूर हो जाताहै ॥ ३८ ॥ इति षष्ठदिवसमासवर्षबालग्रहरक्षाविधिः ॥ ६ ॥ सातवाँ दिवस सातवाँ मास सातवाँ वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको कालिका देवी ग्रहण करती है उसके लक्षण कहते हैं प्रथम छर्दि हो, अरुचि रहे, शरीर कंपे ॥ ३९ ॥ खाँसी श्वासहो ऐसे लक्षण होनेसे बालककी चिकित्सा करनी चाहिये और प्रथम दिवस मास वर्षके विधानके क्रमसे बलिविधान, मंत्रजप, स्नान, धूपादिक कर्म करावे ब्रह्मभोजन करावे साधुसंतअतिथि इनोंको भोजन करावे दानादिक करावे ईश्वरकी कृपासे बालक चंगा हो जावे ४० ॥ इति सप्तमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ७ ॥ आठवाँ दिवस आठवाँ महीना आठवाँ वर्षके विषय बालकको कष्ट होनेसे कामिनी देवी ग्रहण करती है अब उसके लक्षण कहते हैं–उसके ग्रहणमात्रकरके प्रथम बालकको ज्वर हो और शरीर बहुत तप्त रहे ॥ ४१ ॥ खाय कुछ नहीं, मुख सूखारहे, शरीर शीतल होजावे अब इसका उपाय लिखते हैं

जलकी पूर्व पश्चिम किनारोंकी मिट्टी लावे उसकी सुन्दर देवीकी मूर्ति बनाके उसको मृत्तिकाके पात्रमें रखके ॥ ४२ ॥ उसके अगाडी गेहूं,मसूर,हराशाक,मांस, पांचरंगकी ५ध्वजा, दीपक ५, पूर्णपोली यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके२१वार मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके पश्चिमदिशामें संध्यासमय बलि दे ॥ ४३ ॥ और बालकको गूगलकी धूपदे और लालचन्दन,लाल पुष्प इनोंसे देवीका पूजन करे और मंत्रका जाननेवाला पुरुष पूर्व मंत्र करके पूजन करे ॥ ४४ ॥ और मंत्र, जप, स्नान यह सब कर्म पांचवें दिन मास वर्षके विधानके क्रमसे करादेना चाहिये ऐसे करनेसे बालकोंके सुख हो देवीका दोष दूर हो ॥ ४५॥

इत्यष्टमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ८ ॥

नवमेदिवसेमासेवर्षेनाम्नातुबालकम् ॥ गृह्णातिमदनाचैवतच्चेष्टांचवदाम्यहम् ॥ ४६ ॥ ज्वरंछर्दिंघृणाध्मानंकासःश्वासश्चतृट्तथा ॥ गात्रभंगश्चशूलश्चचिह्नान्येतानिबालके ॥ ४७ ॥ प्रस्थमात्रेणपिष्टेनविनिर्माय्याथपुत्तिकाम् ॥ ओदनंमत्स्यमांसंचपर्प्पटीचेक्षुशूलिकाम् ॥ ४८ ॥ निक्षिपेत्पूर्वसंध्यायामुत्तरस्यांवलिंहरेत् ॥ गोशृंगलशुनाभ्यांचधूपयेच्चैवबालकम् ॥ ४९ ॥ मंत्रः—ओंनमोभगवतेवासुदेवायकृष्णायमंडलबलिमादायहनहनहुंफट्स्वाहा ॥ इति नवमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ९ ॥

भाषा—नौमें दिवस नौमें महीने नौमें वर्षके विषय बालकको कष्टहो उसको मदना नाम करके देवी ग्रहण करतीहै अब इसके लक्षण कहते हैं ॥ ४६ ॥ प्रथम ज्वर हो, वमनकरे, चित्तमें घृणा रहे, अफारा रहे,खांसीहो,श्वासहो,प्यास लगे,शरीरमें हड-फोडहो और शूल हो यह चिह्न बालकके होनेसे मदनादे-वीका दोष कहना । अब इसका उपाय लिखते हैं॥४७॥ सेर-भर गेहूंका आटा लेके उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाके मिट्टीके सहनकमें धरके उसके अगाडी पकेहुये चावल, मच्छीका मांस, पापडी, ईख, सुहाली, पांच रंगकी ५ ध्वजा, ५ दीपक आटाके, फूल ॥ ४८ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके संध्यासे पहिले २१ वार मंत्र पढके ७ वेर बालकके ऊपर वारके उत्तरदिशाकी तरफ बलि देआवे और गौका सींग, लहसन इनोंकी बालकको धूनी देनी चाहिये बालक चंगाहो देवीका दोष शांत हो स्नान ब्राह्मणभोजन पूर्वकमसे करावने चाहिये ॥ ४९ ॥ मंत्र मूलमें जो लिखा है इसीको जपना चाहिये ॥

इति नवमदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥९ ॥

दशमेदिवसेमासेवर्षेगृह्णातिबालकम् ॥ रेवती ज्व-रशूलंचछर्दिःश्वासोङ्गमर्दनम् ॥ ५० ॥ अन्नद्वेषश्च कासश्चबलिर्देयोविचक्षणैः ॥ प्रस्थप्रमाणपिष्टेनपु-त्तिकांकल्पयेद्बुधाम् ॥ ५१ ॥ अष्टांगंलेखयेद्वि-ल्वविटपंकंटकैस्ततः ॥ गुडौदनंचसर्पिश्चध्वजा-नांपंचविंशतिः ॥ ५२ ॥ स्वस्तिकानांप्रदीपानां पंचविंशतिकल्पना ॥ चत्वारिरक्तपुष्पाणिदक्षि-

णस्यांदिशिक्षिपेत् ॥ ५३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमोभग-
वतेवैश्वदेवायहनहुंफट्स्वाहा ॥ मंत्रोयंजपनीयश्च
धूपंस्नानंतुपूर्ववत् ॥ ५४ ॥ इतिदशमदिवसमास-
वर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १० ॥ एकादशे
दिनेमासेवर्षेचैवसुदर्शना ॥ गृह्णातिबालकंपश्चा-
ज्ज्वरस्तस्यप्रजायते ॥ ५५ ॥ मुखशोषोऽन्नविद्वेषो
गात्रभंगश्चरोदनम् ॥ पुत्तिकांमाषपिष्टेनरचितां
[illegible]क्षमोदनम् ॥ ५६ ॥ पुष्पाण्यपिचशुक्लानिध्व-
[illegible]नांपञ्चविंशतिः ॥ स्वस्तिकानांप्रदीपानां पंच-
[illegible]शतिरेवच ॥ ५७ ॥ एतत्सर्वंयमाशायांसंध्यायां
[illegible]तराहरेत् ॥ ५८ ॥ मंत्रः ॥ ॐनमोभगवतेरा-
[illegible]णाय चंद्रहासवज्रहस्तायज्वलज्वलदुष्टग्रहादीन्
[illegible]ह्रींफट्स्वाहा ॥ एकविंशतिवारंचमंत्रमेनंजपेन्नरः॥
[illegible]पस्नानादिकंसर्वंकुर्य्यात्पूर्वक्रमेणच ॥ ५९ ॥
[illegible]त्येकादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ११ ॥
[illegible]भाषा–दशवदिवस दशममास दशमवर्षके विषय बालकको
[illegible] होनेसे उसको रेवती नाम करके देवी ग्रहण करतीहै, उसके
[illegible]क्षण कहतेहैं-प्रथम ज्वरहो, शूलहो, वमन करे, श्वासहो, अंग
[illegible] ॥ ५० ॥ अन्नपर इच्छा नहींहो, खांसीहो इतने लक्षण
[illegible]नेसे देवीका दोष कहना. अब इसका उपाय लिखतेहैं–सेर-
[illegible] गेहूंके आटाकी सुंदर देवीकी मूर्ति बनाके मिट्टीके सहनकमें
[illegible]थापन करे ॥ ५१ ॥ फिर बिल्ववृक्षके काँटोंसे उस मूर्तिके

आठ अंगोंमें रेखाकरके कांटोंको उन्हीं अंगोंमें लगादेफिर गुडके मीठे पके हुए चावल, घृत, २५ ध्वजा ॥ ५२ ॥ सथियेगेहूंके आटाके २५ दीपक और लाल फूल ४ यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वेर बालक ऊपर वारके संध्यासमय दक्षिणदिशाकी तरफ बलि धर आवे ॥ ॥५३॥ मंत्र ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट्स्वाहा ॥ यही मंत्र जपना चाहिये और धूप स्नान पूर्वोक्तक्रमसे करावने चाहिये ॥५४॥ इति दशमदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः १० ग्यारहवें दिवस ग्यारहवें मास ग्यारहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट होय उसको सुदर्शनानामदेवीग्रहण करतीहैअब उसके लक्षण कहतेहैं–प्रथम बालकको ज्वरहो ॥ ५५ ॥ मुखशोषहो, अन्नपर रुचि नहींहो, अंग सब फूटें, रोवें बहुत, शरीर दुर्बल होजावे यह लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना, अब इसका उपाय लिखतेहैं उडदके चूनकी देवीकी मूर्ति बनाके मृत्तिकाके पात्रमें रखके उसके अगाडी सफेद भात पका हुवा रक्खे ॥ ५६ ॥ सफेद फूल २५, सफेद ध्वजा और सथियेगेहूंके चूनके पचीस २५ दीपक, पूर्णपोली, सुहाली, पूडे ॥ ५७ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें धरके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके यह बलि संध्यासमयमें और प्रातःकाल दोनोंवक्त दक्षिणदिशामें दे ॥ ५८ ॥ मंत्र मूलमें लिखाहै २१ वार जपना चाहिये और धूप स्नानादिक सब कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहिये ॥ ५९ ॥

इत्येकादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ११ ॥

द्वादशेदिवसेमासेवर्षेवापूतनाशिशुम् ॥ अद्भुताख्याप्रगृह्णातिज्वरःस्यात्प्रथमंततः ॥ ६० ॥ रोदनं सर्वदादन्तखादनंनेत्ररुक्तथा ॥ रोमांचंतापइत्येतल्लक्षणंतस्यवैशिशोः ॥ ६१ ॥ तंडुलप्रस्थपिष्टेनकृत्वाचैवतुपुत्तिकाम् ॥ त्रयोदशस्वस्तिकाश्च ध्वजादीनांत्रयोदश ॥ ६२ ॥ आपूपंमत्स्यमांसंचतथापर्पटिकामपि ॥ एतत्सर्वंदक्षिणस्यां दिशिसायंविनिक्षिपेत् ॥ ६३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमोनारायणायज्वलद्धस्तायहनद्वयम् ॥ शोषय द्वितयंचैवमर्दयद्वितयंतथा ॥ ६४ ॥ पातयद्वितयंहुंहुंहुंहुंहनहनेतिच ॥ दुष्टानांतुसमुच्चार्य्यह्राह्रीं फट्वह्निवल्लभा ॥ ६५ ॥

इति द्वादशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १२॥

भाषा-बारहवें दिवस बारहवें मास बारहवें वर्षकेविषय बालकको कष्टहो उसको अद्भुतानाम करके देवी ग्रहण करतीहै, अब उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम बालकको ज्वरहो ॥ ६० ॥ और रोवे बहुत, हरवक्त दाँतोंको चावाकरे, नेत्रमें पीडाहो, रोमावलि खडी रहै, अंग ताप रहै, इतने लक्षण बालकके होनेमे देवीका दोप जानना ॥ ६१ ॥ अब इसका उपाय लिखतेहैं—चावल सेरभर लेके पीसके उसकी (देवीकी) मूर्ति बनाके मिट्टीके पात्रमें

रखके उसके अगाडी १३ सथिये गेहूंके आटेके दीपक बनाके रक्खे और १३ ध्वजा रखनी चाहिये ॥ ६२ ॥ और पूडे, मच्छीका मांस, पापडी, सुहाली यह सर्व वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमय दक्षिणदिशामें बलिदे॥६३॥मंत्रः॥ॐ नमो नारायणायज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय शोषय मर्दय मर्दय पातय पातय हुंहुंहुं हनहन दुष्टानां ह्लां हूं फट्स्वाहा ॥ यह मंत्र चौंसठ पैंसठके श्लोकमेंसे उद्धार किया जाताहै, इसीका जप करना चाहिये और धूप स्नानादि सर्व कर्म पूर्व क्रमके अनुसार करने चाहिये, ऐसे करनेसे बालक चंगाहो, देवीका दोष शांतहो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इति द्वादशदिवसमासवर्षग्रह-गृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १२ ॥

त्रयोदशेदिनेमासेवर्षंगृह्णातिबालकम् ॥ भद्रकाली ज्वरोनिद्रावामहस्तस्यकंपनम् ॥ ६६ ॥ वमनंतृ-ड्विनिःश्वासःकासःपीडाविचेतनम्॥पूर्वांदिशंसमा-श्रित्यबलिंदेव्यैनिवेदयेत्॥६७॥ नदीकूलद्वयोत्तिष्ठ-न्मृदादेवीस्वरूपकम् ॥ कृत्वापूजाप्रकर्त्तव्याधूपदी-पादिभिस्ततः ॥ ६८ ॥ वटकालड्डुपूपाश्चलान्न-भक्तंगुडोदधि ॥ चतुर्वर्णपताकाश्चप्रदीपाःपुष्प-चंदनम् ॥ ६९ ॥ मध्याह्नेबलिदानंतुकर्तव्यंसु-विधानतः ॥ मंत्रः ॥ ॐनमोभगवतेचरावणाया-थबालकम् ॥ मुंचमुंचाग्निजायांतोमंत्रोयंसमुदाहृ-

तः ॥ ७० ॥ धूपस्नानादिकंसर्वपूर्वोक्तक्रमतश्चरेत् ॥
॥ ७१ ॥ इति त्रयोदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबा-
लकरक्षाविधिः ॥ १३ ॥ चतुर्दशेदिनेमासेवर्षे
गृह्णातिबालकम् ॥ ताराश्रीयोगिनीनाम्नाज्वरः
शोषोऽरुचिर्भृशम् ॥ ७२ ॥ चक्षुःपीडाभवेत्तस्य
पश्चिमेबलिमाहरेत् ॥ त्रयोदशप्रकारेणबलिदाना-
दिकंचरेत ॥ ७३ ॥

इति चतुर्दशदिनमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १४ ॥

भाषा–तेरहवें दिवस तेरहवे महीने तेरहवें वर्षके विषय बालकको कष्टहो उसको भद्रकाली देवी गहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं–प्रथम ज्वरहो, निद्रा बहुत आवे, बायां हाथ वारवार कपे ॥ ६६ ॥ छर्दि होय, प्यास बहुत लगे, श्वासहो, खांसीहो, शरीरमें पीडा ज्यादा रहे, चेत कम है यह लक्षण हो उस बालकको देवीका दोष जानना अब उनका उपाय लिखतेहैं–पूर्व दिशाकी तरफ यह बलि देवीको अर्थ देनी चाहिये ॥ ६७ ॥ अब बलिको कहतेहैं–नदीके दोनों किनारोंकी मृत्तिका लाके देवीकी मूर्ति बनाके मिट्टीके पात्रमें रखके धूपदीपादि करके प्रथम देवीकी पूजा करे ॥ ६८ ॥ फिर उनके अगाडी वडे, लड्डू, पुडे,गेहू, पकाहुआ भात, गुड, दही, चाररंगकी ४ ध्वजा, दीपक ४, पुष्प, चंदन ॥ ६९ ॥ यह सब वस्तु उसी पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके मध्याह्नसमयमें पूर्वदिशामें सुंदर

रीतिसे बलिदान दे ॥मंत्रः॥ ॐनमो भगवते रावणाय बालकं मुंचमुंच स्वाहा ॥ यह मंत्र है इसका जप करना चाहिये और धूप स्नानादिक जो कर्म हैं सो संपूर्ण पूर्वोक्तक्रमसे कराने चाहिये ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इति त्रयोदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ ॥१३॥ चौदहवें दिवस, चौदहवें मास चौदहवें वर्षके विषय बालकको कष्ट हो, उस बालकको श्रीयोगिनी तारा ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम ज्वर हो, शरीरशोष हो, अरुचि बहुत रहै ॥ ७२ ॥ नेत्रमें पीडारहे यह लक्षण होनेसे देवीका दोष कहना। अब उसका उपाय लिखतेहैं तेरहवें दिवसमासवर्षका जो प्रकारहै उसी प्रकारसे बलिदान पश्चिमदिशाकी तरफ देना चाहिये और मंत्र जप स्नानादिक सर्व कर्म पूर्वक्रमके अनुसार करने चाहिये ॥ ७३ ॥ इति चतुर्दशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १४ ॥

पंचदशेदिनेमासेवर्षेहुंकारिकाग्रहः ॥ श्वासकासोज्वरश्चैवदक्षिणस्यांबलिंहरेत् ॥ ७४ ॥ बलिदानादिकंसर्वंत्रयोदशक्रमेणवै ॥ धूपादिकंकर्मसर्वंचतुर्थोक्तक्रमेणतु ॥ ७५ ॥ इति पंचदशदिवसमासवर्षग्रहगृहीतबालकरक्षाविधिः ॥ १५ ॥ षोडशेदिवसेमासेब्देगृह्णाति कुमारिका ॥ श्रमश्चारुचिरुद्वेगोज्वरःशोषादिचेष्टितम् ॥ ७६ ॥ नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यमध्यरात्रेबलिंहरेत् ॥ बालकंस्नाप-

दिनमासवर्षके क्रमसे वैद्यने करादेने चाहिये और धूप स्नानादिक जो कर्म हैं सो चतुर्थदिवसमासवर्षके विधानके क्रमसे करावे ॥ ७८ ॥ इति षोडशदिवसमासवर्षग्रहगृहीत-बालकरक्षाविधिः ॥१६ ॥

इतिश्रीपंडितनन्दकुमारवैद्यकृतबालतन्त्रभाषाटीकायांदशमःपटलः॥८॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामिबालानांहितकाम्यया॥बलिंसा-धारणंचैवग्रहान्रोगांस्तथैवच॥१॥ अथपूतनाग्रही-लक्षणमाह ॥ अत्यंतमलिनास्तीर्णेशयानंनिर्जने स्थले॥स्वपंतंपूतनानामग्रहीगृह्णातिबालकम्॥ २ ॥ ततोहिक्कायुतः श्वासीस्तनद्वेषीचकंपवान् ॥ छर्दि-मांश्चप्रजायेतनिशिजागर्तिसंरुदन् ॥ ३ ॥ स्वापो दिवारोमहर्षआस्यशोषश्चजायते ॥ गुदेरोगश्चतत्रा-शुबलिर्देयःप्रशांतये ॥ ४ ॥ कृशरान्नंपूर्णकुम्भःसहे-मातिलचूर्णकम् ॥ ध्वजागंधश्चपुष्पाणिधूपकंदीपकं बलिः॥५॥॥बालानांक्रीडनस्थानेदेयोमंत्रेणमंत्रिणा ॥ मन्त्रः ॥ नीलांबरधरेदेवि पूतनेविकृतानने ॥ शिशोर्विकारान्मुंचस्वप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ॥ ६ ॥ अथमहापूतनाग्रहीलक्षणमाह ॥ ताडितः संपतेद्य-स्तुतूष्णींवान्यःपतेत्तथा ॥ बालंमहापूतनास्या-गृह्णातिचततोज्वरः ॥ ७ ॥ जागर्तिचदिवारात्रौ

तच्चभुक्तेवमत्यपि॥कासःश्वासोऽक्षिरोगश्चपूतिगंधः प्रजायते ॥ ८ ॥ अन्नंमांसंचरक्तंचगंधपुष्पाणिवास सी ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ स्नु-हीवृक्षस्यमूलेतुवलिंमंत्रेणनिक्षिपेत् ॥ ९ ॥ मंत्रः ॥ करालेचंडिचामुंडेकापायांवरधारिणी ॥ राक्षसिपूत-नेदेविप्रगृह्णीष्ववलिंत्विमम् ॥ १० ॥

भाषा—अब इसके उपरांत बालकोंके हितकारी साधारण ग्रहोंकी वलि कहतेहैं और साधारण रोगभी कहतेहैं ॥ १ ॥ अब पूतना ग्रहीके लक्षण कहतेहैं,अत्यंत मैला विस्तरपर सोता हुआ बालकको या निर्जनस्थानमें सोता हुआ बालकको पूतना नाम देवी ग्रहण करतीहै ॥ २ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथमबालकको हुचकीहो,श्वासहो,स्तनपान नहींकरे,कंपेबहुत, वमन करे, रात्रिको जागे और रोवे वहुत ॥ ३ ॥ दिनमें सोवे शरीरपर रोमावली खडीरहे, मुख सूखारहे, गुदामें रोगहो ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना;उसकी शांतिके वास्ते वलि देनी चाहिये॥ ४ ॥ खीचड़ी,जलका पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित सोना गेरना चाहिये और तिलकुट,ध्वजा,कुछ सुगन्धद्रव्य पुष्प, धूप, दीपक यह सब वस्तु एक मिट्टीके पात्रमें रखके २१ वार मन्त्रसे मंत्रित करके वालकपर वारके जहां बालकखेलतेहों,उस जगह वलि धरआवे बालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो ॥५॥ मूलमें छठा श्लोकहै,वही मन्त्र जपना चाहिये ॥ ६॥ अब महा पूतनाग्रहीके लक्षण कहतेहैं—बालक ताडयाहुवा गिर पडे या

चुपदेशी गिर पडे उस वक्तमें बालकको महापूतना ग्रहण करतीहै. उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकको ज्वरहो॥ ७ ॥ और दिनरात्रि बालक सोवे नहीं और जो कछु भोजन करे सो वमन करदे,श्वासहो, खांसीहो,नेत्रमें रोगहो,शरीरमें दुर्गंध आवे ऐसे लक्षण होनेसे देवीका दोष जानना ॥ ८ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं—अन्न,मांस,रक्त, सुगंधके फूल, सपेद वस्त्र,लाल वस्त्र,धूप,दीपक,जलकरके पूर्ण कलश उसमें यत्किंचित् सोना डालदेना चाहिये यह सब वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१वारमंत्रपढके बालकके ऊपर वारके थोहरवृक्षके नीचे बलि देआवे देवीकादोष दूर हो,बालक चंगा होजाय ॥ ९ ॥और मूलमें जो दशका श्लोकहै सो मंत्रहै इसीकोजपनाचाहिये१०॥

अथोर्ध्वपूतनालक्षणमाह ॥ लोभादिनातुयःकुर्या-त्तिरस्कारंवनेपुरे ॥ देव्यूर्द्ध्वपूतनातस्यबालंसंक्रमते ग्रहः॥ ११॥ततोज्वरीचाक्षिरोगीसनिद्रश्चदिवाभवेत्॥ विनिद्रोपिनिशायांतुकासयुक्तश्चजायते ॥ १२ ॥ अन्नंमांसंचरुधिरंरक्तवस्त्रंचचंदनम् ॥ सहिरण्यः पूर्णकुंभःस्नुहीमूलेनिशामुखे ॥ १३ ॥ मंत्रः ॥ अथोर्द्ध्वपूतनेदेविप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ॥ शिशो-र्विकारान्मुंचाद्यरक्ताभेरक्तदर्शने ॥ १४ ॥ अथ बालकान्ताग्रहीलक्षणमाह ॥ ऋतौस्वदारगमनं कृत्वास्नानादिवर्जितः ॥ अनृतौशौचहीनस्तुस्वपेद्बा-लकतल्पके ॥ १५ ॥ तदासंक्रमतेबालंबालकान्ता

महाग्रही ॥ ततःपक्षाभिघातःस्याद्रक्तनेत्रश्चजायते ॥ १६ ॥ पायसंचतथामेपंकुक्कुटञ्छागलोहितम् ॥ रक्तवस्त्ररक्तगंधरक्तपुष्पाणिवैतदा ॥ १७ ॥ धूपदीपोहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ एतद्वटस्यमूलेच यवक्षेत्रेऽपिवाक्षिपेत् ॥ १८ ॥ अगृह्णीष्वबलिंचेमंबालकान्तेमहाग्रहः ॥ शिशोर्विकारान्मुंचस्वकुमारस्य प्रियप्रभे ॥ १९ ॥

भाषा—अब ऊर्ध्वपूतना देवीके लक्षणकहतेहैं,जो पुरुषलोभमें आयके या मदमें आयके वनमें या ग्राममें देवीका अथवा देवता का तिरस्कार करताहै; उस पुरुषके बालकको ऊर्ध्वपूतना नाम करके देवी ग्रहण करतीहै॥ ११ ॥ अब उसके लक्षणकहते- हैं प्रथमबालकको ज्वरहो, नेत्र दूखें, दिनमें निद्रा आवे और रात्रिको जागे और खांसी बहुत उठे॥ १२॥ अब इसका उपाय कहतेहैं अन्न, मांस, रुधिर,लाल वस्त्र, लाल चंदन, सोना गेरा- हुवा जलका कलश,ध्वजा, दीपक यह सर्ववस्तु एक मिट्टीकेपात्र में रखके२१वार मंत्र पढके ७ वार बालकके‌ऊपर वारके सन्ध्यासमयमें थोहरवृक्षके नीचे रख आवे बालक चंगाहो देवीका दोष शांतहो॥ १३॥और यह जो चौदहकाश्लोकहैयही मंत्र है इसीको जपना चाहिये ॥ १४ ॥ अब बालकांता ग्रहीके लक्षण कहतेहैं—ऋतुकालमें अपनी स्त्रीसे विषयकरके फिर स्नानादिक न करके या बगैर ऋतुकालके विषय करके अपवित्र हुवा बालककी शय्यापर सोजावे ॥ १५ ॥

उस वक्त वालकांता नामकरके यह वालकको ग्रहण करती है तदनंतर वालकको पक्षाघात रोग होताहै और लाल नेत्र होजाते हैं ॥ १६ ॥ अब इसका उपाय कहतेहैं । खीर और मींढाका मुर्गाका, बकराका खून, लालवस्त्र, लालचंदन, लालफूल ॥ १७ ॥ धूप, दीपक जलका कलश उसमें यत्किंचित् सोना गेरना चाहिये यह सब वस्तु एक मिट्टीके बर्तनमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें बडके वृक्षतले अथवा जौके खेतमें बलि दे बालक चंगा होजावे देवी का दोष शांत होजावे ॥ १८ ॥ और जो यह उन्नीसका श्लोक है यह मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ रेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूषणैर्बहुभिर्युक्तं गंधादिभिरलंकृतम् ॥ बालकं रेवतीनामाग्रहःसंक्रमतेतदा ॥ २० ॥ हरिद्रनेत्रविण्मूत्रंपीतस्फोटश्चजायते ॥ अग्निदग्धाकृतिःस्फोटोभवेच्छर्दिःपुनःपुनः ॥२१ ॥ पायसंपललंलाजासक्तवोगंधएवच ॥पुष्पाणिधूपदीपौचमिष्टंकांचनगर्भितः ॥ २२ ॥ पूर्णकुंभश्चमद्यंवा गोष्ठेनद्यांचनिक्षिपेत् ॥ २३ ॥ मंत्रः ॥ शिशोर्विकारान्मुंचाद्यरेवतीचैवमातृके ॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंसुंदरिप्रियभूषणे ॥ २४ ॥ अथ महारेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ संध्याकालेशयानंतुचोच्छिष्टंमुक्तमूर्द्धजम् ॥ तदासंक्रमतेबालंरेवतीचमहाग्रहः ॥ २५ ॥ आस्यशोषोभवेत्तस्यदाहःकंपास्यनकता ॥ कृष्ण-

वर्णश्चजायेतबलिर्देयःप्रशांतये ॥ २६ ॥ लाजाश्च पायसंसर्पिःकुक्कुटोमेपएवच ॥ रक्तवस्त्ररक्तगंधंपूर्णकुंभंसकांचनम् ॥ २७ ॥ वटस्यमूलेसंध्यायांप्रदोपनिक्षिपेद्बलिम् ॥ २८ ॥ मंत्रः ॥ चित्राम्बरधरेदेवि चित्रमाल्यानुलेपने ॥ शिशोर्विकारान्मुश्चाद्यरेवति त्वंमहाग्रहि ॥ २९ ॥

भाषा—रेवतीग्रहके लक्षण कहतेहैं बहुत आभूषण बालकको पहरानेसे या सुगंधादिक द्रव्य बालकके लगानेसे रेवतीनाम ग्रही बालकको ग्रहण करतीहै है ॥ २० ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं हलदीकी माफिक आंख, विष्ठा, मूत्र होजावें और पीले रंगके फोडे वदनमें होजावें या अग्निसे जलेके सदृश शरीरमें फफोले होजावें और बारंबार छर्दि करे ॥ २१ ॥ अब इसका उपाय कहते हैं खीर, मांस, धानकी खील, सत्तू, सुगंधद्रव्य, सुगंधके फूल, धूप, दीपक, मिष्टान्न और जलका कलश उसमें सोना यत्किंचित् डाल देना चाहिये ॥ २२ ॥ और मदिरा यह सर्व वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ मंत्र पढके ७ बार बालकके ऊपर वारके जहां गौ बँधतीहैं वहां या नदीकेकिनारे बलिदे बालक चंगा होजावे ॥ २३ ॥ और यह चौवीसका श्लोकहै यह मंत्र है इसीको पढना चाहिये ॥ २४ ॥ अब महारेवती ग्रहके लक्षण कहतेहैं—सन्ध्यासमयके वक्त उच्छिष्टमुख बालकको शयन करानेसे या खुले बाल संध्याके वक्त शयन करानेसे महारेवती नाम करके देवी बालकको ग्रहण करती है ॥ २५ ॥

अब उसके लक्षण कहते हैं प्रथम मुखशोप रहे और दाह रहे शरीर कंपे मुखको वांका रहे और शरीरका वर्ण काला होजावे ऐसे लक्षण बालकके होनेसे देवीकी शांतिके वास्ते बलि देना चाहिये ॥ २६ ॥ बलिविधान लिखतेहै–धानकी खील, खीर, घृत, मुर्गा,भेड,लालवस्त्र,लालचंदन,जलका कलश सुवर्ण सहित ॥ २७ ॥ यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें स्थित करके २१ वार मन्त्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्यासमयमें वटके वृक्षतले बलिको दे ॥ २८॥ और यह उनतीसका श्लोकहै यह मंत्रहै इसीको जपना चाहिये। बालक चंगा हो देवीका दोप शांति होजावे ॥ २९ ॥

अथ पुष्परेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूमौशयानंसंध्यायांक्रीडंतंपुष्परेवती ॥ ग्रहीसंक्रमतेवालंतेनांगेशीतताभवेत् ॥ ३० ॥ आस्यशोषश्चदाहश्चकंपःस्यादंगुलीषुच ॥ नखेषुकृष्णवर्णश्चदातव्यःशान्तयेबलिः ॥३१॥ मधुयुक्तंपायसंचगंधपुष्पाणिवाससी ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ ३२ ॥ सुपुष्पायतनेक्षापिवलिंमंत्रेणनिःक्षिपेत् ॥३३॥ मंत्रः ॥ पुष्पाक्षेरेवतीदेवीप्रगृह्णीष्वबलिंत्विमम् ॥ वालकस्य सुखंसिद्धिंप्रयच्छत्वंवरानने ॥ ३४ ॥ अथ शुष्करेवतीग्रहीलक्षणमाह ॥ भूमौनिपतितंवालंरुदंतंछर्दितंतथा ॥ अप्रक्षालितगात्रंचगृह्णीयाच्छुष्करेवती ॥ ३५ ॥ ततोज्वरीमुखेशोपीहृच्छोप्यपिचशूल्य-

पि ॥ शिरोरोगार्तिभूतश्चअजीर्णेनयुतोभवेत् ॥ ३६ ॥ मुद्गान्नंश्वेतपुष्पाणिश्वेतवस्त्रंचचंदनम् ॥ धूपदीपौघ-टंचूतवृक्षमूलेबलिंहरेत् ॥ ३७ ॥ मंत्रः ॥ शुष्का-दिरेवतीदेविप्रेतरूपेयशस्विनि ॥ करालवदनेघोरे प्रगृह्णीष्वबलिंत्त्विमम् ॥ ३८ ॥

भाषा—अब पुष्परेवती देवीकेलक्षण कहतेहैं—संध्याके समय पृथ्वीमें सोता हुआ बालकको या खेलताहुवा बालकको पुष्परेवती ग्रहण करतीहै अब उसके लक्षण कहतेहैं—प्रथम बालकका अंग ठंढा रहे ॥ ३० ॥ मुखशोषहो,दाहहो,हाथकी अंगुलियोंमें कंप हो और नख काले होजावें । अब पुष्परेवती देवीकी शांतिके वास्ते बलि देनी चाहिये ॥ ३१ ॥सहत, खीर, सुगंधके फूल,सपेदवस्त्र, लालवस्त्र,धूप, दीपक, जलका कलश, उसमें यत्किंचित् सोना डालदेना चाहिये ॥ ३२॥ यह सबवस्तु मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मन्त्रसे मंत्रित करके ७ वार बालकके ऊपर वारके जहां फुलवाडी हो वहां बलिदे आवे बालक चंगाहो देवीका दोष शांत हो ॥ ३३॥और यह चौंतीस का श्लोक है यह मन्त्र है इसीको जपना चाहिये ॥ ३४॥अब शुष्करेवती देवीके लक्षण कहतेहैं-पृथ्वीमें बालक गिरजावे रोवताहो या छर्दी करताहो उसको जलसे शुद्ध न करे उसबाल-कको शुष्करेवती देवी ग्रहण करती है॥ ३५ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं प्रथम बालकको ज्वर हो, मुखशोषहो ,हच्छोष हो, उदरमें शूलहो,शिरमें शूलहो और अजीर्ण रहे ॥ ३६ ॥

अब उपाय लिखते हैं मूँग, चावल, सपेद फूल, सपेद वस्त्र, सपेद चंदन, धूप, दीपक, जलका कलश यह सर्व वस्तु मिट्टीके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढके ७ वार बालकके ऊपर वारके आम्रवृक्षके नीचे बलिदे बालक चंगा हो देवीका दोष शांत हो ॥ ३७ ॥ और अठतीसका श्लोक है यही मंत्रहै इसीको जपना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथशकुनीग्रहीलक्षणमाह ॥ उच्छिष्टभोजनंदेवालयमूत्रादिकारिणम् ॥ शकुनीग्रहीगृह्णातिततोजागर्तिवैनिशि ॥ ३९ ॥ मुखेकंठेगुदेचैवव्रणोऽतीसारवान्भवेत् ॥ ज्वरीतृष्णाछर्दिवातरोगीभवतिबालकः ॥ ४० ॥ आममांसंपक्वमांसंहरिद्रान्नंपयोघृतम् ॥ तिलपिष्टंफलंचैववस्त्रगंधादिकंतथा ॥ हिरण्यसहितःकुम्भःश्मशानेनिक्षिपेद्बलिम् ॥ ४१ ॥ मंत्रः ॥ प्रगृह्णीष्वबलिंचेमंशकुन्यक्षेमहाग्रही ॥ शिशोर्विकारान्मुञ्चाद्यसुभगेकंपरूपिणि ॥ ४२ ॥ अथशिशुमुंडिकाग्रहीलक्षणमाह ॥ नित्यकर्म्मविहीनानांपोषिकाणांचपक्षिणाम् ॥ जन्मान्तरेसंक्रमतेबालकंशिशुमुंडिका ॥ ४३ ॥ ततोरोदितिपाणीतुपादौचोत्क्षिप्यकंपते ॥ आमज्वरीविनिद्रश्चभवेत्कार्योबलिस्ततः ॥ ४४ ॥ हरिद्रान्नंतिलान्नंचपिष्टंचापूपपूरिका॥ सर्पिर्मधुदधिक्षीरंगंधपुष्पाणिवाससी ॥ ४५ ॥ धूपदीपौहिरण्येनयुक्तःपूर्णघटस्तथा ॥ नदीतटेवटेऽरण्येनिक्षिपेन्मंत्रतोबलिम् ॥ ४६ ॥ मंत्रः ॥ स्व-

लंकृतस्वरूपाचभवसिशिशुमुंडिके ॥ शिशोर्विकारान्मुंचस्वचंडिकेचंडविक्रमे ॥ ४७ ॥

भाषा—अब शकुनी देवीके लक्षण कहतेहैं देवताके स्थानमें उच्छिष्ट भोजन करानेसे या मलमूत्रादिकके करनेसे बालकको शकुनी देवी ग्रहण करतीहै ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं-रात्रिमें बालक सोवे नहीं ॥ ३९ ॥ और बालकके मुखमें, कंठमें, गुदामें व्रण हो और दस्त लगे ज्वर होवे, प्यास जादा लगे, वमन करे, वातव्याधि होवे ॥ ४० ॥ यह लक्षण होनेसे शकुनी देवीका दोष जानना। अब इसका बलिविधान कहतेहैं-कच्चा मांस, पकामांस, हलदीसहित अन्न, दूध, घृत, तिलकुट, फल, सपेदकपडा, सपेदफूल, ध्वजा दीपक, सथिये सुवर्णयुक्त जलका कलश यह संपुर्ण वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें रखके २१ वार मंत्र पढ़के ७ वार बालकके ऊपर वारके श्मशानमें बलि संध्या कालमें धर आवे, बालक चंगाहो, शकुनी देवीका दोष शांतहो॥ ॥ ४१ ॥ मूलमें बयालीनका श्लोकहै वही मंत्रहै इसीको पढना चाहिये ॥ ४२ ॥ अब शिशुमुंडिका देवीके लक्षण कहतेहैं, जो नर या नारी, नित्य कर्म करते नहीं हैं और पक्षियोंका पालन करतेहैं, उनके बालकको जन्मान्तरमें शिशुमुंडिका देवी ग्रहण करतीहै ॥ ४३ ॥ अब उसके लक्षण कहतेहैं—बालक रोवे बहुत, हाथोंको पैरोंको उठा उठापटके और कंपे, आमज्वर हो, निद्रा नहीं आवे, वमनकरे आलस्यहो यह लक्षण होनेसे शिशुमुण्डिका देवीका दोष जानना। अब इसका

बलिविधान कहतेहैं ॥ ४४ ॥ हारिद्रायुक्त अन्न अर्थात् केशरीभात, तिलकुट, कचोरी, पुडे, पुरी, घृत, सहत, दही, दूध, सुगंधीके फूल, वस्त्र, लालवस्त्र ॥ ४५ ॥ धूप, दीपक, मिठाई सुवर्णयुक्त जलका कलश यह सब वस्तु एक मृत्तिकाके पात्रमें धरके २१ वार मंत्र पढ़के ७ वार बालकके ऊपर वारके संध्या समयमें नदी किनारे या वटवृक्षतले या वनमें बलिको देवे बालक चंगाहो, शिशुमुंडिका देवीका दोष शांतहो ॥ ४६ ॥ मूलमें सैंतालीसका श्लोकहै यही मंत्रहै इसीको पढना चाहिये ॥ ४७ ॥

अथसामान्यतोग्रहाविष्टबालस्यचेष्टोद्वर्तनस्नानधूपमंत्राःकथ्यंते ॥ नखदंतविकारीस्यान्निद्राहीनोथवाभवेत् ॥ भयोद्वेगीचदुर्गंधीबहुचेष्टोबलान्वितः ॥ बालोबालग्रहाविष्टस्तस्यस्याच्चप्रतिक्रिया ॥ ॥ ४८ ॥ दूर्वासतिक्ताविषमच्छदत्वक्प्रोद्वर्तनाद्धन्तिशिशुग्रहार्तिम् ॥ सप्तच्छदाऽश्वत्थमधूकशेलुपत्रैः कथाम्भःस्नपनाच्चशीतात् ॥ ४९ ॥ वंशत्वङ्नतसंयुतंसलशुनंसारिष्टपत्रंघृतंनिर्माल्यंनरकेशसार्षिरगुरंगोक्षीरराजीचतुः ॥ सिद्धार्थंजतुनिंबपत्रसहितंवंशत्वगाज्यान्वितं धूपानांत्रयमेतदाशु सकलान्बालग्रहान्नाशयेत् ॥ ५० ॥ प्रणवः शंखशब्देनरमापतिर्वदेत्ततः ॥ खगेश्वरततोलूनाकर्षणंकुरुसंवदेत् ॥ वह्निजायावधिर्मंत्रोविलेपनविधौस्मृतः ॥ ५१ ॥

भाषा—अब सामान्य रीतिसे ग्रह करके आविष्ट बालककी चेष्टा और उबटना स्नान धूप मंत्र इन्होंको कहतेहैं—जिस बालकके नखोंमें विकारहो और दांतोंमें विकारहो, निद्रा आवे नहीं, भय लगे, मनको उद्वेग रहे, शरीरमें दुर्गंधि आवे अनेक प्रकारकी चेष्टा करे, बलअधिकहोजावै, वह बालक ग्रहाविष्टजानना अब उसकी प्रतिक्रिया लिखतेहैं ॥ ४८ ॥ दूर्वा, कुटकी, निंबकेपत्ते तज, यह द्रव्य कूट कपडछान करके बालकको उबटनाकरनेसे और पीछे सातोंनके पत्ते, पीपलके पत्ते, मुलहटी, ल्हेसवाकेपत्ते इन औषधियोंकाकाथ करकेबालकको स्नान करानेसे बालककी ग्रहपीडा नष्ट हो बालक चंगा हो ॥ ४९ ॥ अब बालग्रही शांतिके वास्ते धूप लिखतेहैं—वांसका वक्कल, वगर, लहसन, निंबके पत्त गौका घी, एक धूप यह है । दूसरी—शिवके चढे फूल, मनुष्यके शिरके बाल, घीगौका, अगर गऊकादूध; राई, लाख यह दूसरी धूप है। तीसरी-राई, लाख, नीमके पत्ते, वांसका वक्कल, गौका घी, यह तीसरी धूपहै। यह तीनों धूप बालकके देनेसे सब बालग्रह नष्ट हो जाते हैं ॥ ५० ॥ और उबटना विलेपनका यह मंत्रहै. इस मंत्रसे बालकके उबटना विलेपन करना चाहिये ॥ मंत्रः ॥ ॐ शंखशब्देन रमापतिः खगेश्वर लूनाकर्षणं कुरु स्वाहा ॥ ५१ ॥

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामित्वभिषेककरंवरम् ॥ प्रणवंसर्वसिद्धांतमातरितिपदंवदेत् ॥ ५२ ॥ इमंग्रहंसंहरतुहुंरोदयचरोदय ॥ स्फोटयद्वितयंगृह्णद्वयमामर्दयद्वयम् ॥ ५३ ॥ शीघ्रंदनद्वयंप्रोक्तमेवंसिद्धो

वदेत्ततः ॥ रुद्राज्ञापयतिस्वाहास्नानेचैषविधिः स्मृतः ॥ ५४ ॥ बालकस्यशिरःस्पृष्ट्वाऽजसासर्वग्रहान्हरेत् ॥ ५५ ॥ खुंखुदंनंसमुच्चार्यखंहुंफट्वह्निवल्लभा ॥ नवार्णोयंसमाख्यातोधूपनेसर्वकर्मसु ॥ ५६ ॥ रक्षरक्षमहादेवनीलग्रीवजटाधर ॥ ग्रहैस्तुसहितोरक्षमुंचमुंचकुमारकम् ॥ ५७ ॥ भूर्जपत्रइमंलिख्यगुटिकांकृत्यबंधयेत् ॥ भुजेबालस्य रक्षार्थंसर्वग्रहहरंपरम् ॥ ५८ ॥ प्रणवंमुकमुकेति एकएकद्वयद्वयम् ॥ जयद्वयंचआगच्छबालकंठद्वयंवदेत् ॥ ५९ ॥ वह्निजायावधिमंत्रः सर्वग्रहविमोचनः ॥ जपेहोमेतर्पणेचबालकस्यसुखावहः ॥ ॥ ६० ॥ तारंचशक्तिलयुगान्वितवह्निजायाकोणेषुषड्सुपरिलिख्यपडक्षरांश्च ॥ वृत्तत्रयेणपरिवीतमिदंहियंत्रंवद्धंतदाशुशिशुरोदनमुत्क्षिणोति ॥ ६१ ॥ षट्कोणमध्येचविलिख्यमंत्रेनामान्वितंपूर्णशशांकयुक्तम् ॥ षट्कोणमध्येतुपडक्षराणिचंद्रान्वितान्येवमिदंलिखेद्वै ॥ ६२ ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे साधारणबालकग्रहरक्षाकथनं नामैकादशः पटलः ॥ ११ ॥

भाषा-बालकके अभिषेक करानेमें श्रेष्ठ मंत्रको कहतेहैं ॥ ॐ सर्वसिद्धान्ते मातरिमं ग्रहं संहर हुं रोदय रोदय स्फोटयस्फोटय गृह्ण गृह्ण आमर्दय आमर्दय शीघ्रं हन हन एवं सिद्धो रुद्राज्ञापयति स्वाहा ॥ इस मंत्रसे ग्रहपीड़ित बालकको स्नान करावे

और बालकका शिरस्पर्श करके मन्त्र पढनेसे यह मंत्र बालक-ग्रहोंको शीघ्र दूर करता है॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ खुं खुर्दनं खं हुं फट्स्वाहा यह नौ अक्षरका मंत्रहै बालकको धूप इस मंत्रसे देनी चाहिये ॥ ५६ ॥ सतावनका जो श्लोकहै यह मन्त्र है इसको भोजपत्रमें लिखके रक्षाके वास्ते बालकके गलेमें बांधे तो बालकके सर्व ग्रह नष्ट हों ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ॐ मुक मुक एक एक हुवहुव जय जय आगच्छ आगच्छ बालकं ठः ठः स्वाहा इस मन्त्रको जपनेसे या इससे होम करनेसे या तर्पण करनेसे बालकके सर्व ग्रह दूर होजातेहैं और सुख हो जाता है ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं लुलु स्वाहा यह छः अक्षरका मन्त्रहै इसके६अक्षर षट्कोणयंत्रके छः कोणोंमें लिखे.औरषट्कोण यंत्र के ऊपर तीन आवर्त करने चाहिये उसकेमध्यमें पूर्ण चन्द्राका वृत्त करना चाहिये उसमें मंत्र लिखना चाहिये और बालक-



कानाम लिखना चाहिये ऐसा यंत्र लिखके बालकके गलेमें बांधनेसे यह यंत्र बालकके रोदनको दूर करता है ॥ ६१ ॥६२॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायामेकादशःपटलः ११

कंदंविदार्य्याः पयसाश्रपीतंस्तन्यप्रवृद्धिं विदधातिस-
गोधूमधूपःसहगोघृतेनतद्वत्प्रदिष्टःसितयास-

मेतः॥१॥ मागधिकायाःकर्षंसप्ताहंयापयः पिष्टम् ॥ ससितंप्रभातेपिबतितस्याः स्रवतः पयोधरौसततम् ॥२॥ अजाजिकर्षंपयसाप्रपिष्टंयासेवतेसप्तदिनानि नारी॥ तस्याः कुचौसंततदुग्धपूर्णौकुमारपुष्टिंकुरुतः सुखेन ॥३॥ पिप्पल्याश्चरजोभिर्गृहधूमरजोयुतैःकृतो यूपः ॥ श्वेततिलतैलसहितोभुक्तः स्त्रीणांपयोजनकः ॥४॥ कुक्कुरमर्दकमूलंविधिनियतंवदनमध्यगतंनार्याः ॥ सततंस्थितंदशाहात्प्रभूतदुग्धप्रदंभवति॥५॥ क्षीराब्राह्म्यां भवं क्षीरं सुश्वेतसितयान्वितम् ॥ क्षीरंसंजनयेन्नार्याःप्रयत्नेननिषेवितम्॥ ६ ॥ प्रस्थतंडुलरजःसपयस्कंयापिबत्यनुदिनंसघृतेन ॥ दुग्धभक्तमशनंविदधानासाक्षरत्यविरतंबहुदुग्धम् ॥ ७ ॥ वनकार्पासकेक्षूणांमूलंसौवीरकेनवा ॥ विदारीकंदस्वरसंपिबेद्यास्तन्यवृद्धये ॥ ८ ॥ शालिषष्टिकदुग्धेक्षुकुशकासबलान्विता ॥ गुंद्रेक्षुवालिकामूली दशैतेस्तन्यवर्धनाः ॥ ९ ॥ इतिस्तन्यवर्द्धनम् ॥

भाषा—अब स्तन्यवर्धन प्रयोग लिखते हैं ॥ विदारीकंदका चूर्ण ४ मासे गौके दूधके संग पीनेसे बहुकाल स्तन्यवृद्धिको करता है और गेहूंका पूडा, घी, मिसरीसे खानेसे यहभी स्तन्य वृद्धि करताहै ॥ १ ॥ अथवा एक तोला पीपल छोटी गौके दूधसे पीसके गौके दूधमेंही छानके मिसरी डालके दिन ७ जो स्त्री पीवे उसके स्तन निरंतर स्रवणे लग जावें ॥२॥ और जो

स्त्री १ तोला सफेद जीराको दूधसे पीसके ७ दिन दूधसे सेवन करे तो उसके कुच दुग्धसे पूर्ण हो जावें और बालककी तृप्ति करने लायक होजावें ॥ ३ ॥ पीपल और गृहधूम इन दोनोंका यूष बनाके उसमें सफेद तिलीका तेल डालके जो अदुग्धा स्त्री खावे तो यह योगभी स्तनोंमें दुग्ध पैदा करता है ॥ ४ ॥ करोंदेकी जडको स्त्री दश दिन निरन्तर मुखमें रक्खे तो बहुत दूध उतरने लगजावे ॥ ५ ॥ जो स्त्री निरंतर सपेद बूरा डालके खीर खाया करे तो उसके स्तनोमें बहुत दूध होवे ॥ ६ ॥ एक सेर चावलोंके चूंनको घी दूधके संग जो स्त्री पीवे, दूधभात खाया करे तो उसके बहुत दूध उतरने लगजावे ॥ ७ ॥ बनकी कपासकी जड और ऊखकी जड इनको कांजीके पानीसे पीवे स्त्री अथवा विदारीकंदके स्वरसको पीवे तो उसके दूध उतरने बहुत लगजावे और किसी जगह "विदारीकंदं सुरया" ऐसा पाठ है उसका यह अर्थ करना—दूध बढानेके वास्ते विदारीकंदको मदिराके संग पीवे ॥ ८ ॥ चावल पुराने १ या सांठी चावल २ दूध ३ ऊख ४ कुशाकी जड ५ कांसकी जड ६ खरैटी ७ मूंदनी ८ तालमखाना ९ सपेद मुसली १० यह दश द्रव्य दूधके बढानेवाले हैं ॥ ९ ॥

यथोक्तांकारयेद्धात्रींनवयौवनसंस्थिताम् ॥ शुचिनीरोगाभकृशांजीववत्सामलंकृताम् ॥ १० ॥ मध्यप्रमाणांश्यामांगींविशेषाच्छीलशोभिताम् ॥कुलजांसु-[illegible]तांदुग्धांशुद्धचित्तामलोलुपाम् ॥ ११ ॥ सुंदरांगीं

हसद्वक्त्रांवत्सलांगर्ववर्जिताम् ॥ स्तन्यमस्याःपरिद-त्तंबालानांपुष्टिकारकम् ॥ १२ ॥ शुद्धेस्तन्येनिरो-गःस्यादन्यथारोगसंभवः॥ शीतलंविमलंक्षितमेकी-भावंजलेभवेत् ॥ नचभिद्यतितच्छुद्धंस्तन्यंफेनविव-र्जितम् ॥ १३॥ एतादृशेनबालस्यकश्चिद्रोगोनजा-यते॥यदावामातुरेवास्तिस्तन्यंशुद्धंप्रदापयेत्॥१४॥ मिथ्याहारविहाराभ्यांदुष्टावानादयःस्त्रियाः ॥ दूषय-तिपयस्तेनबालरोगस्यसम्भवः ॥ १५ ॥ तस्मात्प्र-यत्नतोधात्र्याःपथ्यमेकान्ततोहितम् ॥ तस्याश्चम-नसःकष्टंकदाचिन्नापिकारयेत् ॥ १६ ॥

इति धात्रीलक्षणम् ।

भाषा—बालकके वास्ते धाय जैसी शास्त्रमें लिखीहै वैसी करनी चाहिये कैसी होनी चाहिये उसको लिखतेहैं प्रथम जवानउमरकी हो दूसरे पवित्र रहती हो और उसके शरीरमें किसी तरहका रोग नहीं कृश नहीं हो बालक सब जीवते हों और आभूषण पहरे हुए हो ॥ १० ॥ न बहुत लंबा शरीरकी हो, न छोटे शरीरकी हो और सुंदर सर्वगात्र जिसके हों और विशेषतासे शीलवाली हो अच्छे कुलकी हो और जिसके सुंदर कुचहों अच्छा निर्मल दूध स्तनोंमें हो और खाने पीनेमें बहुत लोलुपा नहींहो ॥ ११ ॥ जिसका मनोहर अंगहो और हास्ययुक्त मुखहो स्नेहवाली हो और जिसको अभिमाननहो ऐसी धाय करनी चाहिये ऐसी धाय-का दुग्ध बालकको पुष्टि करता है॥ १२ ॥ स्त्रीका दुग्ध शुद्ध-

होनेसे बालकको रोग नहीं होता और अशुद्ध होनेसे रोगका उदय करता है इस वास्ते शुद्धदुग्धके लक्षण कहतेहैं। दुग्धशीतलहो, और जलमें डाला मिलजावे भेदको नही प्राप्त हो और जिसमें झाग नहींहो ऐसा दुग्ध शुद्ध होताहै॥ १३॥ऐसा दुग्ध पीनेसे बालकके कोई रोग नहीं होताहै और जो माताकाही दुग्ध शुद्ध हो,तब वही दुग्ध देना चाहिये ॥ १४ ॥ स्त्रीके मिथ्याआहारसे और मिथ्याविहारसे वातादिक दोष कुपित हुए दुग्धको दूषित करदेतेहैं उसी दूषित दुग्धसे बालककोरोगका संभव होजाताहै ॥ ॥ १५ ॥ इसी कारणसे धायको या माताको बडे जतनसे पथ्य पदार्थोंका सेवन करावे और उस धायके चित्तको किसी वक्त न बिगडनेदे खूब प्रसन्न रखे ॥ १६ ॥ इति धात्रीलक्षणम्॥

अमृतासप्तपर्णत्वक्काथःस्तन्यस्यसिद्धये ॥ पाययेदथवापाठायुक्तंनिष्काथ्यरोहितम् ॥ १७ ॥ भूनिंबपाठामधुकंमधूकंनिष्काथ्यतोयेमधुचार्धकर्षम् ॥ प्रक्षिप्यपीतंशिशुरोगशांतिदुग्धस्यशुद्धिंचकरोतिसद्यः ॥१८॥ पंचकोलमधुकैःसकुलत्थैर्बिल्वतृमूलतगरैःकुचलेपः ॥ निर्मितोहितकरोबहुवारंदुग्धशुद्धिमयमाशुकरोति ॥ १९ ॥ पाठारसांजनंमूर्वासुरदारुप्रियंगवः ॥ एभिःस्तनस्यैववर्ण्यंपूतिगंधिहरोमतः ॥ २०॥मुस्तापाठाशिवाकृष्णाचूर्णंदुग्धेनपाययेत् ॥ एतेनसहसाशुद्धिर्ध्रुवंस्तन्यस्यजायते ॥ २१॥ त्रायमाणामृतानिंबपटोलैस्त्रिफलान्वितैः ॥ स्तनप्रलेपतः

शीघ्रंस्तन्यशुद्धिःप्रजायते ॥ २२ ॥ पूर्वमालेपनंशु-
ष्कंप्रक्षाल्यनिर्मलाम्बुना ॥ स्तनौसदुग्धौविधिना
पाययेद्बालकंततः॥२३॥इतिस्तन्यशुद्धिः ॥शिशोरो-
गान्परीक्षेतरोदनान्मुखवर्णतः ॥ स्तनाकर्षणतश्चा-
पितत: कुर्य्याच्चिकित्सितम् ॥२४ ॥ मात्रयालंघये-
द्धात्रींशिशोर्नेष्टंविशोषणम् ॥ सर्वंनिवार्य्यतेभस्य
क्वचित्स्तन्यं न वारयेत् ॥ २५ ॥

भाषा–गिलोय, शातोन, दालचीनी,इनका काथ दुग्धकी शुद्धिके वास्ते स्त्रीको प्यावे अथवा कश्मीरी,पढा, बहेडाकी जड इनका काथ करके स्त्रीको प्यावे॥१७॥ चिरायता, कश्मीरी, पढा,मुलहटी, महुवा इनके काथमें आधा तोला सहत डालके स्त्री पीवे बालकका रोग शांतहो और दुग्धकी शुद्धि हो ॥ ॥१८॥ पीपल,पिप्पलीमूल,चव्य,चीता,सोंठ,मुलहटी,कुलथी, बेलकी जड,तगर इन औषधियोंको जलमें पीसके स्तनोंके ऊपर लेप कईवार करनेसे दुग्ध शुद्ध होजाताहै ॥ १९ ॥ कश्मीरी, पढा,रसोत,मोरवेल,देवदारु, प्रियंगुःइन द्रव्योंका स्तनोंपर लेप करनेसे यह लेप स्तनकी विवर्णताको और दुर्गंधको हरताहै ॥ ॥ २० ॥ नागरमोथा, कश्मीरी, पढा, हरडे, पीपल इनका चूर्ण दुग्धके संग पीनेसे शीघ्र दुग्धशुद्धि होजावे ॥ २१ ॥ त्रायमाण,गिलोय, नींबकी छाल,परवल,हरडेकी छाल,बहेडा, आंवला इन द्रव्योंका स्तनोंपर लेप करनेसे बहुतजल्दीदुग्धशुद्धि होजातीहै॥ २२॥पहिलेकालेप सूखाहुवाको निर्मल जलसे धोके

पीछे विधिपूर्वक बालकको स्तनपान करावे ॥ २३ ॥ इति दुग्धशुद्धिः॥ प्रथमबालकके रोनेसे, मुखवर्णसे,स्तनके खींचनेसे बालकके रोगका निश्चय करे पीछे चिकित्साको करे॥२४॥ बालककी बीमारीमें अनुमान माफिक धायको लंघन करावे बालककी शोषणी क्रिया न करे बालककीसर्व वस्तुका निवारणकरदे और दुग्धका निवारण किसी समयमें नहीं करे॥२५॥

वातेनध्मापितांनाभिसहजातुंडसंज्ञिताम् ॥ मारुतघ्नैः प्रशमयेत्स्नेहस्वेदोपतापनैः ॥ २६ ॥ मृत्पिंडेनाग्निवर्णेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा ॥ स्वेदयेदुत्थितां नाभिशोफस्तेनोपशाम्यति ॥ २७ ॥ दुग्धेनच्छागशकृतानाभिपाकेऽवगुंठनम् ॥ लेपंक्षीरेणवाशस्तं पर्णत्वग्रेणुचन्दनैः ॥ २८ ॥ नाभिपाकेनिशारोधः प्रियंगुमधुकैःकृतम् ॥ तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥ २९ ॥ बालोयोचिरजातः स्तन्यंगृह्णातिनैवतस्याशु ॥ सैंधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ॥ ३० ॥ गुदपाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् ॥ रसांजनंविशेषेणपानालेपनयोर्हितम् ॥ ३१ ॥ जातीप्रवालकुसुमानि समाक्षिकाणियोज्यानिबालकजनस्यमुखप्रपाके ॥ पाकेगुदस्यचरसांजनलोध्रचूर्णंयोज्यंभिषग्भिरुपदिष्टमिदंशिशूनाम् ॥ ३२ ॥ आम्रसाररजसासहसाऽस्तंयातिनैतिचशिशोर्मुखपाकः ॥ गैरिकेणम-

धुनाथचसर्वैः श्वेतसारखदिरांजनयोगैः ॥ २३ ॥ बालकस्यापिसुस्नेहैरभ्यंगंसमुपाचरेत् ॥ कोष्णेन पयसास्नानंफलवित्कारयेत्ततः ॥ २४ ॥ दुष्टग्रह- गृहीतानांनृणांनेष्टंतुदर्शनम् ॥ विशेषाद्रक्षयेद्दृष्टि- दोषंरक्षादिभिःशिशोः ॥ २५ ॥

इति बालकस्य नाभिगुदमुखपाकचिकित्सा ।

भाषा—अब बालकके रोगोंकी चिकित्सा लिखतेहैं-वायुसे बालककी नाभि फूल जातीहै और नाभिमें पीडा बहुत हो, उसको "तुंडसंज्ञक" नाभि कहतेहैं—अब चिकित्सा लिखितेहैं। वायुके दूर करनेवाले स्नेह, स्वेद, उपवापन इत्यादिकोंसे नाभिको स्वेदन करे ॥ २६ ॥ या मिट्टीके डलाको अग्निमें खूब तप्त करे जब अग्निकी माफिक उसका वर्ण होजावे तब उसको दूधमें बुझाके कपडामें लपेटके नाभिको सेके जिस्से नाभिका शोजा शांत हो जावे ॥ २७ ॥ अथवा बकरीकी विष्ठाको जलाके उस भस्मको नाभिपर लगाके हाथकी अंगुलीसे दबा- देनेमे अथवा नागरपान, दालचीनी, मेहँदीके बीज, लाल चंदन इनको दूधमें पीसके नाभिपर लेप करनेसे नाभिपाक अच्छा हो जाताहै ॥ २८ ॥ नाभिपाकमें हलदी, लोध, मेहँदी, मुल- हटी इन द्रव्योंसे तैल पकाके लगावे अथवा इन्हीं द्रव्योंका र्ण करके नाभिपर लगावे ॥ २९ ॥ जो बालक जन्म होने बाद बहुत कालतक दूध न पीवे तब सेंधव नमक, आंवला, सहत, घृत, हरडेकी छाल इन द्रव्योंका कल्क करके बालककी

जिह्वाको घर्षण करे ॥ ३० ॥ बालककी गुदापाक होनेसे पित्तनाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। और रसोत पीनेमें लगानेमें विशेषता करके हितकारी है ॥ ३१ ॥ बालकके मुखपाकरोगमें चमेलीके पत्ते और फूल दोनों पीसके सहतमें मिलाके मुखमें लगाना चाहिये अथवा इसको उबालके और छानके सहत डालके कुल्ली कराना चाहिये और बालककी गुदापाकमें रसोत, लोध इनका चूर्ण अवगुंठन करना चाहिये ॥ ३२ ॥ आम्रसारके चूर्णसे अथवा चमेलीके पत्तोंके चूर्णसे या गेरू और सहतसे अथवा कपुर, कत्था,अंजन यह चार योगहैं अलहदा अलहदासे बालकका मुखपाक जाता रहताहै और समस्त द्रव्योंसेभी जाता रहताहै ॥ ३३ ॥ और बालकको अच्छे अच्छे चंदनादिक लाक्षादिक तैलोंसे अभ्यंग कराना चाहिये पश्चात् गरम जलसे स्नान करा देना चाहिये ॥ ॥ ३४ ॥ और बालकको दुष्टग्रहगृहीत पुरुषोंका दर्शन नहीं करावे और विशेषताकरके मंत्र यंत्रोंसे बालकके दृष्टिदोष नहीं होने देवे ॥ ३५ ॥

इति बालकस्य नाभिगुदमुखपाकचिकित्सा ।

अथ शिशूनां ज्वरचिकित्सा लिख्यते ॥ मुस्ताभयानिंबपटोलयष्टीकाथः शिशूनां ज्वरनाशकारी ॥तद्वद्गुडूची विहितश्चसारः सुप्रत्ययोयं मधुनावलीढः ॥ ३६ ॥ सितामधुभ्यांकटुकीचलीढासाध्मानमुग्रंज्वरमाशुहन्यात् ॥ तत्कल्कलेपश्चकृतः शिशूनां

मुहुर्मुहुर्दोषविनाशहेतुः ॥ ३७ ॥ क्वाथःकृतःपद्म-
कनिंबधान्यच्छिन्नोद्भवालोहितचंदनोत्थः ॥ज्वरंज-
येत्सर्वभवं कृशानुधात्रीशिशुभ्यां प्रकरोतिपीतः ॥
॥ ३८ ॥ अमृतैकोपितानीरे यावद्यामाष्टकं भवेत् ॥
शिशूनांशमयत्याशु सर्वदोषभवंज्वरम् ॥ ३९ ॥
यष्टीमधुतुगाक्षीरीलाजांजनसिताकृतः ॥ लेहःप्रद-
त्तोबालानामशेषज्वरनाशनः ॥ ४० ॥ क्वाथः
स्थिरागोक्षुरविश्ववालक्षुद्राद्वयच्छिन्नरुहाकिरातैः ॥
वातज्वरंसंशमयेत्प्रपीतोबालेनधात्र्याचकृशानुका-
री ॥ ४१ ॥ पंचमूलीकृतः क्वाथःपीतो वातज्वरा-
पहः ॥ तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्यावलाभवः ॥
॥ ४२ ॥ गुडूचीसारिवोशीरचन्दनोत्पलपद्मकैः ॥
परूपमधुकाश्मर्यधन्याकैर्विहितोजयेत् ॥ ४३ ॥

भाषा–अब बालकोंके ज्वरकीचिकित्सा लिखतेहैं–नागर-
मोथा,हरडेकी छाल,नीमकीछाल,पलवल,गिलोय इन औषधि-
योंका क्वाथ बालकोंके ज्वरको नाश करताहै ऐसेही गिलोयका
चूर्ण या स्वरस सहतसे चाटनेसे ज्वरको नाश करताहै यह प्रत्यक्ष
फलदेनेवालाहै ॥ ३६ ॥ मिसरी सहतसे कुटकीके चूर्णको
चाटे तो आध्मानसहित ज्वरको नाशकरे और कुटकीका
कल्कभी बालकके लेप करनेसे ज्वरका नाश करताहै ॥ ३७॥
पद्मकाष्ठ, नींबकी छाल,गिलोय,लालचन्दन इन द्रव्योंका क्वाथ
बालक,बालककी माताको प्यानेसे त्रिदोषके ज्वरको दूरकरे

भूखको पैदाकरे ॥ ३८ ॥ खाली गिलोय आठपहर भिगोके पीसके पीनेसे बालकके सब तरहके ज्वरको दूर करतीहै ॥ ॥ ३९ ॥ मुलहटी, सहत, वंशलोचन, धानकी, खील, रसोत कोई वैद्य अंजन करके शुद्ध सुरमाको ग्रहण करतेहैं और मिश्री इनका अवलेह बालकको देनेसे अशेषतासे ज्वरका नाश करनेवाला है ॥ ४० ॥ शालपर्णी, गोखरू सूंठ, नेत्रवाला, दोनों कटेहली छोटी बडीकी जड, गिलोय चिरायता इनकरके किया हुवा क्वाथ बालकको और धायको प्यानेसे बालकके वातज्वरको शमनकरे अग्निको तेजकरे ॥ ४१ ॥ लघुपंचमूलका क्वाथ पान किया वातज्वरको दूर करताहै। शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेहली, बडी कटेहली, गोखरू, यह लघुपंचमूलकद्रव्यहै और ऐसेही गिलोय मुनक्का, सिरयाई, खरैंटी, इनका क्वाथ वातज्वरको दूर करताहै ॥ ४२ ॥ गिलोय, सिरयाई, खस, लाल चंदन, नीलोफर, पद्मकाष्ठ, फालसा, मुलहटी, गंभारी, धनियां इन द्रव्योंका किया काथ पीनेसे वातज्वरको जीतताहै ॥ ४३ ॥

शारिवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापद्मकपर्पटः ॥ क्काथःपीतोनिहंत्याशुशिशूनांपैत्तिकंज्वरम् ॥४४॥ मुस्तापर्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम् ॥ शीतंवारिनिहंत्याशुतृष्णादाहवमिज्वरान्॥ ४५॥मधूकचंदनंद्राक्षाधान्यकंसदुरालभम्॥एतैःक्काथःकृतोहन्याद्दाहंवातज्वरंतथा॥४६॥मुस्तकंचन्दनंवासाह्रीबेरंयष्टिकामृता॥ एषांक्काथोऽस्रपित्तघ्नस्तृष्णादाहज्वरापहः ॥ ४७ ॥

त्रासापर्पटकोशीरनिंबभूनिंबसाधितः ॥ क्वाथोहं-तिवमिश्वासकासपित्तज्वराञ्छिशोः॥४८॥ अभया-मलकीकृष्णाचित्रकोयंगणोमतः ॥ दीपनः पाचनो भेदीसर्वश्लेष्मज्वरापहः ॥ ४९ ॥ कट्फलंपुष्करंशृं-गीपिप्पलीमधुनासह॥ एषांलेहोज्वरंश्वासंकासंमंदा-नलंजयेत् ॥ ५० ॥ कटुकंकट्फलंशृंगीपुष्करंपिप्प-लीतथा ॥ समस्तानेकशोवापिद्विशोवापिभिषग्वरः ॥ ५१ ॥ एतांचूर्णीकृतानद्यान्मध्वार्द्रकरसप्लुतान् ॥ कफज्वरारुचिश्वासच्छर्दिशूलापहञ्छिशुः ॥ ५२ ॥ क्षौद्रोपकुल्याःसंगस्तुश्वासकासज्वरापहः ॥ प्लीहा-नंहंतिहिक्कांचबालानांतुप्रशस्यते ॥ ५३ ॥

भाषा-सिरयाई, नीलोफर, गंभीरी,गिलोय, पद्मकाष्ठ, पित्त-पापडा, इनकरके किया काथ पान करनेसे बालकोंके पित्त-ज्वरको नष्ट करताहै ॥ ४४ ॥ नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पद्मकाष्ठ इन द्रव्यों करके सिद्ध किया काथ शीतल करके पान करनेसे प्यासको, दाहको, वमनको, ज्वरको शीघ्र नष्ट करताहै ॥ ४५ ॥ मुलहटी,लालचंदन, मुनक्का, धनियां, धमासा इन करके किया काथ पीनेसे दाहको वातज्वरको नाश करताहै, ॥ ४६ ॥ नागरमोथा, लालचंदन, वांसाके पत्ते, नेत्र वाला, मुलहटी, गिलोय, इनका काथ रक्तपित्तका, तृषाका, दाहका,ज्वरका नाश करनेवालाहै ॥ ४७ ॥वांसा, पित्तपापडा, खस, नींबकी छाल,चिरायता, इन करके साधित किया काथ

बालकको प्यानेसे वमनको, श्वासको, कासको, पित्तज्वरको नष्ट करताहै ॥ ४८ ॥ हरडैकी छाल, आँवला, पीपल छोटी, चीता इन चार औषधियोंका योग यह दीपन पाचनगण कहाहै दस्तावरहै, संनिपातज्वरको; कफज्वरको, नष्ट करताहै ॥ ४९ ॥ कायफल, पोहकरमूल, काकडासींगी, इनका सहतसे चाटना ज्वरको, श्वासको, कासको, मंदाग्निको जीवताहै ॥ ५० ॥ मिरच, कायफल, काकडासींगी, पोहकरमूल, पीपल छोटी, इन द्रव्योंमेंसे, एकको या दोको या सबको चूर्णकरके अदरखका अर्क और सहतके संग चाटनेसे बालकके कफज्वर, अरुचि, श्वास, छर्दी, शूल यह सर्व नष्ट होजातेहैं ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छोटी पीपलको सहतसे चाटना श्वास, कास और ज्वर इनको हर्ताहै प्लीहाको, हिचकीको नष्ट करताहै. इसका चाटना बालकको बहुत अच्छाहै ॥ ५३ ॥

मधुकंशारिवाद्राक्षामधूकंचंदनोत्पलम् ॥ काश्मरी पद्मकंलोध्रंत्रिफलापद्मकेसरम् ॥ ५४ ॥ परूपकं मृणालंचन्यसेदुत्तमवारिणि ॥ मधुलाजासितायुक्तंतत्पीतसुपितंनिशि ॥ ५५ ॥ वातपित्तज्वरंदाहं तृष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान् ॥ शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूतमिवमारुतः ॥ ५६ ॥ केरातोजलदश्छिन्नापंचमूलीलघुस्तथा ॥ एषांकषायोहंत्याशुवातपित्तोत्तरं ज्वरम् ॥ ५७ ॥ मुस्तापर्पटकंछिन्नाकिरातंनिश्वभेषजम् ॥ एषांकषायोदातव्योवातपित्तज्वरापहः ॥

॥ ५८ ॥ उशीरं मधुकंद्राक्षाकाश्मरीनीलमुत्पलम् ॥ परूषकंपद्मकंचमधुकंमधुकंबला ॥ ५९ ॥ एभिःकृतःकषायोयंवातपित्तज्वरंजयेत् ॥ प्रलापमूर्च्छासंमोहतृष्णापित्तज्वरापहः ॥ ६० ॥ त्रिफला पिचुमंदश्चपटोलंमधुकंबला ॥ एभिः क्वाथः कृतः पीतःपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ ६१ ॥ अमृतेंद्रयवोरिष्टंपटोलंकटुरोहिणी ॥ नागरंचंदनंमुस्तंपिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ ६२ ॥ अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणम् ॥ ६३ ॥

भाषा—मुलहटी, सिरयाई, मुनक्का, महुवाके पुष्प, लालचंदन, नीलोफर, गंभारी, पद्मकाष्ठ, लोध हरडैकी छाल, बहेडा आंवला, कमलगट्टा, नागकेसर, पद्मकेसर, इस पदसे कमल, केसरकोभी ग्रहण करतेहैं ॥ ५४ ॥ फालसा, कमलनाल, धानकी खील, मिसरी, इन द्रव्योंको रात्रिमें भिगोरक्खे प्रातःकाल कपडासे छानके शहद डालके प्यानेसे बालकके वातपित्तज्वरको, दाहको, प्यासको, मूर्च्छाको अरुचिको, भ्रमको रक्तपित्तको शमन करताहै,जैसे मेघको वायु शमन कर देता है तद्वत् ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, दोनों कटेहली, गोखरू, इनका क्वाथ वातपित्ताधिक ज्वरको नष्ट करताहै ॥ ५७ ॥ नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता, सोंठ इनका क्वाथ बाल-

कल्क देनेसे वातपित्तज्वरको नष्ट करताहै ॥ ५८ ॥ रास, मुलहटी, मुनक्का, गंभारी; नीलोफर, फालसा, पद्मकाष्ठ, मुलहटी, महुवाके फूल, खरैंटी ॥ ५९ ॥ इन द्रव्योंका किया क्वाथ पीनेसे वातपित्तज्वरको जीतताहै, प्रलाप, मूर्च्छा, मोह, तृषा, पित्तज्वर, इनको नष्ट करताहै ॥ ६० ॥ अन्योपायः ॥ हरडै वडी, वहेडा, आंवला, नींवकी छाल, पलवल, मुलहटी, खरैंटी, इन द्रव्योंकरके किया क्वाथ पियाहुवा पित्तश्लेष्मज्वरको नष्ट करताहै ॥ ६१ ॥ गिलोय, इंद्रजौ, नींवकी छाल, पलवल, कुटकी, सूंठ, लालचंदन, नागरमोथा, इन द्रव्योंका क्वाथ करके पीपलका चूर्ण उसपर बुरकाके बालकको प्यावे ॥ ६२ ॥ यह अमृताष्टक पित्तश्लेष्मज्वरको, हल्लासको, अरुचिको, छर्दिको तृषाको, दाहको निवारण करताहै ॥ ६३ ॥

मुस्तामृतापर्पटपुष्कराह्वैः पटोलधन्याककिराततिक्तैः ॥ सचंदनोशीरवलाजकाख्यैः क्वाथःपरंपित्तकफज्वरघ्नः ॥ ६४ ॥ हृल्लासतृष्णामोहांश्चारुचिंदाहं चच्छर्दनम् ॥ पार्श्वव्यथांहरेत्सद्यःप्रयोगोयंसुशोभनः ॥ ६५ ॥ धान्याकचंदनपद्मकमुस्ताशक्रयवामलकैःसपटोलैः ॥शीतकषायमसुंखलुदद्याद्बालकपित्तकफज्वरहृत्स्यात्॥६६॥ वासारसःक्षौद्रसितासमेतोज्वरंहरेत्पित्तवलासजातम्॥ श्वासंसकासंचवमिंसदाहंसकामलंहंतिसरक्तपित्तम् ॥ ६७ ॥ सारग्वधः सातिविषः समुस्तस्तिक्ताकषायोज्वरमाशुहन्यात्॥

सामंसशूलंसवमिंसदाहं साध्मानबंधंसकफंसवातम् ॥ ६८ ॥ किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् ॥ चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥ ६९ ॥ मुद्गतंडुलसंसिद्धंकेवलैर्वामकुष्ठकैः ॥ पथ्यमत्रभिषग्दद्याद्यूषंवातकफज्वरे ॥ ७० ॥दशमूलीकृतःक्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥ मोहंसंशमयेत्तद्वत्संनिपातंज्वरंतथा ॥ ७१ ॥

भाषा—नागरमोथा,गिलोय,पित्तपापडा,पोहकरमूल,पलवल, धनियां,चिरायता,लालचन्दन,खस, खैरटी,नेत्रवाला इनों करके किया क्वाथ पीनेसे पित्तकफज्वरका नाश करताहै॥६४ ॥ हृल्लासको,तृष्णाको, मोहको,अरुचिको,दाहको,छर्दिको,पार्श्वशूलको तत्काल हरताहै,यह प्रयोग बहुत सुंदर वैद्योंने कहाहै ॥ ॥६५॥अन्यः॥धनियां,लालचन्दन,पद्माख,नागरमोथा,इंद्रजव आंवला,पलवल इन द्रव्योंका क्वाथ ठंढाकरके प्यानेसे बालकके पित्तकफज्वरको हरताहै ॥६६॥ बांसाके पत्तोंका पुटपाकद्वारा रस निकालके,मिसरी, शहतके संग चाटनेसे बालकका पित्तकफज्वर, श्वास,कास,छर्दी, दाह, कामला, रक्तपित्त इन सबको शीघ्र हर्ताहै ॥ ६७ ॥ अन्यः ॥ अमलतास, अतीस, नागरमोथा कुटकी, इनका क्वाथ शूलसहित कच्चाज्वरको, वमनको दाहको,अफाराको,बंधाको,कफको, वायुको नष्ट करताहै६८॥ चिरायता, नागरमोथा,गिलोय सूंठ इनको वैद्यचातुर्भद्र कहतेहैं क्वाथ करके पीनेसे वातश्लेष्मज्वरको नष्टकरताहै ॥६९॥ मूँग

चावल करके सिद्धकिया यूप अथवा केवल मोठकरके किया यूप वातकफज्वरमें पथ्यहै बालकको ज्वरमें वैद्य देवे ॥७०॥ दशमूल करके कियाकाथ पीपलका चूर्ण ऊपर डालके बालकको प्यानेसे मूर्छाको संनिपातज्वरको शमन करताहै॥७१ ॥

छिन्नासटीपुष्करमूलतिक्ताः शृंगीसपाठामृतवल्लरीच॥ दुरालभाविश्वकिराततिक्ताः समस्तदोपज्वरहृद्गणोयम् ॥ ७२ ॥ भूनिंबदारुदशमूलमहौपधाब्दतिक्तेंद्रबीजधनिकेभकणाकपायः॥तंद्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासादियुक्तमखिलंज्वरमाशुहंति ॥ ७३ ॥ वासाव्याघ्रीकणालेहःशीतज्वरविनाशनः ॥ तद्वत्क्षुद्रामृतानंतातिक्तभूनिंबसाधितः॥७४॥ गुडूचीविहितक्काथःकणाचूर्णसमन्वितः। ऐकाहिकंज्वरंहंतिकासश्वासादिदूपितम्॥७५॥द्राक्षापटोलत्रिफलापिचुमंदवृपैः कृतः॥ क्काथऐकाहिकंहंतिपरार्थमिवदुर्जनः ॥ ॥ ७६ ॥ आमंत्र्य पूर्वंशुचिना गृहीतं मयूरमूलं करकोष्टबद्धम् ॥प्रातस्तथासूर्य्यदिनेनिहन्यादेकाहिकंशोणितसूत्रबद्धम् ॥ ७७ ॥ ऊर्णनाभ्याकृतं जालंरक्तसूत्रसमन्वितम् ॥ मिष्टतैलमृतंकृत्वाक-

---

१ दशमूललक्षणम्—श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटलागणिकारिका ॥ शोनाकः पचभिश्चैतैः पंचमूलं महत्मतम् ॥ १ ॥ शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ॥ गोक्षुरः पंचभिश्चैतैः कनिष्ठं पंचमूलकम् ॥ २ ॥ उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ॥

ज्वलंतेनकारयेत ॥तेनांजिताक्षः क्षिप्रेणहन्यादेकाहशोज्वरान् ॥ ७८ ॥ ज्वरं भूताभिषंगोत्थंरक्षामंत्रादिभिर्जयेत् ॥ विषघ्नौषधयोगेनविषोत्थमपिबुद्धिमान् ॥ ७९ ॥

भाषा–गिलोय, कचूर, पोहकरमूल, कुटकी, काकडासींगी, कश्मीरी पद्मा, गिलोय, धमासा, सोंठ, चिरायता, नींबकी छाल इन औषधियोंका गण सब दोषोंका, सर्व ज्वरोंका नाशकरनेवालाहै । इस योगमें दोबार गिलोय पढीहै इसवास्ते दूनी लेनी चाहिये ॥ ७२ ॥ अन्यः ॥ चिरायता, देवदारु, दशमूल, सूंठ, नागरमोथा, कुटकी, इंद्रजौ, धनियां, गजपीपल इनका क्वाथ तंद्रा, प्रलाप, कास, अरुचि, दाह, मूर्च्छा, श्वास इन करके युक्त ज्वरको शीघ्र नाश करताहै ॥७३॥ वांसा, कटहलीकी जड, पीपल इनका अवलेह शीतज्वरको नाश करताहै और कटेहलीकी जड, गिलोय, जवासा, कुटकी, चिरायता, इनोंकरके किया क्वाथ भी उसी तरह शीतज्वरको नाश करताहै ॥७४॥ अन्यः ॥ गिलोयका क्वाथ पीपलके चूर्णसहित पीनेसे कासश्वासादिकों करके दूषित ऐकाहिक ज्वरको नष्ट करताहै॥७५॥ अन्यः ॥ मुनक्का, गिलोय, हरडैकी छाल, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, वांसाके पत्ते इन करके किया क्वाथ ऐकाहिक ज्वरको ऐसे नाश करताहै कि जैसेदुर्जन परद्रव्यको नष्ट करदेताहै ॥ ७६ ॥ अन्योपायः ॥ शनिवारको मयरशिखाजडीको निमंत्रित कर आवे रविवारको प्रातःकाल

उपाडके लेआवे फिर लाल डोरीसे हाथ कमरमें बांधनेसे ऐकाहिक ज्वर नष्ट होजाताहै ॥ ७७ ॥ अन्यः ॥ मकडीका जालाको लेके लाल सूत ऊपर लपेटके बत्ती बनाले फिर तिलोंके तेलमें भिगोके कज्जल लोहेकी पत्तीपर उतारले वह कज्जल नेत्रमें घालनेसे ऐकाहिकादिक सब ज्वरको नष्ट करता है॥७८॥ भूतादिकोंके अभिनिवेशसे ज्वरहो उसको रक्षा मंत्रादिकोंकरके जीते और जो विषैली वस्तु खानेसे ज्वरहो उसको विषके नाश करनेवाली औषधिसे जीते॥ ७९ ॥

निंबपत्रामृतानन्तापटोलैर्ङ्ययवैःकृतः ॥ क्वाथः सततकंहन्यात्सुप्रभुर्व्यसनंयथा ॥ ८० ॥ गुडूचीचन्दनोशीरधान्यनागरतोयदैः ॥ क्वाथस्तृतीयकंहन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ॥ ८१ ॥ पलंकपावचाकुष्ठं गजचर्म्मोविचर्मंच ॥ निंबस्यपत्रंमाक्षीकंसर्पिर्युक्तंतु धूपनम् ॥ ज्वरवेगंनिहंन्याशुबालानांतुविशेपतः ॥ ॥ ८२ ॥ रसोनहिंगुलवणैःशृंगीमरिचमाक्षिकैः ॥ धूपः सर्वग्रहघ्नोयं कुमाराणां ज्वरापहः ॥ ८३ ॥ निर्मोकामरदारुहिंगुमरिचारिष्टच्छदंमाक्षिकंनिर्माल्यंनरकेशसर्पपवचागंधंरसोनःशिला ॥ यष्टी गुग्गुलुकुष्ठपिच्छलवणामार्जारविष्टाघृतंसजोरुद्रजटार्कपत्रजलदंधूपोवरोयंमहान् ॥ ८४ ॥ निंबकुष्टवचायष्टिसिद्धार्थकपलंकपैः ॥ सर्पिर्लवणसर्पत्वग्यवैर्धूपोज्वरापहः ॥ ८५ ॥ निर्गुण्डयाःसहदे-

व्याघ्रकटौबद्धंजटाद्वयम् ॥ प्रातरादित्यवारेचसर्वज्वरविनाशकृत् ॥ ८६ ॥ कन्याकार्तिकसूत्रेणबद्धापामा मूलिका ॥ ऐकाहिकंज्वरं हंतिशिखायामपि वेगतः ॥ ८७ ॥ कर्णेबद्धारवौश्वेततुरंगरिपुमूलिका॥ सर्वज्वरहराश्वेतमंदारस्यचमूलिका ॥ ८८ ॥ काकमाचीशिफाकर्णेबद्धात्रिज्वरापहा ॥ पाणिस्थंवृकवंदाकमूलंवितनुतेशिवम् ॥ ८९ ॥ ॐनमोवानरस्यमुखंवोरमादित्यसमतेजसम् ॥ तस्यस्मरणमात्रेणज्वरंनश्यतितत्क्षणम् ॥ ९० ॥

इति कल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे ज्वरहरणोपायकथनं नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

भाषा—अन्यः ॥ नीमकी छाल, पतरज,गिलोय, जवासा, पलवल, इंद्रजौ, इन द्रव्योंकरके किया क्वाथ सततज्वरको नष्ट करता है जैसे ईश्वर सर्व दुःखोंको नाश करतेहैं एवम् ॥८०॥ गिलोय, लालचंदन, खस, धनियां, सूंठ, नागरमोथा, इनकरके किया काथमें मिसरी, सहत डालके बालकको प्यानेसे तार्तीयक ज्वरको नष्ट करता है ॥८१॥ गूगल, वच, कूट, हाथीका चमडा, भेड़का चमडा, नीमके पत्ते, सहत, घी, इन सब द्रव्योंको कूटके धूप देनेसे ज्वरके वेगको शीघ्र नाश करे है । बालकोंका विशेषतासे ज्वर नाश करे है ॥ ८२ ॥ अन्यो धूपः॥ लहसन, हींग, नमक, काकड़ासींगी, मिरच, सहत, इन करके किया धूप संपूर्ण ग्रहोंका नाश करनेवाला है और

बालकोंका ज्वर नाश करनेवाला है ॥८३॥ अन्योबृहद्धूपः॥ सांपकी कांचली, देवदार, हींग, मिरच, नींबकेपत्ते, सहत, आकके पुष्प, मनुष्यके मस्तकके बाल, सिरसम, वच, गंधक, लहसन, मनशिल, मुलहटी, गूगल, कूट, मोरपंख, नमक, बिल्लीकी विष्ठा, घृत, राल, वालछड, आकके पत्ते, नागरमोथा इन द्रव्योंकी धूंप बहुत श्रेष्ठहै बालकके सर्व दोषोंको नष्टकरती है ॥८४॥ अन्योधूपः॥ नींबके पत्ते, कूट, वच, मुलहटी, राई, गूगल, घृत, नमक, सांपकी कांचली, जौ अन्न इनकी धूप सर्व ज्वर नष्ट करनेवाली है ॥ ८५ ॥ रविवारके दिन प्रातःकाल निर्गुंडीकी जडको और सहदेईकी जड़को लाके कमरमें बांधनेसे सब ज्वरोंका नाशकरैहै ॥ ८६ ॥ कन्याके पास सूत कताके उसकी डोरी करके ऊंगाकी जड चोटीमें बांधनेसे ऐकाहिक ज्वरको नाश करतीहै ॥ ८७ ॥ रविवारके दिन सपेद कनेरकी जड या सपेद आककी जड़ लाके कानमें बाँधनेसे सब तरहके ज्वरको हरती है ॥ ८८ ॥ मकोईकी जड कर्णमें बांधनेसे रात्रिमें होनेवाले ज्वरको नष्ट करतीहै और मूपाकन्नीकी जडको या बांदाकी जडको हस्तके बांधनेसे ज्वरको नाश करै है, बालकको आनंद पैदा करतीहै ॥ ८९ ॥ कोरी मिट्टीकी ढकनीलेके उसके ऊपर यह मंत्र लिखके शीतज्वर आताहो तो अग्निकी अँगीठीमें रखके बीमारकी खट्टातले रखदे ॥ और उष्ण ज्वरको तो जल पात्रमें रखके रोगीकी खट्टातले रखदे ज्वर चला जावे बालक

अच्छा हो जावे मन्त्रका श्लोक मूलमें लिखाहीहै ॥ १० ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायां द्वादशः पटलः १२

अथ बालानामतीसारोपायोलिख्यते ॥ लोध्रंसमंगा-जलधातकीभिःसमानिताभिर्विहितः कषायः ॥ बा-लातिसारंसहसानिहन्यादेकाथमुस्तामधुनावलीढा॥ ॥ १ ॥ बिल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रंग-जपिप्पलीच ॥ क्काथावलेहौमधुनाविमिश्रौबालेतु योज्यावतिसारितेषु ॥ २ ॥ मुस्ताविषाशक्रयवांबु-भिश्चशिशोरतीसारहरःकषायः ॥ आम्रांम्रिवल्कस्व-रसश्चतद्वद्विद्धयंवामधुनावलीढम् ॥ ३ ॥ नाग-रातिविषामुस्ताकुटजैःक्कथितंजलम् ॥ प्रातःपीतंकु-माराणांशीघ्रंसर्वातिसारनुत ॥ ४ ॥

भाषा—अब बालकोंके अतिसारकी चिकित्सा लिखतेहैं ॥ लोध,मँजीठ,नेत्रवाला, धायके फूल इनको समानलेके क्काथब-नाके बालकको प्यानेसे बालकका अतिसार शीघ्र नष्ट होजाता है अथवा खाली नागरमोथाके रज शहतसे चाटनेसे बालकका अतिसार जाता रहताहै ॥ १ ॥ बेलगिरी, धायके फूल, नेत्र-वाला, लोद,गजपीपल इन द्रव्योंका क्काथ या अवलेह बनाके उसमें शहद डालके बालकोंके अतिसारमें देने चाहिये ॥ २ ॥ अन्यच्च । नागरमोथा, अतीस,इन्द्रजौ, नेत्रवाला इन द्रव्योंका

क्वाथ बालकके अतिसारको हरताहै, अथवा आमकी जडका स्वरस बालकके अतिसारको हरता है वैसे ऋद्धि वृद्धि दोनों शहदसे चाटनेसे अतिसारको नष्ट करतीहै ॥ ३ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ,अतीस,नागरमोथा,कूडाकी छाल इन द्रव्योंकरके क्वथित जल बालकोंको प्यानेसे सब तरहके अतिसारको शीघ्र नष्ट कर देता है ॥ ४ ॥

पिष्ट्वापटोलमूलंचशृङ्गवेरंवचामपि ॥ विडंगान्यजमोदांचपिप्पलींतंडुलान्यपि ॥ ५ ॥ एतान्यालोड्य सर्वाणिसुखंतप्तेनवारिणा ॥ आमप्रवृत्तेऽतीसारेकुमारं पाययेद्भिषक् ॥ ६ ॥ नागरातिविषामुस्ताक्वाथः स्यादामपाचनः ॥ विषंवासगुडंलीढंमाधुनामहरं परम् ॥ ७ ॥ मुस्तंमोचरसःपाठाबिल्वंलोध्रंसनागरम् ॥ तक्रेणपीतंदुर्वारंशिशोर्हन्त्युदरामयम् ॥ ८ ॥ ॥ इत्यतीसारः ॥ हरिद्राद्वययष्टयाह्वासिंहीशक्रयवैःकृतः ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नः कषायः स्तन्यदोषजित् ॥ ९ ॥ घनकृष्णारुणाशुंठीचूर्णंक्षौद्रेण योजितम् ॥ शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासश्वासवमीर्जयेत् ॥ १० ॥ धातकीबिल्वधन्याकलोध्रेन्द्रयववालकैः ॥ लेहःक्षौद्रेणबालानांज्वरातीसारवांतिहृत् ॥ ॥ ११ ॥ इतिज्वरातिसारः ॥ यवानीजीरकंव्योपंकुटजंविश्वभेषजम् ॥ एतन्मधुयुतंलीढंबालानां ग्रहणींजयेत् ॥ १२ ॥

भाषा—पळवलकी जड, सूंठ, बच, वायविडंग, अजमोद, पीपल, छोटी सांठीचावल ॥ ५ ॥ यह सब द्रव्य पीसके जलमें छानके जरा गरम करके बालकको आमातीसारमें पान करावे ॥ ६ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, अतीस, नागरमोथा इनका क्वाथ आमका पकानेवालाहै, अथवा अतीस गुड दोनों समान सहतसे चाटे हुये आमको हरते हैं ॥ ७ ॥ नागरमोथा, मोचरस, पाठा, बेलगिरी, लोध, सूंठ इनका चूर्ण तक्रसे पान किया बालकके दुर्वार अतीसारको नाश करताहै ॥ ८ ॥ इत्यतीसारचिकित्सा ॥ हलदी, दारुहलदी, मुलहटी, कंटकारीकी जड, इंद्रजौ इन द्रव्योंकरके सिद्ध किया क्वाथ बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करताहै. और दुग्धदोषकोभी नष्ट करताहै ॥ ९ ॥ नागरमोथा, पीपल, मँजीठ, सूंठ इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकके ज्वरातिसारको नष्ट करताहै. और खांसी श्वासकोजीतताहै ॥ १० ॥ धायके फूल, बिल्व, धनियां, लोध, इंद्रजौ, नेत्रवाला इन छह द्रव्योंका चूर्ण करके सहतसे चाटे तो बालकोंके ज्वरातिसारको और वमनको हरताहै ॥ ११ ॥ इति ज्वरातिसार चिकित्सा ॥ अजवायन, सुपेदजीरा, सूंठ, मिरच, पीपलछोटी, कूडाकी छाल, सूंठ इन सब द्रव्योंका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालकोंकी ग्रहणीको जीतताहै ॥ १२ ॥

पिप्पलीविजयाशुंठीचूर्णंमधुयुतंभिषक् ॥ दत्त्वानिर्जित्यग्रहणींपूजांनियतमाप्नुयात् ॥ १३ ॥ कृष्णामहौषधंबिल्वंकुटजंसयावान्वितम् ॥ मधुसर्पिर्युतंलीढंवातलांग्रहणींजयेत् ॥ १४ ॥ नागरंमुस्त-

कंबिल्वंचित्रकंग्रंथिकंशिवा ॥ चूर्णमेतन्मधुयुतं कफजांग्रहणींजयेत् ॥ १५ ॥ सगुडंनागरंविल्वंयः खादतिहिताशनः ॥ त्रिदोपग्रहणीरोगान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥ १६ ॥ मुस्तकातिविषाविल्वंचूर्णितंकौटजंतथा ॥ क्षौद्रेणलीढाग्रहणींसर्वदोषोद्भवां जयेत् ॥ १७ ॥ इतिसंग्रहणी ॥ यवानीनागरंपाठादाडिमंकुटजंतथा ॥ चूर्णोयंगुडतक्राभ्यांपीतोऽर्शःशमनः परः ॥ १८ ॥ अजाजीपौष्करंपाठाग्र्यूपणं दहनः शिवा॥ गुडेनगुटिकाकार्यासर्वार्शोनाशनीपरा ॥ १९ ॥नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात्॥ दधिस्वरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंति रक्तवहाः ॥ २० ॥ कुटजंकौटजंवीजंकेसरंपद्मकेसरम् ॥ एतन्मधुयुतंलीढंरक्ताशोंनाशनंपरम् ॥ २१ ॥ एवंवाकौटजंबीजंरक्तार्शोमधुनाहरेत् ॥ तद्वन्मुस्तामोचरसकपित्थच्छदजोरजः ॥ २२ ॥ इत्यर्शः ॥

भाषा—पीपल, भांग, सूंठ इनका चूर्ण सहतसे बालकको चटानेसे वैद्य संग्रहणीको जीतके पूजाको यशको प्राप्त होताहै॥ ॥ १३ ॥ अन्यच्च ॥ पीपल, सूंठ, बेलगिरी, कूडाकी छाल, अजवायन इनका चूर्ण करके वृतमें किंचित् मरकोके सहतनें चाटनेसे वायुकी संग्रहणी नष्ट करताहै ॥ १४ ॥ अन्यच्च ॥ सूंठ, नागरमोथा, बेलगिरी, चीता, पीपलामूल, हरडै इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफकी संग्रहणीको जीतताहै ॥ १५ ॥ द्वि

वस्तुका खानेवाला,गुड, सूंठ, बिल्व इनके अवलेहको खाता है वह त्रिदोषकी संग्रहणीसे मुक्त होजाताहै इसमें संदेह नहीं॥ ॥ १६॥ अन्यच्च ॥ नागरमोथा,अतीस,बिल्व,इंद्रजौ इनका चूर्ण सहतसे चाटके त्रिदोषकी ग्रहणीको जीतलेवे ॥ १७ ॥ इति संग्रहणीचिकित्सा ॥ अजवायन, सूंठ, पाठा,अनारदाना, कुडाकी छाल इनका चूर्ण गुड तक्रसे पान किया ववासीरको शमन कर्त्ताहै ॥ १८ ॥ अन्यच ॥ जीरासुपेद, पोहकरमूल, कश्मीरीपट्टा, सूंठ, मिरच, पीपल, चीता, हरडै इनका चूर्ण करके गुडसे गोली बनाके खानेसे संपूण तरहकी ववासीरको नाश करतीहै ॥ १९ ॥ माखन,तिल इनके अभ्याससे अथवा नागकेसर, माखन, मिसरी इनके अभ्याससे अथवा दहीके ऊपरकी मलाई उसको मथके तक्र बनाके उसको पीनेके अभ्याससे खूनी ववासीरके मस्से शमन होजातेहैं ॥ २० ॥ अन्यच ॥ कुडाकी छाल,इंद्रजौ,नागकेसर,कमलकेसर यह चार द्रव्य सहतसे चाटनेसे खूनी ववासीरको नाश करतेहैं ॥ २१ ॥ इसीतरह इंद्रजौ पीसके सहतसे चाटनेसे खूनी ववासीरको हर्त्ताहै और नागरमोथा, मोचरस,कैतके पत्ते इनका चूर्ण करके सहतसे चाटनेसे यह चूर्णभी उसीतरह खूनीववासीरकोनष्टकरताहै२२॥

धान्यनागरजःक्काथःशूलामाजीर्णनाशनः ॥ चूर्णंतक्रयुतंपीतंतद्वद्व्योषाग्निजीरकैः ॥ २३ ॥ पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णमस्तुजलंपिबेत् ॥ सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥ २४ ॥ त्व-

कपत्ररास्नागुरुशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैःसवचाशताह्वैः ॥ उद्वर्तनंखल्लिविषूचिकाघ्नंतैलंविपक्कंचतदर्थकारि ॥ ॥ २५ ॥ इत्यजीर्णविषूचिका ॥ अन्नपानैर्गुरुस्निग्धैर्महत्सांद्रहिमस्थिरैः ॥ पीतादिरेचनैर्धीमान्भस्मकंप्रशमंनयेत् ॥ २६ ॥ औदुंबरंत्वचंपिष्ट्वानारीक्षीरयुतांपिबेत् ॥ ताभ्यांचपायसंसिद्धंभुक्तंजयतिभस्मकम् ॥ २७ ॥ मधुरतंडुलैः सिद्धं पायसंभस्मकंजयेत् ॥ विदारीस्वरसक्षीरसिद्धंवा माहिषंघृतम् ॥ २८ ॥ इतिभस्मकः ॥ कल्कः प्रियंगुकोलास्थिमधुमुस्तांजनैःकृतः ॥ क्षौद्रलीढः कुमारस्यच्छर्दितृष्णातिसारजित् ॥२९॥ यवानीकुटजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः ॥ लेहश्छर्दिमतीसारंज्वरंबालस्यनाशयेत् ॥ ३० ॥ पीतश्चंदनचूर्णेनमधुनामलकीरसः ॥ छर्दिंसदाहांसतृष्णांशीघ्रमेवविनाशयेत् ॥ ३१ ॥

नभाषा—धनियां, सूंठ इनका क्वाथ शूलको और आमाजीर्ण नाश करताहै ऐसेही संठ, मिरच, पीपल, चीता, सफेदजीरा का चूर्ण तक्रसे पान किया शूलको, आमाजीर्णको रताहै ॥ २३ ॥ अन्यच । पीपल, कालानमक, हरडै इनका कर्ण खाके ऊपरसे दहीका जल पीनेसे सब तरहके अजीर्णको हरै और शूल, गुल्म, आनाह, अग्निकी मंदता इनको जीवै ॥ ॥ २४ ॥ अन्यच । दालचीनी, पतरज, रासना, अगर, सहिंज-

नाका बक्कल, कूट, वच सौंफ इनको कांजीमें पीसके उद्वर्तन करनेसे अथवा इन द्रव्योंकरके तैल पकाके मालिश करनेसे बांयटोंका और हैजेका नाश होजाताहै ॥ २५ ॥ इत्यजीर्णचिकित्सा ॥ गुरु, स्निग्ध, अतिसांद्र, शीतल, स्थिर ऐसे पदार्थोंके खवाने प्यानेसे दस्त करानेसे बुद्धिमान् वैद्य भस्मक रोगको शांतकरे ॥ २६ ॥ गूलरका फल, दालचीनी इनको पीसके स्त्रीके दूधके संग पीनेसे अथवा इन दोनों करके सिद्धकरी हुई खीरको खानेसे भस्मकको जीत लेताहै ॥ २७ ॥ अन्यच्च । ऊंगा वृक्षके चावलोंकरके सिद्धकरी पायसको खानेसे भस्मक नष्ट हो जताहै । अथवा । विदारीकंदका स्वरस करके और दूध करके सिद्ध किया घृतके खानेसे भस्मक नष्ट हो जाताहै॥ ॥ २८ ॥ इति भस्मचिकित्सा ॥ मेंहदी, बेरकी गुठली, मुलहठी, नागरमोथा, सुरमा शुद्ध इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे बालककी छर्दी, प्यास, अतिसार जाते रहतेहै ॥ २९ ॥ अजवायन, कुडाकी छाल, नींबकी छाल, सातोनकी छाल, पलवल इनकरके किया अवलेह बालककी छर्दीको, अतिसारको, ज्वरको नाश कर्ता है ॥ ३० ॥ अन्यच्च ॥ सपेद चंदनका बुरादा, सहत, आंवलाका रस यह सामिल करकेचाटनेसे बालककी छर्दिको, दाहको, प्यासको बहुत जलदी नाश कर देताहै ॥ ३१ ॥

हरीतक्याः कृतंचूर्णमधुनासहलेहयेत् ॥ अधस्ताद्विहितेदोषेशीघ्रंछर्दिः प्रशाम्यति ॥ ३२ ॥ पटोलनिंबत्रिफलागुडूचीभिःशृतंजलम् ॥ पीतंक्षौद्र-

युतंछर्दिमम्लपित्तभवां हरेत् ॥ ३३ ॥ अश्वत्थवल्कंसंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले ॥ तज्जलंपानमात्रेणछर्दिजयतिदुर्जयाम् ॥ ३४ ॥ इति छर्दिः ॥ सलाजांजनमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ॥ तृष्णां छर्दिमतीसारंशिशूनामुद्धतांहरेत् ॥ ३५ ॥ पिप्पलीमधुकंजंबूरसालतरुपल्लवाः ॥ चूर्णोयं मधुना चैतितृष्णाप्रशमनः शिशोः ॥ ३६ ॥ दाडिमस्यचबीजानिजीरकंनागकेशरम् ॥ चूर्णसशर्कराक्षौद्रलेहात्तृष्णाहरं शिशोः ॥ ३७ ॥ हिंगुसैंधवपालाशंचूर्णमाक्षिकसंयुतम् ॥ लीढंनिर्वापयत्याशुशिशूनामुद्धतांतृषाम् ॥ ३८ ॥ इति तृषा ॥ सुवर्णगैरिकंपिष्ट्वामधुनासहलेहयेत् ॥ शीघ्रंसुखमवाप्नोतितेनहिक्कार्दितः शिशुः ॥ ३९ ॥ शुंठीधात्रीकणाचूर्णलेहयेन्मधुनाशिशुः ॥ हिक्कानांशांतयेतद्वदेकंवामाक्षिकंसकृत् ॥ ४० ॥ पिप्पलीरेणुकाक्काथःसहिंगुः समधुस्तथा ॥ हिक्कांवहुविधांहन्यादिदंधन्वन्तरेर्वचः ॥ ४१ ॥ इति हिक्का ॥

भाषा—छोटी हरडैको पीसके चूर्ण करले फिर सहतसे चाटनेसे दोष नीचेको चला जाताहै इस हेतुसे छर्दि शीघ्र शमन हो जावे ॥ ३२ ॥ अन्यच । पलवल नींबकी छाल, त्रिफला, गिलोय, इन करके किया काथ सहत डालके पीनेसे अम्लपित्तसे पैदा हौनेवाली छर्दिको शीघ्र हरता है ॥ ३३ ॥ अन्यच्च ।

पीपलवृक्षका बक्कल सूखा लाके फिर जलाके पानीमें बुझावे वह पानी पीनेसे दुर्जय छर्दिको जीतताहै ॥ ३४ ॥ इति छर्दि चिकित्सा ॥ धानकी खील, सुरमाशुद्ध, नागरमोथा इनका चूर्ण करके पानीमें भिगोदेवे फिर पानीको छानके सहत डालके बालकको प्यानेसे अत्यंत प्यासको, छर्दिको, अतिसारको हरैहै ॥ ३५ ॥ अन्यच्च । पीपल, मुलहटी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसें बालककी प्यासको शमन करताहै ॥ ३६ ॥ अन्यच्च । अनारदाना, सफेदजीरा, नागकेसर इनका चूर्ण करके बराबरकी मिसरी मिलाके सहतसे चाटनेसे बालककी प्यासको हरता है ॥ ३७ ॥ अन्यच्च । हींग घीका भुना, सेंधानमक, पलासपापडा इनका चूर्ण सहत मिलाके चाटनेसे बालकोंकी बढीहुई तृषाको निवारण करदेताहै ॥ ३८॥ इति तृषाचिकित्सा ॥ सोनागेरूको पीसके सहतसे चाटनेसे हिचकियोंसे पीडित हुए बालकको शीघ्र हो जाताहै ॥ ३९ ॥ सूंठ, आंवला, पीपल इनका चूर्ण हुचकियोंकी शांतिके वास्ते बालक सहतसे चाटे अथवा खाली मक्खीकी विष्ठाका चूर्ण,सहतसे चाटे॥ ४० ॥पीपल रेणुकबीज, इनके क्काथमें हींग भुना और सहतडालके पीनेसे सब तरहकी हिचकी जाती रहतीहै यह धन्वंतरिका वचनहै ॥ ४१ ॥

इति हिक्काचिकित्सा ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंनागरंमधुनालिहन् ॥ कासं पंचविधंश्वासंशिशुराशुविनाशयेत् ॥ ४२ ॥ विहि-

तोमधुनालेह्योव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातुगाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियतंकृष्णा शृङ्गीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एका शृंगीनिहंत्याशु मूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेनमधुनालीढाकासंबालस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडंगंमधुनालीढापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीतथैकांवाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंविडंगंमगधाखुकर्णीकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एतत्कृमीन्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेणलीढंशमयत्यवश्यम् ॥ ॥ ४७ ॥ यवक्षारंकृमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्षयेत्कृमिरोगघ्नंपंक्तिशूलहरंपरम् ॥ ४८ ॥ इतिक्रिमिरोगः ॥ अयोरजस्त्रेफलचूर्णयुक्तंगोमूत्रसिद्धंमधुनावलीढम् ॥ पांडुंकासंसक्रशानुमांद्यंशूलंसशोफंशमयेदवश्यम् ॥४९॥ इतिपाण्डुरोगः॥ पथ्याश्वगंधा सवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चबलात्रयेण ॥ पुनर्नवेतत्क्षयरोगमुग्रंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥ शिलाजतुव्योषविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोवलेहः॥ सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंविधत्तेसहसा क्षयस्य ॥ ५१ ॥ नवनीतंमिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजः पराम् ॥ करोतिपुष्टिंकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥ ॥ ५२ ॥वासामहौषधीव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम्॥

प्रपीतंशमयत्युग्रंश्वासकासक्षयज्वरान् ॥ ५३ ॥

इति क्षयरोगः ।

भाषा–पीपल छोटी,पीपलामूल, सूंठ यह द्रव्य शहदसे बालक चाटके पांच रकमके कासको, श्वासको नष्ट करदेताहै ॥४२॥ अथवा कंटकारीके फूलोंकी केसर करके और शहदकरके सिद्ध किया अवलेह बालककी पांचप्रकारकी खांसीको नाश करदेता है ॥४३॥ वंशलोचन शहदसे चाटनेसे बालकके कास,श्वास दूर होजातेहैं अथवा पीपल, काकडासींगी, मूलीके बीज यह द्रव्य शहदसहित चाटनेसे बालकके कास श्वासको दूर करदेते हैं ॥ ॥ ४४ ॥ अन्यच्च । केवल काकडासींगी मूलीके बीजों करके युक्त घृतसे व शहदसे चाटी हुई बालकके दुस्तर कासको नाश करती है ॥४५॥ इति कासश्वासचिकित्सा ॥ वायविडंग अथवा पोहकरमूल सहिंजनेका बक्कल अथवा एकली मूसाकन्नी यह तीन योग न्यारे न्यारे शहदसे चाटनेसे बालक क्रिमियोंसे मुक्त होताहै ॥ ४६ ॥ अन्यच्च । नागरमोथा, वायविडंग, पीपल,मूसाकर्णी, कबीला, अनारका बक्कल इनका चूर्ण शहदसे चाटनेसे बालकके बढेहुए क्रिमियोंको अवश्य शमन करदेताहै ॥ ४७ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल यह द्रव्य शहदसे चाटनेसे क्रिमिरोगको नष्ट करे पंक्तिशूलको शमन करे ॥ ४८ ॥ इति क्रिमिरोगचिकित्सा ॥ गोमूत्रसे सिद्ध किया लोहचूर्ण जिसको वैद्य मंडूर कहते हैं, त्रिफलाकी बराबर शहदसे चाटनेसे बालकके पांडुको, कासको, श्वासको, मंदाग्निको,

तोमधुनालेह्योव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातुगाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियतंकृष्णाशृङ्गीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एका शृंगीनिहंत्याशुमूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेनमधुनालीढाकासंबालस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडंगंमधुनालीढ्वापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीतथैकांवाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंविडंगंमगधाखुकर्णीकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एतत्कृमीन्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेणलीढंशमयत्यवश्यम् ॥ ॥ ४७ ॥ यवक्षारंकृमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्षयेत्क्रुमिरोगघ्नंपंक्तिशूलहरंपरम् ॥ ४८ ॥ इतिक्रिमिरोगः ॥ अयोरजस्त्रिफलचूर्णयुक्तंगोमूत्रसिद्धंमधुनावलीढम् ॥ पांडुकासंसक्रशानुमांद्यंशूलंसशोफंशमयेदवश्यम् ॥४९॥ इतिपाण्डुरोगः॥ पथ्याश्वगंधासवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चबलात्रयेण ॥ पुनर्नवैतत्क्षयरोगघ्नंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥ शिलाजतुव्योपविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोवलेहः॥ सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंविधत्तेसहसाक्षयस्य ॥ ५१ ॥ नवनीतंसिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजःपरान् ॥ करोतिपुष्टिकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥ ॥ ५२ ॥वासामहौषधीव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम्॥

प्रपीतंशमयत्युग्रंश्वासकासक्षयज्वरान् ॥ ९२ ॥

इति क्षयरोगः ।

भाषा—पीपल छोटी,पीपलामूल, सूंठ यह द्रव्य शहदसे बालक चाटके पांच रकमके कासको, श्वासको नष्ट करदेताहै ॥४२॥ अथवा कंटकारीके फूलोंकी केसर करके और शहदकरके सिद्ध किया अवलेह बालककी पांचप्रकारकी खांसीको नाश करदेता है ॥४३॥ वंशलोचन शहदसे चाटनेसे बालकके कास,श्वास दूर होजातेहैं अथवा पीपल, काकडासींगी, मूलीके बीज यह द्रव्य शहदसहित चाटनेसे बालकके कास श्वासको दूर करदेते हैं ॥ ॥ ४४ ॥ अन्यच । केवल काकडासींगी मूलीके बीजों करके युक्त घृतसे व शहदसे चाटी हुई बालकके दुस्तर कासको नाश करती है ॥४५॥ इति कासश्वासचिकित्सा ॥ वायविडंग अथवा पोहकरमूल सहिंजनेका वक्कल अथवा एकली मूसाकन्नी यह तीन योग न्यारे न्यारे शहदसे चाटनेसे बालक क्रिमियोंसे मुक्त होताहै ॥ ४६ ॥ अन्यच । नागरमोथा, वायविडंग, पीपल,मूसाकर्णी, कवीला, अनारका वक्कल इनका चूर्ण शहदसे चाटनेसे बालकके बढेहुए क्रिमियोंको अवश्य शमन करदेताहै ॥ ४७ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल यह द्रव्य शहदसे चाटनेसे क्रिमिरोगको नष्ट करे पंक्तिशूलको शमन करे ॥ ४८ ॥ इति क्रिमिरोगचिकित्सा ॥ गोमूत्रसे सिद्ध किया लोहचूर्ण जिसको वैद्य मंडूर कहते हैं, त्रिफलाकी बराबर शहदसे चाटनेसे बालकके पांडुको, कासको, श्वासको, मंदाग्निको,

तोमधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशय-
त्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातु-
गाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियतंकृष्णा
शृङ्गीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एका शृंगीनिहंत्याशु
मूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेनमधुनालीढाकासंवा-
लस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडं-
गंमधुनालीढ्वापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीत-
थैकांवाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंवि-
डंगंमगधाखुकर्णीकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एत-
त्क्रमीन्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेणलीढंशमयत्यवश्यम् ॥
॥ ४७ ॥ यवक्षारंक्रिमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्ष-
येत्क्रमिरोगघ्नंपंक्तिशूलहरंपरम् ॥ ४८ ॥ इतिक्रिमि-
रोगः ॥ अयोरजस्त्रैफलचूर्णयुक्तंगोमूत्रसिद्धंमधुना-
वलीढम् ॥ पांडुंकासंसक्कुशानुमांद्यंशूलंसशोफंश-
मयेदवश्यम् ॥४९॥ इतिपाण्डुरोगः॥ पथ्याश्वगंधा
सवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चबलात्रयेण ॥ पुनर्नवेतत्क्ष-
यरोगघ्नंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥
शिलाजतुव्योपविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोव-
लेहः॥ सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंवियत्तेसहसा
क्षयस्य ॥ ५१ ॥ नवनीतंसिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजः
पराम् ॥ करोतिपुष्टिकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥
॥ ५२ ॥वासामहौपधीव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम्॥

प्रपीतं शमयत्युग्रंश्वासकासक्षयज्वरान् ॥ ५२ ॥

इति क्षयरोगः ।

भाषा—पीपल छोटी,पीपलामूल, सूंठ यह द्रव्य शहदसे बालक चाटके पांच रकमके कासको, श्वासको नष्ट करदेताहै ॥ ४२॥ अथवा कंटकारीके फूलोंकी केसर करके और शहदकरके सिद्ध किया अवलेह बालककी पांचप्रकारकी खांसीको नाश करदेता है ॥४३॥ वंशलोचन शहदसे चाटनेसे बालकके कास,श्वास दूर होजातेहैं अथवा पीपल, काकडासींगी, मूलीके बीज यह द्रव्य शहदसहित चाटनेसे बालकके कास श्वासको दूर करदेते हैं ॥ ॥ ४४ ॥ अन्यच । केवल काकडासींगी मूलीके बीजों करके युक्त घृतसे व शहदसे चाटी हुई बालकके दुस्तर कासको नाश करती है ॥ ४५॥ इति कासश्वासचिकित्सा ॥ वायविडंग अथवा पोहकरमूल सहिंजनेका बक्कल अथवा एकली मूसाकन्नी यह तीन योग न्यारे न्यारे शहदसे चाटनेसे बालक क्रिमियोंसे मुक्त होताहै ॥ ४६ ॥ अन्यच । नागरमोथा, वायविडंग, पीपल,मूसाकर्णी, कवीला, अनारका बक्कल इनका चूर्ण शहदसे चाटनेसे बालकके बढेहुए क्रिमियोंको अवश्य शमन करदेताहै ॥ ४७ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल यह द्रव्य शहदसे चाटनेसे क्रिमिरोगको नष्ट करे पंक्तिशूलको शमन करे ॥ ४८ ॥ इति क्रिमिरोगचिकित्सा ॥ गोमूत्रसे सिद्ध किया लोहचूर्ण जिसको वैद्य मंडूर कहते हैं, त्रिफलाकी बराबर शहदसे चाटनेसे बालकके पांडुको, कासको, श्वासको, मंदाग्निको,

तोमधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेसरैः ॥ लीढोविनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥ ४३ ॥ क्षौद्रयुक्तातुगाक्षीरीकासश्वासावपोहति ॥ बालस्यनियतंकृष्णा शृङ्गीवामूलसंयुता ॥ ४४ ॥ एका शृंगीनिहंत्याशु मूलकस्यफलान्विता ॥ घृतेनमधुनालीढाकासंबालस्यदुस्तरम् ॥ ४५ ॥ इतिकासश्वासौ ॥ विडंगंमधुनालीढ्वापौष्करंवासशिग्रुकम् ॥ आखुकर्णीतथैकांवाक्रिमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥ ४६ ॥ मुस्तंविडंगंमगधाखुकर्णीकंपिल्लकोदाडिमवल्कलंच ॥ एतत्क्रमीन्सत्वरमुग्रवेगान्क्षौद्रेणलीढंशमयत्यवश्यम् ॥ ॥ ४७ ॥ यवक्षारंक्रमिरिपुमगधामधुनासह ॥ भक्षयेत्क्रमिरोगघ्नंपंक्तिशूलहरंपरम् ॥ ४८ ॥ इतिक्रिमिरोगः ॥ अयोरजस्त्रैफलचूर्णयुक्तंगोमूत्रसिद्धंमधुनावलीढम् ॥ पांडुकासंसक्रशानुमांद्यंशूलंसशोफंशमयेदवश्यम् ॥४९॥ इतिपाण्डुरोगः॥ पथ्याश्वगंधासंवरीविदारीसमंत्रिकंटश्चनलात्रयेण ॥ पुनर्नवेतत्क्षयरोगमुग्रंक्षौद्रेणलीढंक्षपयत्यवश्यम् ॥ ५० ॥ शिलाजतुव्योपविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोवलेहः॥ सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तः क्षयंनिहन्तिसहसा क्षयस्य ॥ ५१ ॥ नवनीतंसिताक्षौद्रंलीढंक्षीरभुजः पराम् ॥ करोतिपुष्टिंकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥ ॥ ५२ ॥वासामहौपधीव्याघ्रीगुडूचीभिः शृतंजलम्॥

ज्वरकासजित् ॥ विचार्यैवंतुमतिमानौषधंचप्रयो-जयेत् ॥ ५८ ॥ इत्यरोचकम् ॥ कोलास्थिपद्मको-शीरंचंदनंनागकेसरम् ॥ लीढंक्षौद्रेणबालानांमूर्छा-नाशनमुत्तमम् ॥ ५९ ॥ द्राक्षामामलकंस्विन्नंपिष्ट्वा क्षौद्रेणसंयुतः ॥ सर्वदोषभवांमूर्छांसज्वरांनाशयेद्ध्रु-वम् ॥ ६० ॥ शीताःप्रदेहामणयःसहाराःसेकावगा-हाव्यजनस्यवाताः ॥ लेह्यान्नपानादिसुगंधिशीतंमू-र्च्छासुसर्वासुपरंप्रशस्तम् ॥ ६१ ॥ इति मूर्छा ॥

भाषा—पीपल, पीपलामूल, सूंठ, मिरच इनका चूर्ण सहतसे चाटनेसे कफसहित स्वरभेदको दूर करै है ॥ ५४ ॥ अन्यच्च ॥ मुलहटी, हरडै, मोरवेल, काकोली, क्षीरकाकोली इन करके सिद्ध किया दुग्ध पीनेसे पित्तके स्वरभेदको नष्ट करै है ॥ ५५ ॥ इति स्वरभेदचिकित्सा ॥ जीरा सपेद, जीरा स्याह, इमली, अंबाडा, अनारदाना, चित्रक, सूंठ इनका चूर्ण दुर्वार अरुचिको नष्ट कर देता है ॥ ५६ ॥ अनारदाना ८ तोले, खांड ३२ तोले, सोंठ ४ तोले, मिरच ४ तोले, पीपल ४ तोले, दालचीनी, इलायची, पतरज यह तीनों मिलके ४ तोले इस माफिक सब दवा लेके एक जगह चूर्ण करले ॥ ५७ ॥ यह चूर्ण जठराग्निको तेजकरता है रुचिको पैदा करता है पथ्य पीनसको, ज्वरको, तथा कासको जीतता है॥ ऐसे मतिमान् वैद्योंको विचारके औषधीकी योजना करे ॥ ५८ ॥ इत्यरोचकम् ॥ बेरके काकडाकी गिरी, पद्माख, खस सफेद चन्दन, नागकेसर

शूलको,सोजाको अवश्य शमन करदेताहै॥४९॥ इति पांडुरोगचिकित्सा ॥ हरडैकी छाल,आसगंध,शतावर, विदारीकंद,गोखरू, बला,अतिबला,नागबला, पुनर्नवा यह द्रव्य सब समान टंके शहदसे बालकको चटानेसे अवश्य क्षयरोगको नष्ट कर देताहै ॥ ॥ ५० ॥ शिलाजीत, सूंठ,मिरच, पीपल, वायविडंग, लोहभस्म,सुवर्णमाक्षिकभस्म,हरडैकी छाल इन द्रव्यों का घृतसे शहदसे अवलेहकरके बालकको विधिपूर्वक सेवन करानेसे शीघ्र क्षयरोगका नाश होजाताहै॥ ५१ ॥ अन्यच ॥ माखन, मिश्री, शहद यह द्रव्य बालकको चटानेसे बालकके शरीरको पुष्ट करतेहैं, क्षयरोगको दूर करतेहैं ॥ ५२॥ अन्योपायः ॥ पांचोपंचे,सोंठ, कंटकारीकी जड, गिलोय इन करके सिद्ध किया काथ पीनेसे बालकके श्वासको, कासको, क्षयरोगको, तथा ज्वरको शमन करदेताहै ॥ ५३ ॥

इति क्षयरोगचिकित्सा ।

मागधीमागधीमूलंनागरंमरिचान्वितम्॥ क्षौद्रेणलीढंसकफंस्वरभेदमपोहति ॥ ५४ ॥ यष्ट्याह्वाजीवनीमूर्वाकाकोलीद्वयसाधितम् ॥ पयःपित्तोद्भवं हन्ति स्वरभेदंसुदारुणम् ॥ ५५ ॥ इति स्वरभेदः ॥ नीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लंदाडिमान्वितम्॥ चित्रकार्द्रकसंयुक्तमरुचिहन्तिदुष्करम् ॥ ५६ ॥ द्रपलंदाडिमादष्टौखण्डाद्द्वेपलत्रयम्॥त्रिसुगंधिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ ५७ ॥ दीपनंरोचनंपथ्यंपीनसं

साधितंमूत्रदधिक्षीरशकृद्रसैः ॥ चातुर्थिकज्वरो-
न्मादसर्वापस्मारनाशनम् ॥ ६९ ॥ इत्यपस्मारः ॥

भाषा–पद्मकाष्ठ, सपेदचंदन, बुरादा, नेत्रवाला, खस इन द्रव्योंका बारीक चूर्ण करके दूधके संग पीनेसे बालकोंके दाहको निश्चय नाश कर देताहै ॥६२॥ अन्योयोगः॥ कपूर, मलयागिर, सफेदचंदन, खस इनको खूब बारीक पीसके दाहपीडित बालकके अंगको लेपन करके केलाके पत्तोंका बिस्तर बनवाके उसपर बालकको वैद्य शयन करावे ॥ ६३॥ शीतल जलसे परिषेक करना और शीतल जलका अवगाहन बीजनेकी वायुका सेवन शीतल जलपान इनका सेवन तृषाकी दाहकी शांतिके वास्ते बहुत उत्तम है ॥ ६४॥ इति दाहचि-कित्सा ॥ सिरसके बीज, करंजुवाके बीज इनको पानीमें पीसके बालकके नेत्रमें आंजनेसे चित्तविकार जिसको उन्माद बोलतेहैं और अपस्मारको अपतंत्रिकाको शीघ्र नाश करेहै ॥ ६५ ॥ धूपमाह–राई, वच, हींग, आकके फूल, गंधक, आँवलासार, सांपकी कांचली, मोरकी पांख, नमक, मनुष्यके माथेके बाल; कूट॥६६॥सूकरकी विष्ठा,बिलावकी विष्ठा,नींबके पत्ते इन सब द्रव्योंकोथोडा कूटके धूप घी मिलाके बालकको देनेसे सबतरहके उन्मादोंका और बालग्रहोंका शमन होजाताहै॥६७॥इत्युन्माद चिकित्सा॥पुराना पेठाका रस देके मुलहटीको पीसे फिर पेठा-के रसमेंही छानके मृगीके नाशकरनेके वास्ते बालक ७ सात दिन पीवे॥६७॥अन्योयोगः॥गौकामूत्र,दही,दूध,और गोबरका

यह द्रव्य सहतसे चाटनेसे बालकोंकी मूर्छाको नाश करै है॥ ॥५९॥ अन्योयोगः। मुनक्का, आँवला, स्विन्नकरा हुआ इनको पीसके सहतसे सेवन करनेसे त्रिदोषसे होनेवाली मूर्छाको ज्वरको नाश करदेताहै ॥६०॥ अन्यच्च॥ शीतललेपनादिक, मणियोंके हार, शीतलसेक, शीतल अवगाहन, पंखाकी हवा और जो चाटने की वस्तु या खानेकी या पीनेकी या सुगंधलगानेके वास्ते यह सब शीतल मूर्छामें श्रेष्ठहैं अर्थात् सर्व वस्तु ठंडी होनी चाहिये ॥६१ इति मूर्छाचिकित्सा ॥

पद्मकंचंदनंतोयमुशीरंश्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ क्षीरेणपीतंबालानांदाहंनाशयतिध्रुवम् ॥ ६२ ॥ कर्पूरचंदनोशीरलिप्तांगंकदलीदलैः ॥ प्रशस्तेसंस्तरेधीमान्स्वापयेद्दाहपीडितम् ॥ ६३ ॥ परिषेकावगाहादिर्व्यंजनानांचसेवनम् ॥ शस्यतेशिशिरंतोयंतृपादाहोपशांतये ॥ ६४ ॥ इति दाहः ॥ शिरीषनक्तमालानांबीजेरंजितलोचनः ॥ चेतोविकारंहंत्याशुसापस्मारापतंत्रिकम् ॥ ६५ ॥ सिद्धार्थकवचाहिंगुशिवनिर्माल्यगंधकैः ॥ निर्मोकपिच्छलवणैर्नृकेशैःकुष्ठासंयुतैः ॥ ६६ ॥ गृहसूकरमार्जारविष्ठारिष्टकपत्रकैः ॥ एतेर्घृतद्भुतैर्धूपःसर्वोन्मादग्रहापहः ॥ ६७ ॥ इत्युन्मादः ॥ कूष्मांडकरसंदत्त्वामधुकंपरिपेपयेत् ॥ अपस्मारविनाशायतत्पिबेत्सप्तवासरान् ॥ ६८ ॥ गोसर्पिः

भाषा–सांठीकी जड अरंडकी अरंडोली, जौ,अन्न,अलसी, कपासकेविनोले यह सब द्रव्य कांजीजलमें स्विन्न करके बालकके जहांपर वातव्याधिहो उस अंगको प्रथम स्वेदित करे सेके पीछे उस स्थानपर बांधदे ऐसे तीन रोज छह रोज करनेसे बालककी वातपीडा सब नष्ट होजावे ॥७०॥इति वातव्याधिचिकित्सा॥ बाँसके पत्तोंका स्वरस निकालके उसमें मिसरी सहत डालके पीनेसे रक्तपित्तको नाश करैहै इसीतरह वटवृक्षकी डालीका स्वरस, मिसरी, सहतसहित रक्तपित्तको नाश करदेताहै ॥ ७१ ॥ पालाशवृक्षके फूलोंका क्वाथकरके या बाँसके पत्तोंका स्वरस करके चतुर्थांश घृत सिद्धकरके सेवनकरनेसे रक्तपित्तको हरताहै ॥७२॥ अन्यच। अनारके फूलोंका रस अथवा दूर्वाका स्वरस नासिकासे सूँघनेसे नासिकासे गिरता हुआ रक्त बन्द होजाताहै ॥७३॥ इति रक्तपित्तचिकित्सा॥हींग, सहत,सैंधानमक इन द्रव्योंकरके दृढवर्ती कपडाकी या सूत्रकी बत्ती बनाके सुखाकेफिर उसको घृत लगाके बालककी गुदामें देनेसे उदावर्तरोग अर्थात् आनाह कोष्ठवात यह सब नाश होजातेहैं ॥ ७४ ॥ इत्युदावर्तचिकित्सा ॥ सूंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, सैंधानमक, सुफेदजीरा, स्याहजीरा यह द्रव्य सर्व समान ले और हींग आठवां भाग लेना चाहिये यह हिंग्वष्टक चूर्णहै इसको घृतमें मरकोंके भोजनसे पहिले एक ग्रास चूर्णका खाके फिर भोजन करनेसे जठराग्निको तेज करैहै, वायुगोलाको नाश करैहै ॥ ७५ ॥ इति वातगुल्मानचिकित्सा॥सूंठ,पीपल, पोहकरमूल, कैतकीकी

रस इन करके सिद्धकिया गौका घृत बालकको सेवन करनेसे चातुर्थिक ज्वरको, उन्मादको, मृगीको नाश करैहै ॥६९॥

इत्यपस्मारचिकित्सा ।

पुनर्नवैरंडयवातसीभिःकार्पासजैरस्थिभिरारनालैः॥ स्विन्नैरमीभिस्त्रिभिः पङ्क्तिरेवस्वेदःसमीरार्तिहरोनराणाम् ॥ ७० ॥ इति वातव्याधिः ॥ वासायाः स्वरसःपीतःसितामधुसमन्वितः ॥ तथावटप्ररोहाणांरक्तपित्तंविनाशयेत् ॥ ७१ ॥ पालाशपुष्पक्काथेनवासायाःस्वरसेनच ॥ चतुर्गुणेनसंसिद्धंरक्तपित्तहरंघृतम् ॥ ७२ ॥ रसोदाड़िमपुष्पाणांदूर्वायाःस्वरसोऽथवा ॥ नस्येननाशयेत्तूर्णंनासिकारक्तमुद्धतम् ॥ ७३ ॥ इति रक्तपित्तरोगः ॥ हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैःकृत्वावर्तिंसुवर्तिताम् ॥ घृताभ्यक्तांगुदेदद्यादुदावर्तविनाशनीम् ॥ ७४ ॥ इत्युदावर्तः ॥ त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरकेद्वेसमधरणधृतानामष्टमोहिंगुभागः ॥ प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मंनिहंति ॥ ॥ ७५ ॥ इति वातगुल्महरंहिंग्वष्टकम् ॥ शुंठीकणापुष्करकेतकीनांविधायचूर्णंककुभस्त्वचोवा ॥ रास्नान्वितंवामधुनावलीढंहृद्रोगमेतच्छमयत्युदग्रम् ॥ ७६ ॥ इति हृद्रोगः ॥

भाषा—नागरमोथा, गिलोय,सूंठ,असगन्ध,आँवला,गोखरू इन द्रव्योंकरके सिद्धकिया क्वाथमें सहत डालकर पीनेसे वायुसे होनेवाला मूत्रकृच्छ्र अवश्य शमन होजाताहै ॥७७॥ कुशाकी जड, ऊखकी जड, कांसकी जड, नरसलकी जड, मूंजकी जड यह तृणपंचमूल है इनको लेके कूटके क्वाथ बनाके सहत डालके पीनेसे दाह, पीडायुक्त मूत्रकृच्छ्र नष्ट करता है॥७८॥ अन्यच्च ॥ गोखरू विलायतीके क्वाथमें जवाखार डालकर पीनेसे कफसे होनेवाला मूत्रकृच्छ्रको शीघ्र नाश कर देता है॥ ॥७९॥ विलायती गोखरू करके सिद्ध किया क्वाथमें शिलाजीत डालके पीनेसे त्रिदोषसे पैदा होनेवाला मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करदेता है इसमें संदेह नहीं ॥ ८० ॥ अन्योयोगः ॥ गंगेरनकी जड, ककडीके बीज इनकरके सिद्ध किया क्वाथ शिलाजीत सहित पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाशकरताहै ॥ ८१ ॥ इति मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ॥ सूंठ छोटी इलायचीकी जड़ इनको पीसके अनारके दानोंके जलमें छानके पीनेसे मूत्राघातसे बालक मुक्त होजाता है। अथवा त्रिफला, नमक दोनोंकी फंकी लेके ऊपरसे अनारदानाका अर्क पीनेसे मूत्राघातसे मुक्त होजाता है ॥८२॥ कपूरको जलमें पीसके बारीक कोमल कपडा उसमें भिगोके बत्ती बनाके लिंगच्छिद्रमें देनेसे बहुत जल्दी मूत्रका बंधासे बालक मुक्त होजाता है ॥ ८३ ॥ अन्यच्च ॥ केशूके फलोंका क्वाथ करके सेक करनेसे अथवा वही बस्तदेशके ऊपर बांधनेसे अतिदुःखका देनेवाला मूत्रकृच्छ्र नष्ट होजाताहै॥ ८४॥ इति मूत्राघातचिकित्सा ॥ एरंडके तेलको दूधमें डालके पीनेसे

जड इनद्रव्योंका चूर्ण अथवा अर्जुनवृक्षकी छाल,रासना इनका चूर्ण सहतसे चाटा हुआ उग्र हृद्रोगको शमन करताहै ॥७६॥

इति हृद्रोगचिकित्सा ॥

मेघामृतानागरवाजिगंधाधात्रीत्रिकंटैर्विहितःकषायः ॥ क्षौद्रेणपीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्रंपवनप्रसूतम् ॥ ॥ ७७ ॥ कुशेक्षुकाशाः शरदर्भयुक्ताः प्रक्षुण्णमेतत्तृणपंचमूलम् ॥ निष्काथ्यपीतंमधुनाविमिश्रंकृच्छ्रं सदाहंसरुजंनिहन्ति ॥ ७८ ॥ यवक्षारयुतःक्काथः स्वादुकंटकसंभवः ॥ पीतःप्रणाशयत्याशुमूत्रकृच्छ्रं कफोद्भवम् ॥ ७९ ॥ श्वदंष्ट्राविहितःक्काथःशिलाजतुसमन्वितः॥सर्वदोषोद्भवंहंतिकृच्छ्रंनास्त्यत्रसंशयः॥ ॥ ८० ॥ कषायोतिबलामूलत्रपुसीबीजसाधितः ॥ शिलाजतुयुतःपीतोमूत्रकृच्छ्रंविनाशयेत्॥८१॥ इति मूत्रकृच्छ्ररोगः ॥ पीत्वादाडिमतोयेनविश्वैलाबीजजंरसम् ॥ मूत्राघातात्प्रमुच्येतवरांवालवणान्विताम्॥८२॥ कर्पूरवर्तिंमृदुनालिंगच्छिद्रेनिधापयेत् ॥ शीघ्रतयामहाघोरान्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते ॥ ८३ ॥ क्काथैःशिशुकपुष्पाणांसेकस्तैरेवनिर्मितः ॥ उपनाहोथवाहंतिमूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम् ॥ ८४ ॥ इति मूत्राघातः ॥ एरंडतैलंसपयःपिबेद्योगव्येनमूत्रेणतदेववापि ॥ सगुग्गुलुप्रौढरुजंप्रवृद्धांसवांत्रवृद्धिंसहसा निहंति ॥ ८५ ॥ इत्यंत्रवृद्धिः ॥

है ॥८८ ॥ शीतलाके व्रणोंमें क्रिमि पड़नेके भयसे कोई वैद्यों-का मतहै वनोपलकी भस्मसे व्रणोंको अवधूलित करदेवे ॥ और कोई वैद्योंका यह मत है भस्म करनेमें क्षार उत्पन्न होजाताहै इस वास्ते हितकारी नहींहै खाली वनोपलकोपीसके बारीककपडासे छानके वह सूक्ष्म रज व्रणोंमें लगादेवे ॥ और तुलसीके पत्रोंकी धूप देनी चाहिये ॥ ८९ ॥ मसूरिकावाला बालकको पीडाकी शांतिके अर्थ बालकोंकी शुद्धिके वास्ते मोती अथवा मोती-की सींप कछुवाकी खोपडी मूंगा इनको जलसे पीसके बालक-को प्यावै ॥ ९० ॥ उक्त द्रव्य लवंगके जलमें घसके बालकको प्याके क्षुद्रशीतलाको जीते और शीतलावाला बालकके अगाडी शीतलाष्टक स्तोत्र वारंवार पढे ॥ ९१ ॥ इससे अगाडी शीत-लास्तोत्र लिखतेहैं यह केवल पाठ करनेके योग्यहै इसकी भाषा नहीं होनी चाहिये इसवास्ते नहीं करी ॥

अथशीतलास्तोत्रं लिख्यते॥ॐनमःशीतलायै॥स्कंदउवाच॥भगवन्देवदेवेशशीतलायाः स्तवं शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥ ईश्वरउवाच॥वंदेऽहंशीतलांदेवींसर्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्यनिवर्ततेविस्फोटकभयंमहत् ॥ २ ॥ शीतलेशीतलेचेतियोब्रूयाद्दाहपीडितः ॥ विस्फोटकभयंघोरंक्षिप्रंतस्यविनश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वामुदकमध्येतुधृत्वापूजयतेनरः ॥ विस्फोटकभयंघोरंभयंतस्यनजायते ॥ ४ ॥

अथवा गोमूत्रमें एरंडका तैल डालके गूगल डालके पीनेसे तक-लीफयुक्त बढी हुई अंत्रवृद्धिको शीघ्र नाश करदेताहै ॥८५॥

॥ इत्यंत्रवृद्धिचिकित्सा ॥

वनकार्पासिकामूलंतंडुलैः सहयोजितम्॥पक्त्वापूपा-लिकांखादेदपचीनाशकारिणीम् ॥ ८६ ॥ इतिगंड-माला॥कांचनारत्वचः क्वाथस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः ॥ निर्गत्यांतःप्रविष्टां तु मसूरींबाह्यतोनयेत् ॥ ८७ ॥ गर्दभीदुग्धपानेनतुलसीपत्रभक्षणात् ॥ मसूरीवहि-रन्वेतितत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥ ८८ ॥ भस्मनाकेचि-दिच्छंतिकेचिद्रोमयरेणुना॥कृमिवातभयाच्चापिधूप-येत्सुरसादिभिः ॥ ८९ ॥ वेदनादाहशांत्यर्थशिशू-नांचविशुद्धये ॥ मौक्तिकंकाच्छपंपृष्टंप्रवालंप्रपिबे-न्नरः ॥ ९० ॥ घृष्टंकुसुमतोयेनक्षुद्रशीतलिकांजये-त्॥स्तोत्रमेतत्सदापाठ्यंरोगिणोऽग्रेमुहुर्मुहुः ॥९१॥

भाषा—वनमें होनेवाली कर्पासकी जड लाके कूट पीसके चांव-लोंके आटेमें मिलाके घृतमें पुडी बनाके खानेसे अपची अर्था-त् परिपक्व गण्डमाला नष्ट होजातीहै ॥८६॥ इति गण्डमाला-चिकित्सा ॥ कचनारवृक्षकी छालका काथ करके छानके उसके ऊपर सुवर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती बुरकाके बालकको प्यानेसे भीतर बढी हुई शीतला बाहर निकलआतीहै॥८७॥ अन्योयोगः ॥ गर्दभीका दूध पीनेसे अथवा तुलसीके पत्र खानेसे बालकके भीतर बढीहुई शीतला बाहर निकल आवती

भाषा—शीतल जलसे हलदी और इमलीका बीज इनको पीसके बालकको प्यानेसे शीतला करके किया विकार नहींहो ॥ ९२ ॥ शीतलामें रक्षापूर्वक ठंडी क्रियाकरे मकानके चारों तरफ नीमकी डाली बांध देनी चाहिये ॥ ९३ ॥ लालचंदन, बांसके पत्ते, नागरमोथा, गिलोय, मुनक्का इन द्रव्योंका काथ करके फिर शीतलकरके बालकको प्यानेसे शीतलासे होनेवाला ज्वर नाश होताहै ॥ ९४ ॥ जिस स्थानमें शीतलावाला बालकहो उस स्थानमें उच्छिष्ट पुरुषका या नारीका प्रवेश नहीं होने दे और अपवित्रकाभी प्रवेश नहीं होने दे ॥ अधिक दाहवाले फोडे हों, तब व्रणविधानपूर्वक व्रणीकी रक्षा रखनी चाहिये और वनोपलकी रज या भस्म फोडोंको लगानी चाहिये ॥ ९५ ॥ इति शीतलारोगचिकित्सा ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायांत्रयोदशःपटलः

मनःशिलाचंदनलोध्रपथ्यारसांजनैर्मुस्तनिशामयाक्षैः॥सगैरिकाह्वैर्विहितः प्रलेपो बहिः प्रसन्नेनयनेकरोति ॥ १ ॥ ससैंधवंलोध्रमथाज्यभृष्टंसौवीरपिष्टंसितवस्त्रबद्धम् ॥ आश्चोतनंतन्नयनस्यकुर्य्यात्कंडूंचदाहंचरुजंचहन्यात् ॥ २ ॥ चंदनंमधुकंलोध्रंजातिपुष्पाणिगैरिकम् ॥ प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः ॥ ३ ॥ शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्द्धांचमनःशिला ॥ मनःशिलार्द्धंमरिचंमरिचा-

हरसिदुस्तरान् ॥ विस्फोटकविशीर्णोनांत्वमेकामृतवर्षिणी॥५॥गलगंडग्रहारोगायेचान्येदारुणानृणाम्॥त्वदनुध्यानमात्रेणशीतलेयांतिसंक्षयम् ॥ ६ ॥ नमंत्रोनौषधंकिंचित्पापरोगस्यविद्यते ॥त्वमेकाशीतलेत्रात्रीनान्यांपश्यामिदेवताम्॥ ७ ॥ मृणालतंतुसदृशींनाभिहृत्पद्मसंस्थिताम् ॥ यस्त्वांसंचितयेदेवितस्यमृत्युर्नजायते ॥ ८ ॥ अष्टकंशीतलादेव्या यःपठेन्मानवःसदा ॥ विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्य नजायते ॥ ९ ॥ श्रोतव्यंपठितव्यंचश्रद्धाभक्तिसमन्वितैः॥उपसर्गविनाशायपरंस्वस्त्ययनंमहत्॥ १०॥ शीतलाष्टकमेवेदंनदेयंयस्यकस्यचित्॥ ११॥दातव्यं हि सदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितश्च यः ॥ १२ ॥ इतिस्कंदपुराणेशीतलाष्टकम् ॥ शीतलेनजलेनैव चित्रयाचसमन्वितम् ॥ हरिद्रांयःपिबेत्तिप्यनदोषः शीतलाभवः ॥ ९२ ॥ शीतलासुक्रियाकार्या शीतलारक्षयासह॥ वर्भायान्निंबपत्राणिपरितोभवनान्तरे ॥ ९३॥ चन्दनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह॥ एषांशीतकषायस्तु शीतलाज्वरनाशनः ॥ ९४ ॥ कदाचिदपिनोकार्यमुच्छिष्टस्यप्रवेशनम् ॥ स्फोटेष्वधिकदाहेपुरक्षा रणूत्करोदितः ॥ ९५ ॥

इतिशीतलारोगः॥ इतिश्रीकल्याणवैद्यकृतेबालतंत्रेशीतलाचिकित्साकथनंनामत्रयोदशः पटलः॥ १३॥

अन्यच ॥ लालचंदन, मुलहटी, लोध, चमेलीके फूल गेरू, इन द्रव्योंको पीसके नेत्रके लेप करनेसे नेत्रदाहको नष्ट करे और जलके गड़नको नेत्र दूखनेको नष्ट करैहै ॥ ३ ॥ अन्योयोगः॥ शंखकी नाभिके ४ भाग मनशिलके २ भाग मिरच १ भाग पीपल आधा भाग ॥ ४ ॥ यह द्रव्य जलमें पीसके नेत्रमें घालनेसे धुंधको नष्ट करैहै। दधि जलमें पीसके घालनेसे अर्बुदको नष्ट करैहै ॥ शहदमें पीसके घालनेसे चिपिटपनाको नाश करे। स्त्रीके दूधमें पीसके घालनेसे नेत्रमें मांस फूलताहै वह शांत हो जावे ॥ ५ ॥ धतूराके बीज, कपुर इनको खूब वारीक सहतमें घिसके नेत्रमें घालनेमे सर्व नेत्ररोग नाश हो जातेहैं जैसे सिंहके भयसे मृग नष्ट हो जावेहैं ऐसे ॥ ६ ॥ इति नेत्ररोगचिकित्सा ॥ हींग, सूंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, कायफल, वच, कूट, नकछीकनी लाख, सपेद सांठीकी जड, कूडाकी छाल, लौंग इनका काथ करके और कल्क करके गोमूत्रसहित मंदाग्निसे कडु तैलको पकावे फिर विधिपूर्वक नासिकासे पीनेसे नासिकाके कुलरोगोंको शमन करदेताहै॥ ७॥ इति नासारोगचिकित्सा ॥ कमेरा, बिजोरा, नींबूका अर्क, अदरखका अर्क यह सब द्रव्य मिलाके गरम करके कानमें घालनेमें कर्णशूल शांत होजाताहै ॥ ८॥ अन्यच ॥ आकका पीला पत्ताको तैल चुपडके अग्निमें तप्तकरके कानमें निचोडनेसे कर्णशूल और कर्णकी सर्व पीडा नष्ट होजाती है ॥ ९ ॥ अन्यच ॥ स्त्रीके दुग्धमें रसोतको घिसके फिर शहद मिलाके

र्द्धांचपिप्पली ॥ ४ ॥ वारिणातिमिरंहंतिह्यर्बुदं हंतिमस्तुना ॥ चिपिटंमधुनाहंतिस्त्रीक्षीरेणतदुन्नतम् ॥ ५ ॥ धत्तूरफलकर्पूरेनिघृष्यमधुनांजयेत् ॥ नेत्ररोगाः प्रणश्यंतिसिंहत्रस्तामृगाइव॥६॥ इति नेत्ररोगः॥हिंगुव्योपविडंगकट्फलवचारुक्तीक्ष्णगंधायुतैर्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाकुटजकैः पुष्पोद्भवैःसौरसैः ॥ इत्येभिः कटुतैलमेतदनलेमंदेसमूत्रंशृतंपीतंनासिकयायथाविधिभवेन्नासामयिभ्योहितम् ॥ ७ ॥ इति नासारोगः ॥ कंपिल्लमातुलुंगाम्लशृंगवेररसैः शुभैः॥ सुखोष्णैःपूरयेत्कर्णंकर्णशूलोपशांतये ॥ ८॥ अर्कस्यपत्रपरिणामपीततैलेनलिप्तंशिखिनाचतप्तम् ॥ आपीड्यतोयंश्रवणेनिषिक्तंनिहंतिशूलंबहुवेदनांच ॥ ॥ ९ ॥ घृष्टंरसांजनंनार्याःक्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रशस्यतेशिरोरोगेसस्रावेपूतिकर्णके ॥ १० ॥

इति कर्णरोगः ॥

भाषा—मनशिल,लालचंदन, लोध,हरडे, रसोत,नागरमोथा, हलदी, कूट, बहेडा, गेरू इन द्रव्योंको कूट कपडामें छानके जलमें पीसके, नेत्रोंके बाहिर लेप करनेसे नेत्र निर्मल हो आवेहैं ॥ ॥ १ ॥ अन्योयोगः ॥ सेंधानमक, घीका भुना लोध, दोनोंको कांजीजलसे पीसके गोलीबनाके सुपेद वस्त्रमें बांधके पोटली बनालो फिर कांजी जलमें डुबोडुबोके नेत्रमें आश्चोतन करनेसे नेत्रदाहको, नेत्रपीडाको नष्ट करदेनीहै ॥ २ ॥

पोहन्तिप्रयुक्तोयंकीटवृश्चिकजंविषम् ॥ २० ॥ पला-
शबीजंरविदुग्धपिष्टंघृतेनपिष्टासशिरीषबीजा॥कृष्णा-
थवाहंतिकृतोग्रपीडांविषप्रलेपाद्धुविवृश्चिकस्य ॥२१॥

भाषा—अन्यच्च॥गुणसे सोंठकी गोली बनाके खानेसे शिरो-
रोगोंको नष्ट करैहैअथवा सैंधानमक,पीपल इनका सेवन करनेसे
याकेवल निर्मलजल प्रातःकालनासिकाद्वारा सेवनकरनेसेअथवा
दुग्ध, घृत, प्रातःकाल सेवन करनेसे या शिरो विरेचन करनेसे
शिरके सर्व विकार नष्ट होजातेहैं ॥ ११ ॥ इतिशिरोरोगचिकि-
त्सा ॥ हींगको अग्निद्वारा कदुष्ण करके दंतमें रखनेसे शीघ्र
कृमिदंश रोग नष्ट होजाताहै ॥ १२ ॥ ओष्ठप्रकोपरोग होनेसे
ओष्ठोंका खून निकलवावे और त्रिफला, खैरका बक्कल इनका
क्काथ करके ओष्ठोंकोधोना और झारना चाहिये इन्हींको पीसके
लेप करना चाहिये ॥ १३ ॥ अन्यच्च ॥ जावित्री, पतरज,
गिलोय,मुनक्का, कश्मीरीपट्टा, दारुहलदी,हरडै, बहेडा,आंवला
इन द्रव्योंका क्काथ करे फिर ठंढा होनेसे सहत डालके कुल्लीक,
रनेसे मुखका पाक साफ होजावे ॥ १४ ॥ पंचबक्कलका क्काथ
या त्रिफलाका क्काथ सहत सहित कुल्ले करनेसे मुख पाकको शीघ्र
शमन करैहै ॥ आम्रका बक्कल,पीपलका बक्कल,वटका बक्कल,
पिलखनका बक्कल,गूलरका बक्कल इन पांच वृक्षोंके बक्कलोंको
पंच वल्कल कहते हैं ॥ १५ ॥ परवलके पत्ते,नींबके पत्ते,
जामुनके पत्ते,आमके पत्ते, चमेलीके पत्ते इनका क्काथ करके
या पंच वल्कल करके सहित इनका क्काथ करके कुल्ले करनेसे

कर्णमें घालनेसे कानका बहनाको, कानकी बदबूको और कर्णशूलसे शिरमें शूलहो इन सबोंको शमन करताहै ॥ १० ॥

गुडेनशुण्ठीसहसैंधवेनकृष्णाऽथवाकेवलमच्छमंभः॥ पयोघृतंवाविनिहंतिशीघ्रंशिरोविरेकेण शिरोविकारान् ॥ ११ ॥ इति शिरोरोगः ॥ मंदोष्णंधारयेच्छुद्धंहिंगुदन्तान्तरेस्थितम् ॥ तेनप्रणाशयत्याशुकृमिदंशंमहागदम् ॥ १२ ॥ ओष्ठप्रकोपेसंजातेरक्तमोक्षंचकारयेत् ॥ त्रिफलाखदिरकाथैर्धावनंलेपनंतथा ॥ १३ ॥ जातिपत्रामृताद्राक्षापाठादार्वीफलत्रिकैः ॥ क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडूपान्मुखपाकजित् ॥ १४ ॥ पंचवल्ककषायोवा त्रिफलाक्काथएववा॥सक्षौद्रःशमयत्याशुगंडूषैःपाकमास्यजम् ॥ १५ ॥ पटोलनिंवजंव्वाम्रमालतीनवपल्लवैः ॥ पंचवल्कलजःक्काथोगंडूपैर्मुखपाकजित् ॥ १६ ॥ दार्वीगुडूचीसुमनःप्रवालद्राक्षायवासत्रिफलाकषायः ॥ क्षौद्रेणयुक्तःकवलग्रहोयंमुखस्यपाकंशमयत्युदीर्णम् ॥ १७ ॥ इतिमुखरोगचिकित्सा ॥ वंध्याकर्कोटकीमूलंतंडुलीयकसंयुतम् ॥ अगदोयंमहावीर्यःपीतःसर्वविषापहः ॥ १८ ॥ वलांशिफांवाणपुंखांशिखांवासववारुणीम्॥ लीढ्वाघृतेनसर्वाणिविषाणिक्षपयेन्नरः ॥ १९॥ इति सर्पादिविषम् ॥ शिखिकुक्कुटवर्हाणिसैंधवं तैलसार्षपम्॥धू-

नरःकामरूपः ॥ अमृतफलसिताद्यैश्चूर्णितैस्तैर्द्विमा-
सात्प्रहतगदसमूहःकृष्णकेशश्चिरायुः ॥ २४ ॥
पीताश्वगंधापयसार्द्धमासंघृतेनतैलेनसुखाम्बुनावा॥
कृशस्यपुष्टिंवपुषोविधत्ते बालस्यसस्यस्ययथाम्बु-
वृष्टिः ॥२५॥ इतिरसायनभेषजम् ॥ ग्रंथान्विलोक्य
प्रचुरप्रयोगान्पद्यैःस्वकीयैः कतिचित्तदीयैः ॥ प्रो-
क्ताश्चिकित्सारुचिराः शिशूनांतादेशकालादिसमी-
क्ष्यकुर्यात् ॥ २६ ॥ अहिक्षत्रान्वयेजातःपंडितैक-
शिरोमणिः ॥ रामचंद्रार्चनरतोरामदासःसतांप्रियः
॥ २७ ॥ विद्वज्जनाह्लादकरोमनस्वीमहीधरःसर्व-
जनाभिवंद्यः ॥ लक्ष्मीनृसिंहांघ्रिसरोजभृंगस्तदात्म-
जोभूद्विदितागमार्थः ॥२८॥ कल्याणइत्युद्गतनाम-
धेयस्तदात्मजोग्रंथवरान्विलोक्य ॥ परोपकारायव-
बंधतंत्रंसतांसमालोकनयोग्यमेतत् ॥ २९ ॥ युग-
वेदरसाकारमिते वर्षे नभेरवौ ॥ पूर्णिमायांचकारेदं
लिलेखचशिवालये ॥ ३० ॥

इति श्रीकल्याणवैद्यकृते बालतंत्रे नानाप्रयो-
गकथनं नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

समाप्तोयं ग्रंथः ॥ शुभमस्तु ॥

भाषा—बकरीका खुर, सैंधानमक इनको पीसके सहत, घृत मिलाके किंचित् गरम करके जहांपे बीछूने काटाहो वहांपे लेप करनेसे अग्निकी माफिक पीडाको एक क्षणमें नष्ट करदेताहै २२

मुखपाक शमन होजाता है ॥ १६ ॥ अन्यच्च ॥ दारुहलदी गिलोय,सुमननामकपुष्पवृक्षविशेषहोताहै उसकेपत्ते लेनेचाहिये अगर न मिलें तो चमेलीके पत्ते लेवे,मुनक्का,जवासा,हरडै, बहेडा,आंवला इनका काथ करके सहत डालके कुल्ले करनेसेमुखपाक शमन होजाताहै ॥ १७ ॥ इति मुखरोगचिकित्सा ॥ बांझककोडाकी जड़, चौलाईकी जड इनको पानीमें पीसके पीनेसे सब तरहके विषको नाश करैहै.यह विषके नाश करनेके वास्ते बड़ा पराक्रमी अगद संज्ञक योगहै ॥ १८ ॥ अन्यच्च॥ खरैंटीकी जड़, शरपुंखाकी जड़ इनको पीसके घृतसे चाटनेमे संपूर्ण विष नाश होजातेहैं ॥ १९ ॥ इतिसर्पादिविषचिकित्सा ॥ मोरकी पंख,मुरगाकी पंख,सेंधानमक, तेल, सिरसम, इन्होंको कूटके धूप देनेसे कीडाका वृश्चिकका विष नष्ट होजाताहै॥ २०॥ पलाशपापडाको आकके दूधमें पीसके लेप करनेसे, अथवा सिरसके बीज, पीपलछोटी, इनको घृतमें पीसके लेप करनेसे वृश्चिकके विषकरके होनेवाली उग्रपीडा नष्ट होजातीहै ॥२१॥

अजांघ्रिकल्कः सहसंवचेनमध्वाज्यमिश्रो विहितः कटुष्णः ॥ दंशेप्रलिप्तोदहनेनतुल्यांपीडांक्षणात्कृंतति वृश्चिकस्य ॥ २२ ॥ इतिवृश्चिकविषचि० ॥ कर्पान्मितंहाटकचाणपुंखामूलंपिबेत्तंडुलतोयमिश्रम् ॥ शिफामथेकांकनकस्ययुक्तांडुग्धेन नाशायशुनांविषस्य ॥ २३ ॥ इतिश्वविषचिकित्सा ॥ असिततिलसमेतैर्भृङ्गराजस्यपत्रैः प्रतिदिनमपियुक्तैःस्या-

के उपकारके वास्ते श्रेष्ठ जनोंके देखनेलायक इस तंत्रको रचता भया ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ कब यह ग्रंथ बनायाहै इस अपेक्षामें संवत् मास तिथि कल्याण वैद्य लिखताहै ॥ संवत् १६४४ में श्रावणशुक्ल १५ पूर्णिमा रविवार शिवालयमें इस ग्रंथको पूर्ण करके लिखता भया ॥ ३० ॥

इति श्रीपंडितनंदकुमारवैद्यकृतबालतंत्रभाषाटीकायांचतुर्दशःपटलः १४

अथाश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्रेपूद्भवस्यरोगस्यशान्तिरभिधीयते ॥

अश्विन्यादिषुपीडास्याज्ज्वरोदाहःकलेवरे ॥ तद्दोषशमनार्थायज्वरतापादिशान्तये ॥ १ ॥ दानंकुर्य्याद्विधानेनरोगशान्तिस्तदाभवेत् ॥ औषधीनांप्रयोगाश्चभवन्तिफलदायदा ॥ २ ॥ तत्रादावश्विन्यांरोगशान्तयेऽश्विनीदानम् ॥ तथाचोक्तमादित्यपुराणे ॥ सितमश्वंसमादायसुवर्णप्रतिमांरवेः ॥ टंकप्रमाणतः कुर्य्यात्कांस्यपात्रेनिधारयेत् ॥ ३ ॥ घृतपूर्णंमुखंपश्यन्मंत्रंद्वादशभिः पठेत् ॥ ४ ॥ मंत्रः ॥ भास्करायनमश्चैवकौमारायनमोनमः ॥ अश्विनीसंभवांपीडांनिवारयनवाह्लिकाम् ॥ ५ ॥ पुनर्मंत्रंत्रिभिरुक्त्वादद्याद्दानंद्विजातये ॥ ज्वरबाधाविनिर्मुक्तःस्नानमारोग्यमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ इत्यश्विन्यांरोगसंभवेऽश्विनीदानम् ॥ १ ॥

इतिवृश्चिकविषचिकित्सा ॥ कचनारकी जड, झोझरूकी जड दोनों एक तोला लेके चावलोंके पानीके साथ, बावले कुत्तेका विषनाश करनेके वास्ते पीना चाहिये अथवा केवल अकेली कचनारकी जड दुग्धसे पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट होजाताहै २३॥ इति श्वविषचिकित्सा ॥ काले तिल, और जलभंगराके पत्ते इनका नित्य सेवन करनेसे अथवा अमरफल मिसरी इनका दो मास सेवन करनेसे सर्व रोगोंके समूह नष्ट होजातेहैं, काले बाल हो जातेहैं आयु निरोग होतीहै कामदेवकी माफिक रूपवान् मनुष्य हो जाता है ॥ २४ ॥ अन्योयोगः ॥ पंद्रह १५ रोज-तक असगंधन गौके दूधके संग या जलसे पीनेसे कृश बालकके शरीरकी पुष्टिकरेहै जैसे सस्यकी पुष्टिको जलवृष्टि करतीहै ऐसे ॥ २५ ॥ इति रसायनभेषजम् ॥ कल्याणवैद्य कहते हैं आत्रेयादिक बहुतसे तंत्रोंको देखके और बहुतसे सिद्ध प्रयोगों-को देखके अपने रचे पर्यो करके और कितनेक तंत्रोंके पर्यो करके बालकोंकी सुन्दर चिकित्सा कहीहै इनको वैद्यवर देशकालादि-कोंको देखके करे ॥ २६ ॥ अब कल्याणवैद्य अपने उद्भव-को कहतेहैं, अहिक्षत्र वंशमें होनेवाले पंडितोंमें शिरोमणि श्री रामचंद्रजीके पुजनमें रत संतोंके प्यारे ऐसे रामदासनामक वैद्य होते भये उन्होंके पुत्र विद्वानोंके मनको आनंद करनेवाले समर्थ सवजनोंकरके वंदित लक्ष्मीनृसिंहके चरणकमलमें भ्रमर-रूप ऐसे महीधर नामक वैद्य होते भए उन्होंके पुत्र जानाहै वेदोंका अर्थ जिसने ऐसा वह कल्याणनामक वैद्य होता भया कि जो कल्याण वैद्यबहुत श्रेष्ठ श्रेष्ठ ग्रंथोंको देखके और जनों-

रण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिविधिःसमाप्तः॥ २॥

भापा–अबभरणीनक्षत्रमें रोग होनेसे भरणीकीशांतिलिखते हैं ॥ विष्णुपुराणके धर्मोत्तरखंडमें लिखाहै॥ दो सेरका वजनमें कांसीका पात्र लेके ३॥ साढेतीनसेर काले तिल उसमें डालके १तोला सुवर्णकी धर्म्मराजकी मूर्ति बनवाकेतिलोंकेऊपररखके मूलोक्त मन्त्र पढके काले ब्राह्मणको देदेवेरोगीकोनिरोगता प्राप्त होनेकी शांति यह कहीहै ॥ इति भरणीदानशांतिविधिः ॥२॥

अथ कृत्तिकादानशांतिर्लिख्यते ॥ अग्निदोषसमुद्भूताकृत्तिकासंभवारुजा ॥ तद्दोषशमनार्थायदानमुत्तममीरितम् ॥ ११ ॥ कर्षमात्रसुवर्णस्यवह्नेर्मूर्तिंतु कारयेत्॥तंडुलंपात्रमाधायप्रतिमांतत्रपूजयेत्॥१२॥ मंत्रंसंलिख्यपात्रेऽस्मिन्दानंविप्रायदापयेत्॥ मंत्रः॥ कृपीटायनमस्तुभ्यंबाधांमेविनिवारय ॥ नवतासरसंभूतांवह्निदोषसमुद्भवाम् ॥ १३ ॥ इत्येषाकथिता शांतिःकृत्तिकायानिरोगिकी ॥ आयुरारोग्यतांयातिवह्निदोषविवर्जितः॥ १४ ॥

इति कृत्तिकारोगसंभवेकृत्तिकादानशांतिविधिः ॥ ३ ॥

भापा–कृत्तिका नक्षत्रकी दानशांति लिखतेहैं॥ अग्निदेवके दोषसे कृत्तिका नक्षत्रमें पीडा होवीहै ॥ तद्दोषशमनके वास्ते यह उत्तम दान करना चाहिये१तोला सुवर्णकी अग्निदेवकी मूर्ति बनवाके एक पात्रमें मूलोक्त कृत्तिकाका मंत्र लिखके उसमें तंडुल डालके तंडुलके ऊपर मूर्ति रखके पूजनकरके ब्राह्मणको देदेवे

- भाषा–अश्विनीसे लेके सत्ताईस नक्षत्रोंमें होनेवाले रोगकी शांति लिखतेहैं । अश्विन्यादिक नक्षत्रोंके रोज शरीरमें ज्वर दाहादिक पीडाहो तबतक नक्षत्र दोपशांतिके वास्ते और ज्वरतापादिकी शांतिके वास्ते मनुष्य विधिपूर्वक दानकरे, दान करनेसे रोगशांति उसीवक्त होजातीहै, और औषधियोंके प्रयोग फल देनेवाले हो जातेहैं । अब आदिमें अश्विनीनक्षत्रमें हुये रोगकी शांतिके वास्ते दानविधि लिखतेहैं ॥ आदित्यपुराणमें लिखाहै ॥ एक सपेद घोडाको मँगाके तदनंतर ४ मासे सुवर्णकी सूर्यमूर्ति बनवाके कांसीके पात्रमें रखके घृतसे पूर्ण करके १२ वार मंत्र पढके उसमें अपना मुख देखके फिर मूलोक्त मंत्र ३ वार पढके ब्राह्मणको अश्व सहित दानदेवे, दान देनेमें सर्व पीडासे निवृत्त होके रोगी-स्नान करलेताहै ॥ इत्यश्विनीदानशांतिविधिः ॥ १ ॥

अथ भरण्यांरोगसंभवेभरणीदानशांतिः ॥ उक्तंच विष्णुधर्मोत्तरे ॥ द्विप्रस्थपरिमाणेनकांस्यपात्रं चकारयेत् ॥ सार्द्धप्रस्थत्रयंनीत्वातिलंश्यामंसुनिर्मलम् ॥ ७ ॥ धर्मराजस्वरूपंचकृत्वासौवर्णनिर्मितम्॥कर्षमात्रप्रमाणेनतिलपात्रेनिवेशयेत्॥८॥ मंत्रेणानेनतत्पात्रंकृष्णविप्रायदापयेत ॥ मंत्रः ॥ धर्मराजनमस्तुभ्यमेकादशदिनात्मकीम् ॥ पीडां वास्यहेदेवयमदोषसमुद्भवाम् ॥ ९ ॥ इति याकथिताशांतिर्भरण्यानेरुजात्मकी ॥ १० ॥ इति भ-

अथमृगशीर्षरोगसंभवेमृगशीर्षदानशान्तिर्लिख्यते॥ मृगशीर्षेभवेद्रोगश्चंद्रदोपसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ॥ १९ ॥ कांस्यपात्रंसमादायप्रस्थद्वयप्रमाणकम् ॥ तन्मध्येपायसंधृत्वाचंद्रमूर्तिंचधारयेत् ॥ पंचकर्षप्रमाणेनरुक्मेणनिर्मितांवराम् ॥ २० ॥ मंत्रः ॥ समुद्रतनयोदेवमासवाधांनिवारय ॥ रोहिणीपतयेतुभ्यंद्विजरूपायतेनमः ॥ २१ ॥ इमंमंत्रंसमुच्चार्य्यदशभिः प्रणतिंचरेत् ॥ ब्राह्मणायददेद्दानंरोगंनिर्मुक्ततांनयेत् ॥ २२ ॥ इति मृगशीर्षदानशांतिविधिः ॥ ५॥

भापा—इसके अनंतर मृगशिर नक्षत्रमें रोग होनेसे मृगशिरकी शांति लिखतेहैं । चंद्रमाके दोपसे मृगशिर नक्षत्रमें ज्वरादिक रोग होतेहैं तद्दोषके शमनके वास्ते शांतिदान करना चाहिये, २दोसेरवजनमें कासीका पात्र लाकर उसकोपायस अर्थात्खीरसे पूर्णकरके, तदनंतर ५पांच तोले सुवर्णकी चंद्रमाकी मूर्ति बनवाके उसमें पात्र रखके मूलोक्त मंत्र दशवार पढके, फिर नमस्कार करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाता है ॥ इति मृगशिरदानशांतिविधिः ॥ ५ ॥

अथार्द्रायांरोगसंभवेचार्द्रादानशांतिर्लिख्यते ॥ लिंगपुराणे ॥ आर्द्रायांजायतेरोगःशिवदोपसमुद्भवः ॥ तज्ज्वरशमनार्थायदानंशांतिचकारयेत् ॥ २३ ॥ श्वेतवर्णंवृषंनीत्वाधूम्रवस्त्रेणछादितम् ॥ कर्षमानेन

यह कृत्तिकाकी शांति मुनियोंने कहीहै इसके करनेसे मनुष्य वह्निके दोषसे रहित होके नीरोग आयुको प्राप्त होजाताहै ॥

इति कृत्तिकादानशांतिविधिः ॥ ३ ॥

अथरोहिण्यांरोगसंभवेरोहिणीदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचब्रह्मांडे ॥ विप्रदोषाच्चरोहिण्यांज्वरोभवति दारुणः ॥ तद्दोषशमनार्थायशांतिदानं समाचरेत् ॥ १५ ॥ पीतांगांब्रह्मणोमूर्तिंसुवर्णस्यचकारयेत् ॥ पीतवस्त्रइमंमंत्रंसंलिख्यतांचछादयेत् ॥ १६ ॥ टंकमात्रसुवर्णस्यप्रतिमाब्रह्मणःशुभा ॥ मंत्रः ॥ पितामहनमस्तुभ्यंसततवासरसंभवाम् ॥ निवारयमहाभागपीडाभेतांज्वरोद्भवाम् ॥ १७ ॥ ब्राह्मणायदद्देदानंरोगंनिर्मुक्ततांनयेत् ॥ १८ ॥

इति रोहिणीरोगसंभवेरोहिणीदान-
शांतिविधिः ॥ ४ ॥

भाषा—इसके अनंतर रोहिणी नक्षत्रकी दानशांति लिखतेहैं॥ ब्रह्माण्डपुराणमें लिखाहै ॥ ब्राह्मणके दोषसे रोहणी नक्षत्रमें पीडा होतीहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते यह दानकरना चाहिये पीली गौ मँगाके और ब्रह्माकी मूर्ति ४ मासे सुवर्णकी कराके हाथ भर पीला वस्त्र लेके उसपै मूलोक्त मंत्र लिखके उससे मूर्ति आच्छादितकरके ब्राह्मणको गौ सहित दे देवे, यह दान देनेसे रोगी रोगसे निर्मुक्त होजाताहै ॥

इति रोहणीदानशांतिविधिः ॥ ४ ॥

व्रजेत्॥ २१ ॥ इतिपुनर्वसुदानशांतिविधिः ॥ ७ ॥

भाषा–पुनर्वसु नक्षत्रमें रोग होनेसे पुनर्वसुनक्षत्रकी शांति लिखतेहैं. स्कंदपुराणमें लिखाहै–अदिति देवतानकी माताके दोषसे पुनर्वसुनक्षत्रमें रोग होताहै तद्दोषशमनके वास्ते शांति करानी चाहिये. २ दो तोले सुवर्णकी मूर्ति बनवाके रोगीकी शरीरके उन्मान तीन तारका कच्चा सूत लेके उस मूर्तिको वेष्टन करदे. फिर लालवस्त्रसे मूर्ति ढकके रोगीअपने दक्षिणहाथमें लेके मूलोक्तमंत्र सप्तवार पढ़के नमस्कार करके दक्षिणदिशाकी तरफ मुखकरके ब्राह्मणको दान देदेवे. ऐसे पुनर्वसुकी शांतिकरनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इति पुनर्वसुदानशांतिविधिः ॥ ७ ॥

अथपुष्येरोगसंभवेपुष्यदानशांतिर्लिख्यते ॥ हरिवंशपुराणे ॥ पुष्यर्क्षेजायतेरोगोगुरुब्राह्मणदोषतः ॥ शांतिदानंसमाचक्षेज्वरपीडादिशांतये ॥ ३२ ॥ बृहस्पतेःकृतांमूर्तिकर्षमात्रसुवर्णतः ॥ चणकद्विदलप्रस्थसप्तकेपरिधायच ॥ ३३ ॥ श्वेतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंहरिद्राभिःसुधीर्नरः ॥ ३४ ॥ मंत्रः ॥ बृहस्पतेसुराचार्य्यनमस्तेपुष्यनायक ॥ सप्तवासरजां बाधांनिवारयसुदारुणाम् ॥ ३५ ॥ सूत्रंशरीरमात्रेणपीतंतत्रनिवेशयेत् ॥ पश्चिमाभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्विजातये ॥ ३६ ॥ रोगोनिर्मुक्ततांयातिगुरुपुष्यस्यदानतः ॥इतिपुष्यदानशांतिविधिः॥८॥

भाषा–पुष्यनक्षत्रमें रोग होनेसे पुष्यकी शांति लिखतेहैं ॥ हरिवंशपुराणमें लिखाहै–गुरुके दोषसे और ब्राह्मणके दोषसे

रुक्मेणशिवमूर्तिंप्रकल्पयेत् ॥ २४ ॥ मंत्रः ॥ वृ-
षारूढनमस्तुभ्यंशूलिनेवरदायिने ॥ आर्द्रारोगनि-
वृत्त्यर्थंरुद्रबाधांनिवारय ॥ २५ ॥ इत्येकादशभिर्मं-
त्रैर्जस्वाचप्रणमेच्छिवम् ॥ दत्त्वादानंचविप्रायरोगा-
न्निर्मुक्ततांव्रजेत्॥२६॥इत्यार्द्रादानशांतिविधिः॥६॥

भाषा—आर्द्रानक्षत्रमें रोग होनेसे आर्द्राकी शांति लिखते हैं॥ लिंगपुराणमें लिखा है ॥ शिवके दोषसे आर्द्रामें रोग होता है तद्दोषशमनके वास्ते शांतिदान करना चाहिये सुपेद वर्णका बैल मँगाके उसको लालवस्त्र उढादे फिर १ तोला सुवर्णकी शिवकी मूर्ति बनवाके वृषभमें स्थापनकरके मूलोक्त मंत्र एकादशवार पढके नमस्कार करके ब्राह्मणको देदेवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे छुटजाता है॥ इत्यार्द्रादानशान्तिविधिः॥६॥

अथपुनर्वसौरोगसंभवेपुनर्वसुदानशांतिर्लिख्यते ॥
स्कंदपुराणे ॥ पुनर्वसौभवेद्रोगोदेवदोषसमुद्भवः ॥
तज्ज्वरशमनार्थायदानशांतिंचकारयेत् ॥ २७ ॥
पलार्द्धपरिमाणेनसुवर्णप्रतिमांशुभाम् ॥ स्वशरी-
रानुसारेणसूत्रेणपरिवेष्टयेत् ॥ २८ ॥ रक्तपट्टेनसं-
छाद्यहस्तेनीत्वानरःसुधीः ॥ मंत्रः ॥ देवतेदिति-
रूपेत्वांनमामिकामरूपिणीम् ॥ सततंसरजांबाधां
निवारयशुभानने ॥ २९ ॥ इतिमंत्रंसमुच्चार्यसप्त-
भिःप्रणतिंचरेत् ॥ द्विजायचदद्दौदानंदक्षिणाभिमु-
खोभवेत् ॥ ३० ॥ एवंपुनर्वसोःशांतेरोगनिर्मुक्ततां

रोग होताहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते और मृत्युयोगकी शांतिके वास्ते दान कराना चाहिये ४ चार तोले सुवर्णकी शेष नागकी मूर्ति बनवाके उसपर १२ अंगुलका सपेद वस्त्र आच्छादित करके रोगीके शरीरके अनुमान सूत लेके नागके पुच्छको वेष्टित करदे फिर एक पत्र लेके उसमें मूलोक्त मंत्र लिखके तीन सेर चावल डालके उसमें शेषनागको स्थापनकरके उत्तराभिमुखहोके तपस्वी ब्राह्मणको देदेवे इस दानके करनेसे रोगी मृत्युयोगसे छूटके बहुत वर्षोंतक जीवताहै ॥ इत्याश्लेषादानशांतिविधिः ॥ ९ ॥

अथमघायांरोगसंभवेमघादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचगारुडे ॥ मघायांजायतेपीडाज्वरदाहसमन्विता ॥ विंशतिवारसंभूतापितृदोषसमुद्भवा ॥ तद्दोषविनिवृत्त्यर्थंपितृशांतिसमाचरेत् ॥ ४२ ॥ पलतुर्यप्रमाणेनस्वर्णमूर्तिंचकारयेत् ॥ श्वेतवस्त्रे लिखेन्मंत्रंछादयेत्तेनतन्मुखम् ॥ ४३ ॥ मंत्रः ॥ विंशतिवारजांपीडांनिवारयगदाधर ॥ पितृदेवनमस्तुभ्यंशरीरारोग्यतांकुरु ॥ ४४ ॥ मघानक्षत्ररोगस्यशांतिर्दानविधानतः ॥ द्विजायऋक्पाठकायदानंवृद्धायदापयेत् ॥ ४५ ॥

इति मघादानशांतिविधिः ॥ १० ॥

भाषा—मघानक्षत्रमें रोग होनेसे मघाकी शांति लिखतेहैं गरुड पुराणमें लिखाहै.—पितृदोषसे मघानक्षत्रमें ज्वरदाहादिककी पीडा २० दिन रहनेवाली होतीहै. तद्दोष शमनताके वास्ते

पुष्य नक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा होतीहै; तद्दोषके शमनताके वास्ते शांति; दान करना चाहिये १ एक तोला सुवर्णकी बृहस्पतिकी मूर्ति बनवाके पीछे एक सुपेदवस्त्रपर हलदीसे मूलोक्त मंत्र लिखके सातसेर.चनेकी दाल उसमें डालके उसपर मूर्ति स्थापन करे फिर अपने शरीरके अनुमान पीला सूत्र नापके उसी चनेकी दालमें रखके पश्चिमकी तरफ मुखकरके ब्राह्मणको दान देदेवे । ऐसे बृहस्पतिके दानसे रोगी रोगसे मुक्त हो जाताहै ॥ इति पुष्यदानशांतिविधिः ॥ ८ ॥

अथाश्लेपायांरोगसंभवआश्लेपादानशांतिर्लिख्यते॥ उक्तंचपाद्मेपातालखंडे॥आश्लेपायांभवेद्रोगोनागदोपसमुद्भवः ॥ तद्दोपशमनार्थायमृत्युयोगप्रशांतये ॥ ३७ ॥ शेपस्यप्रतिमांकुर्य्यात्पलमात्रसुवर्णतः ॥ द्वादशांगुलमानेनश्वेतवस्त्रेणछादयेत् ॥ ३८ ॥ शरीरसूत्रमानेनपुच्छंचपरिवेष्टयेत् ॥ प्रस्थत्रयप्रमाणेचतंडुलेपरिधायच ॥ ३९ ॥ तन्मध्येलेखयेन्मंत्रमुत्तराभिमुखोविशन् ॥ मंत्रः ॥ पातालवासिनेतुभ्यंमृत्युयोगादिशांतये ॥ नमोऽश्लेपापतेदेवशेपनागप्रसीदमे ॥४०॥इत्येतत्क्रियतेदानंत्राह्मणायतपस्विने॥मृत्युयोगाद्विमुच्येतपरमायुःसजीवति॥ ४१ ॥

इत्याश्लेपादानशांतिविधिः ॥ ९॥

भापा—आश्लेपानक्षत्रमें रोग होनेसेआश्लेपाकीशांतिलिखते हैं. पद्मपुराणके पातालखंडमें लिखाहै—सर्पोंके दोषसे.अश्लेषामें

सुवर्णकी मूर्ति बनवाके लाल वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके मूर्तिको उससे आच्छादित करके उत्तराभिमुख ब्राह्मणको दान करके गौसहित दे देवे यह दान देनेसे रोगी मृत्युयोगसे छूटके और बडी आयुको प्राप्त होताहै ॥

इति पूर्वाफाल्गुनीशांतिविधिः ॥ ११ ॥

अथोत्तरफाल्गुन्यांरोगसंभवे चोत्तरफाल्गुनीदान-शांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचनृसिंहपुराणे ॥ रोगोह्युत्तर-फाल्गुन्यांराक्षसीदोषसंभवः ॥ सप्तवासरजापीडा ज्वरादियुक्तदारुणा ॥ ९१ ॥ तदोपशमनार्थायशां-तिदानं समाचरेत् ॥ दध्योदनंमहाश्रेष्ठंबहुशर्करया-न्वितम् ॥ ९२ ॥ ब्राह्मणान्सप्तसंख्याकान्भोजनं कारयेद्बुधः ॥ पत्रेऽश्वत्थस्यसंलिख्यमंत्रंलाक्षारसेनच ॥ ९३ ॥ दक्षिणस्यांचदिग्भागेतडागेजलसंक्षये ॥ रोगिणंदर्शयित्वाचक्षिपेज्ज्वरप्रशांतये ॥ ९४ ॥ मंत्रः ॥ भगदेवपतेतुभ्यंनमःसलिलवासिने॥सप्तवा-सरजांपीडांनिवारयप्रसीदमे ॥ ९५ ॥ रोगान्निर्मुक्त-तांयातिचिरजीवीभवेन्नरः ॥ अल्पाद्विमुच्यतेरोगी भगदेवप्रसादतः ॥ ९६ ॥ इत्युत्तरफाल्गुनीदान-शांतिविधिः ॥ १२ ॥

भाषा—उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराफाल्गुनी-की शांति लिखतेहैं—नृसिंहपुराणमें लिखाहै—राक्षसके दोषसे उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें ज्वरादिक पीडा ७ रोज रहनेवाली

पितृशांति करानी चाहिये. १ तोले सुवर्णकी पितृमूर्ति बनवाके सपेद वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखकेउससे मूर्तिका मुख आच्छादित करके विधानपूर्वक वेदके पढे हुए वृद्ध ब्राह्मणको दान करके देदेवे ॥

इति मघादानशांतिविधिः ॥ १० ॥

अथपूर्वाफाल्गुन्यांरोगसंभवेपूर्वाफाल्गुनीदानशांतिर्लिख्यते ॥ रोगःस्यात्पूर्वफाल्गुन्यांदेवदोषसमुद्भवः ॥ मृत्युयोगः समाख्यातस्तद्दोषशमनायच ॥ ॥ ४६ ॥ शांतिंदानंसमाचक्रेगोदानंदानमुत्तमम् ॥ रक्तवर्णमयीं धेनुंरक्तवस्त्रेणछादिताम् ॥ ४७ ॥ भगस्यप्रतिमांकुर्य्यात्सुवर्णपलमात्रतः ॥रक्तवस्त्रेलिखेन्मंत्रंमूर्तिंचपरिछादयेत् ॥ ४८ ॥ मंत्रः ॥ भगायचनमस्तुभ्यंनृत्यूद्भवकलेवर ॥ मृत्युयोगभवां बाधांनिवारयसिमेप्रभो ॥ ४९ ॥ उत्तराभिमुखं विप्रंकृत्वादानंप्रदापयेत् ॥ मृत्युयोगाद्विमुच्येत परमायुर्भवेन्नरः ॥ ५० ॥

इति पूर्वाफाल्गुनीदानशांतिविधिः ॥ ११ ॥

भाषा—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाफाल्गुनीकी शांति लिखतेहैं. भगदेवके दोषसे होनेवाला रोग पूर्वाफल्गुनी नक्षत्रमें होताहै मृत्युयोग ऋषियोंने वर्णन कराहै तद्दोषशमनके वास्ते गौका उत्तम दान शांति कराना चाहिये लाल रंगकी गौ लाके लाल वस्त्रसे आच्छादित कर दे फिर ४ तोले-

उसपे १०तोले सुवर्णकी सुन्दर मूर्ति बनवाके स्थापन करके दक्षिण हाथमें तंडुल लेके ३ तीन वार मूलोक्त मंत्र पढके हस्तीपर गेरे,फिर कंबलसे आच्छादन करके पूर्वको मुख करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान करनेसे रोगी निरोगताको प्राप्त होजाताहै ॥ इति हस्तशांतिविधिः ॥ १३ ॥

अथचित्रायां रोगसंभवे चित्रादानशांतिर्लिख्यते ॥ चित्रायांजायतेरोगोविप्रद्रोहसमुद्भवः ॥ रुद्रवासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥ ६२ ॥ शांतिदानकरोधीमान्रोगनिर्मुक्ततांव्रजेत् ॥ धूम्रवर्णवृषंनीत्वागोधूमोन्मानसंख्यकम् ॥६३॥ ताम्रपात्रेनिधायात्ररक्तवस्त्रेणछादयेत् ॥ तद्वस्त्रेलिख्यतेमंत्रंनमस्कृत्यविधानतः ॥ ६४ ॥ मंत्रः ॥ त्वाष्ट्रदेवनमस्तुभ्यंचित्रेशायनमोस्तुते ॥ रुद्रवासरजंरोगंनिवारयसदाप्रभो॥ ॥ ६५ ॥ ब्राह्मणायददौदानमीशानाभिमुखोनरः ॥ त्वाष्ट्रदानविधिःप्रोक्तोनराणांरोगमुक्तये ॥ ६६ ॥

इति चित्रादानशांतिविधिः ॥ १४ ॥

भाषा–चित्रामें रोग होनेसे चित्राकीशांतिलिखते हैं.ब्राह्मणके द्रोहसे उत्पन्न होनेवाला रोग चित्रानक्षत्रमें होताहै वह पीडा ११ रोज रहती है तद्दोषकी शांतिके वास्ते बुद्धिमान् रोगी दान करनेसे रोगसे छूट जाता है खाखीरंगका बैल मँगाके फिर १ मनभर गेहूँ तांबाके पात्रमें भरके लालवस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके उसपर ढकके ईशानदिशाकीतरफ मुख करके ब्राह्मणको

होतीहै, तद्दोषके शमनके वास्ते शांति करानी चाहिये, ७ सात ब्राह्मणोंको दहीभात चीनी भोजन कराना चाहिये, फिर पीपलवृक्षके पत्तापर लाखके रससे मूलोक्त मंत्र लिखके रोगी-को दिखाके दक्षिणदिशामें सूखेतालावमें गेरदेवे ऐसे यत्न करनेसे रोगी रोगसे मुक्तहोजाताहै और बहुत काल जीवताहै ॥

इत्युत्तरफाल्गुनीदानशांतिविधिः ॥ १२ ॥

अथहस्तेरोगसंभवेहस्तदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तं चभविष्योत्तरे ॥ हस्तर्क्षेजायतेरोगोरविदोपसमुद्भवः ॥ पक्षवासरजापीडाज्वरदाहातिदारुणा ॥ ५७ ॥ तद्दोपशमनार्थयशांतिदानंसमाचरेत् ॥ द्विरदंगजमादायसूर्य्यमूर्तिविराजितम् ॥ ५८ ॥ दशकर्षप्रमाणेनसुवर्णप्रतिमाशुभा ॥ ततस्तंडुलमादायदक्षिणेचशुभेकरे ॥ मंत्रंत्रिभिःसमुच्चार्य्यगजोपरिपरिक्षिपेत् ॥ ५९ ॥ मंत्रः ॥ नमस्तुभ्यंगजेंद्रायद्विरदायजयेंपिणे ॥ पक्षवासरजांपीडांनिवारय प्रसीदमे ॥ ६० ॥ कंवलेनसमाच्छाद्यदद्याद्दानंद्विजायच ॥ पूर्वाभिमुखमास्थायनरोनेरुज्यतांव्रजेत्॥ ॥ ६१ ॥ इतिहस्तदानशांतिविधिः ॥ १३ ॥

भाषा–हस्तनक्षत्रमें रोग होनेसे हस्तकीशांति लिखतेहैं. सूर्यके दोपसे हस्तनक्षत्रमें रोग होताहै रोग उत्पन्न होके पंद्रह दिनतक ज्वरदाहादिककी दारुण पीडा रहतीहै, तद्दोप-.. वास्ते शांति करनी चाहिये, दोदांतका हाथी मँगाके

फिर १ बीजनापर मूलोक्त मंत्र लिखके वहभी वृषभपर रखके वायुकोणमें स्थित होके ब्राह्मणको दान दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे छूटके बहुत दिनतक जीवताहै ॥

इति स्वातिशांतिविधिः ॥ १५ ॥

अथविशाखायांरोगसंभवेविशाखादानशांतिर्लिख्यते उक्तंचस्कंदपुराणे ॥ विशाखायांभवेद्रोगोदेवाग्न्योर्दोषसंभवः ॥ तिथिवासरजापीडातद्दोपशमनाय च ॥ ७२ ॥ शक्राग्न्योःकारयेन्मूर्तिंकर्षमात्रसुवर्णजाम् ॥ चतुःप्रस्थप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ॥ ॥ ७३ ॥ पंचप्रस्थप्रमाणेनतिलश्वेतंनिधारयेत् ॥ मंत्रंतत्रलिखेद्धीमान्पीतरक्तेचवाससी ॥ पूर्वाभिमुख आविश्यदद्याद्दानंद्विजातये ॥ ७४॥ मंत्रः ॥देवेन्द्रायनमस्तुभ्यमग्नयेब्रह्मसाक्षिणे ॥ पक्षवासरजांपीडां निवारयप्रसीदमे ॥ ७५॥ ऊर्द्ध्वाधोमुखमास्थायनमस्कारद्वयंचरेत् ॥ रोगीनिर्मुक्ततांयातिविशाखादानशांतितः॥७६॥इतिविशाखादानशांतिविधिः॥१६॥

भाषा–विशाखामें रोग होनेसे, विशखाकी शांति लिखतेहैं ॥ स्कंदपुराणमें लिखाहै इंद्रके और अग्निके दोषसे विशाखानक्षत्रमें रोग होताहै वह पीडा १५ दिनतक रहतीहै तद्दोपकी शांतिके वास्ते १ एक तोला सुवर्णकी इंद्रकी और अग्निकी मूर्ति बनवाके ४ सेर वजनका कांसेका पात्र लेके उसमें ५ सेर सपेद तिल घालके उसमें मूर्तियोंको स्थापन करके फिर

वृषभ सहित दान करके देदेवे मनुष्योंके रोग दूर होनेके वास्ते चित्राकी दानविधि यह कहीहै ॥ इति चित्राशांतिविधिः ॥

अथस्वात्यां रोगसंभवे स्वातिदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचवायुपुराणे ॥ स्वात्यांसंजायतेपीडावायुदोपसमुद्भवा ॥ मृत्युयोगःसमाख्यातस्तस्मिन्रोगीनजीवति ॥ ६७ ॥ शतौपधीकृतेवापिविना शांत्यानजीवति ॥ मृत्युयोगविनाशायशांतिदानं समाचरेत् ॥ ६८ ॥ सुंदरंवृपभंनीत्वासितश्यामंमहोज्ज्वलम् ॥ शतप्रस्थप्रमाणेनतंडुलंसितवस्त्रके ॥ ६९ ॥ वृपपृष्ठेसमाधायधूम्रवस्त्रपरिवृतम् ॥ वायुकोणेसमास्थायव्यजनेमंत्रमालिखेत् ॥ ॥ ७० ॥ मंत्रः ॥ अंजनीपतयेतुभ्यंवायवेस्वामिनेनमः ॥ मृत्युयोगभवांबाधां निवारयप्रसीदमे ॥ द्विजायचददेदानंपरमायुः सजीवति ॥ ७१ ॥ इति स्वातिदानशांतिविधिः ॥ १५ ॥

भापा—स्वातिनक्षत्रमें रोग होनेसे स्वातीकी शांति लिखतेहैं ॥ वायुके दोपसे स्वातिमें पीडा होती है यह मृत्युयोग शास्त्रमें वर्णन कियाहै शत औपधीके करनेसेभी वगैर शांतिके स्वातिमें होनेवाली पीडा शमन नहीं होतीहै इसीवास्ते मृत्युयोग दूर करनेको शांतिदान करना चाहिये बहुत सुन्दर कुछ श्याम कुछ सपेद ऐसा बैल मँगावे फिर २ ॥ अढाई मन चावलसपेद वस्त्रमें बांधके बैलकी पीठपे रखके खाकी वस्त्र उसपे और ढकदे

पूर्वक शांति करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाता है॥ इत्यनुराधा-शांतिविधिः ॥ १७ ॥

अथज्येष्ठायारोगसंभवेज्येष्ठादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचशक्रयामले ॥ ज्येष्ठायांसंभवोरोगोमृत्युयोगसमाह्वयः ॥ नजीवतिकदारोगीदानशांत्यादिभिर्विना॥ ८२ ॥तद्दोपशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत्॥ कर्षमात्रं सुवर्णं च पीतवस्त्रे निवेशयेत् ॥ तन्मध्येलेखयेन्मंत्रंपूर्वाभिमुखआविशन् ॥ ८३ ॥ मंत्रः ॥ शक्रायदेवदेवायनमस्तुभ्यं प्रसीदमे ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयशचीपते ॥ ८४ ॥ इतिगुप्तंकृतंदानंरोगान्मृत्योर्विमुंचति ॥ दीर्घायुर्जीवतेलोकेदानशांतिप्रभावतः ॥ ८५ ॥

इतिज्येष्ठादानशांतिविधिः ॥ १८ ॥

भाषा—ज्येष्ठानक्षत्रमें रोग होनेसे ज्येष्ठाकी शांति लिखतेहैं-शक्रयामलमें लिखाहै—ज्येष्ठानक्षत्रमें यदि रोग उत्पन्न होवे वह मृत्युयोगकी माफिक होताहै. वगैर दानशांतिके रोगी काअच्छा होना असंभवहै. इसवास्ते तद्दोपशमनाके हेतु शांति करना चाहिये, एक पीला कपडा लेके उसपर मूलोक्त मंत्र लिखके १तोला सुवर्ण बांधके पूर्वको मुखकरके ब्राह्मणको दे देवे यह गुप्तदान करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै और दीर्घायु होजातीहै ॥ इति ज्येष्ठादानशांतिविधिः ॥ १८ ॥

अथमूलेरोगसंभवेमूलदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचादिपुराणे ॥ मूलेसञ्जायतेरोगोब्रह्मनाचारसमुद्भवः ॥

पीला और लाल वस्त्रपर मूलोक्तमंत्र लिखके मूर्तियोंको उठाके पूर्वको मुख करके ब्राह्मणको दे देवे तत्पश्चात् ऊपरको मुख करके और नीचेको मुख करके दो नमस्कारकरे ऐसे विशाखाकी शांति करानेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इति विशाखाशांतिः १६

अथानुराधायांरोगसंभवेऽनुराधादानशांतिर्लिख्यते ॥ रोगःस्यादनुराधायांमित्रदेवस्यदोषतः ॥ पष्टिवासरजाबाधातद्दोषशमनायतु ॥ ७७ ॥ कर्षार्द्धपरिमाणेनमूर्तिंरुक्मेणकारयेत् ॥ विधिनामित्रदेवस्य रक्तवस्त्रेणछादितम् ॥ ७८ ॥ प्रस्थत्रयप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ॥ तत्रमंत्रंलिखित्वाचदधिप्रस्थं समावपेत् ॥ ७९ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वाब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥ मंत्रः ॥ मित्रदेवनमस्तुभ्यमनुराधापतयेनमः ॥ निवारयसिमेबाधांपष्टिवासरसंभवाम् ॥ ॥ ८० ॥ कुर्य्याच्छान्तिविधानेनरोगान्निर्मुक्ततांनयेत् ॥ ८१ ॥ इत्यनुराधादानशांतिविधिः ॥ १७ ॥

-भाषा-अनुराधानक्षत्रमें रोग होनेसे अनुराधाकी शांति लिखतेहैं मित्रदेवके दोषसे अनुराधामें रोग होताहै ६० दिनतक पीडा रहतीहै तद्दोषकी शमनताके वास्ते ६ मासे सुवर्णकी मूर्ति मित्रदेवकी बनवाके लाल वस्त्रसे आच्छादित करके फिर तीनसेरके वजनमें कांसीका पात्रलेके उसमें मूलोक्तमंत्र लिखके और दही घालके उत्तरकीतरफ मुखकरकेब्राह्मणको दे देवेविधान-

पावनरूपायव्यापिनेपरमात्मने ॥ मृत्युयोगभवां बाधांनिवारयचक्रेशव ॥ ९२ ॥ दानंदत्त्वाब्राह्मणाय मृत्युबन्धाद्विमुंचति ॥ मृत्युयोगकृताद्दानात्परमायुःसजीवति॥९३॥इतिपूर्वाषाढदानशांतिविधिः २०॥

भाषा—पूर्वाषाढनक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाषाढकी शांति लिखतेहै कूर्मपुराणमें लिखाहै—जलके दोषसे पूर्वाषाढनक्षत्रमें रोग मृत्युयोगकी माफिक होताहै तद्दोषकी शमनताके वास्ते ५ पांच हाथका सपेद वस्त्र लेके उसपर मूलोक्त मंत्र लिखके ७ सात सेर चावल उसमें बांधके पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके प्रथम जलका पुजन करके ब्राह्मणको दान देनेमे मृत्युकी बाधासे रोगी छूटके बहुत दिनतक जीवताहे ॥

इति पूर्वाषाढशांतिविधिः ॥ २० ॥

अथोत्तराषाढेरोगसंभवेरोगदानशांतिर्लिख्यते ॥ रोगःस्यादुत्तराषाढेश्राद्धलोपसमुद्भवः ॥ मासपीडा समुद्भूतातद्दोषशमनायच ॥ ९४ ॥ पलद्वयप्रमाणेनसुवर्णेनचकारयेत् ॥ प्रतिमांविश्वदेवस्यश्वेतवस्त्रपरिवृताम् ॥ ९५ ॥ दशप्रस्थानुमानेनसिततंडुलमुत्क्षिपेत् ॥ लिखेन्मंत्रंचतत्रैवपश्चिमाभिमुखोवसन् ॥ ९६ ॥ मंत्रः ॥ नमोविश्वप्रबोधायविश्वदेवनमोस्तुते ॥ मासोद्भवमहापीडांनिवारयसनातन ॥९७॥ ब्राह्मणायददेद्दानंरोगंनिर्मुक्ततांनयेत ॥ इत्युत्तराषाढदानशांतिविधिः ॥ २१ ॥

नववासरजापीडातद्दोपशमनायच ॥ ८६ ॥ पलद्वयसुवर्णेननैर्ऋतप्रतिमाकृता ॥ श्यामवस्त्रेणसंछाद्य दक्षिणाभिमुखोविशन् ॥ ८७ ॥ प्रस्थद्वयघृतंनीत्वालोहपात्रेनिधापयेत्॥नवभिरुच्चरेन्मंत्रंमुखंतत्रविलोकयेत् ॥ ८८॥ मंत्रः ॥ नमस्तेदैत्यराजायनैर्ऋतायकृतार्थिने ॥ नववासरजांपीडांनिवारयचतुष्टिद ॥ दत्त्वादानञ्चविप्रायरोगंनिर्मुक्तांनयेत् ॥ ८९ ॥

इति मूलदानशांतिविधिः ॥ १९ ॥

भाषा–मूलनक्षत्रमें रोग होनेसे मूलकी शांति लिखते हैंआदिपुराणमें लिखाहै-आचाररहित रहनेसे मूलनक्षत्रमें रोग पैदा होता है नौरोजतक पीडा रहती है तद्दोपकी शांतिके वास्ते ८ तोले सुवर्णकी नैर्ऋत देवकी मूर्ति बनवाके कालेवस्त्रसे आच्छादित करदे फिर दोसेर घृत लोहके पात्रमें घालके दक्षिणकी तरफ मुख करके ९ नौवार मूलोक्त मंत्र पढके रोगी अपना मुख देखके मूर्तिसहित ब्राह्मणको दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै॥

इति मूलशांतिविधिः ॥ १९ ॥

अथपूर्वाषाढेरोगसंभवेपूर्वाषाढदानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचकोर्मे ॥ पूर्वाषाढेभवेद्रोगोजलदोषसमुद्भवः ॥ मृत्युयोगः समाख्यातस्तद्दोषविनिवृत्तये ॥ पंचहस्तप्रमाणेनसितवस्त्रंसमाददेत् ॥ ९० ॥ पश्चिमाभिमुखोभूत्वातंडुलंप्रस्थसप्तकम् ॥ तत्रैवलेखयेन्मंत्रंजलमादौप्रपूज्यच ॥ ९१ ॥ मंत्रः ॥ नमः

भाषा–श्रवणनक्षत्रमें रोग होनेसे श्रवणकी शांति लिखतेहैं ॥ वामनपुराणमें लिखाहै–माता पिताके दोषसे श्रवण नक्षत्रमें रोग होताहै ११ दिनतक ज्वरातिसारकी पीडा रहतीहै. तद्दोषकी शांतिके वास्ते दानविधि करानी चाहिये. ब्राह्मण निमंत्रित करके सपेद वस्त्र पहराने चाहिये. फिर ५ पांच हाथका सुपेद वस्त्र लेके उसपर मूलोक्त मंत्र लिखके फिर मृत्तिकाका कलश तंडुलोंसे पूर्ण करके १०सुपारी उसमें डालदे और १० रुपये डालदे फिर कलशपर वह वस्त्र ढकके पूर्वको मुख करके चंदनसे कलशका पूजन करके ब्राह्मणको दान दे देवे ऐसे दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाताहै और बहुत दिनतक जीताहै ॥ इति श्रवणशांतिः ॥ २२ ॥

अथधनिष्ठायांरोगसंभवेधनिष्ठादानशांतिर्लिख्यते॥ उक्तंचभविष्योत्तरे ॥ रोगःस्याद्धनिष्ठायामपमान-समुद्भवः॥पक्षवासरजापीडातद्दोषशमनायच १०४॥ प्रस्थत्रयप्रमाणेनकांस्यपात्रंचकारयेत् ॥ विलिप्य चन्दनेनैवशुष्कंकुर्य्याद्विधानतः॥ १०५ ॥ तन्मध्ये लिख्यतंमंत्रंसुवर्णस्यशलाकया ॥ पंचप्रस्थप्रमाणे-नतंडुलंतत्रनिक्षिपेत् ॥ १०६ ॥ हरितवस्त्रेणसंछा-द्यपश्चिमाभिमुखोभवन् ॥ रुक्ममुद्राद्वयंधृत्वादानं दद्याद्विजातये ॥ १०७ ॥ मंत्रः॥ वासुदेवायदेवाय धनिष्टेशायतेनमः॥ पक्षवासरजांपीडांनिवारयवसु-प्रद ॥ १०८ ॥ शांतिदानकृतेनापिरोगान्निर्मुक्ततां व्रजेत् ॥ इति धनिष्ठादानशांतिविधिः ॥ २३॥

भाषा—उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराषाढकी शांति लिखतेहैं श्राद्धकर्म्मके लोप करनेसे उत्तराषाढनक्षत्रमें रोग १ एक मासतक पीडा देनेवाला उत्पन्न होताहै तद्दोषके शमनके वास्ते विश्वेदेवकी मूर्ति ८ तोले सुवर्णकी बनवाके सपेद वस्त्रमें मूलोक्त मंत्र लिखके मूर्तिको उठाके एक पात्रमें १० दश सेर चावल घालके ऊपर मूर्तिस्थापन करके पश्चिमकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै॥

इत्युत्तराषाढशांतिः ॥ २१ ॥

अथश्रवणेरोगसंभवेश्रवणादानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचवामनपुराणे ॥ श्रवणर्क्षेभवेद्रोगोमातृपित्रोस्तुदोषजः ॥ शिववासरजापीडाज्वरातिसारसंभवा ॥ ९८ ॥ तद्दोपशमनार्थायशांतिदानंसमाचरेत् ॥ निमंत्र्यब्राह्मणंश्रेष्ठंसितवस्त्रंमनोहरम् ॥ ॥ ९९ ॥ पंचहस्तमितंवस्त्रंमंत्रंतत्रलिखेद्बुधः ॥ सिततंडुलपूर्णंचवटंमृन्मयमुत्तमम् ॥ १०० ॥ दशपूगफलंमध्येदशमुद्रासमाकुलम् ॥ पूर्वाभिमुखआविश्यचंदनेनसमर्चयेत ॥ १०१ ॥ मंत्रः ॥ विष्णवेश्रवणेशायगोविंदायनमोनमः ॥ रुद्रवासरजांपीडांविनाशायमहोत्कटाम् ॥ १०२ ॥ इति शांत्याददेद्दानंब्राह्मणायविशेषतः ॥ रोगोनिर्मुक्ततां यातिपरमायुःसजीवति ॥ १०३ ॥ इतिश्रवणदानशांतिविधिः ॥ २२ ॥

लिखतेहैं जलके दोषसे शतभिषानक्षत्रमें रोग होताहै ११ दिन तक पीडा रहतीहै तद्दोषकी शमताके वास्ते ५ सेर पीतलका कलश मनोहर करके ३ सेर घृत वालके १ तोला सुवर्ण उसमें डालदे फिर चारों तरफ चन्दनसे लेप करके सुकालेवे उसमें मूलोक्त मंत्र लिखके सफेदवस्त्रसे आच्छादन करके उत्तरको तरफ मुख करके ब्राह्मणको दान देवे यह दान देनेसे रोगी निरोगी होके बहुत दिनतक जीवताहै ॥ इति शतभिषा दानशांतिविधिः ॥ २४ ॥

अथपूर्वाभाद्रपदेरोगसंभवेपूर्वाभाद्रपददानशांतिर्लिख्यते । उक्तंचमार्कंडेये ॥ पूर्वाभाद्रपदेरोगोजायते जीवघातजः ॥ मृत्युयोगस्समाख्यातस्तद्दोपशमनायच ॥ ११४ ॥ लोहपात्रंसमानीयनवप्रस्थप्रमाणतः ॥ सप्तप्रस्थतिलंनीत्वाश्यामवर्णशवोपमम् ॥ ११५ ॥ कृष्णवर्णामजांनीत्वाऽसितवस्त्रेण छादयेत् ॥ आज्यंप्रस्थद्वयंतैलंतस्मिन्दद्यात्सुखंशुभम् ॥ ११६ ॥ तत्रैवसप्तभिर्मंत्रंपठित्वामाषमुत्क्षिपन् ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्द्विजातये ॥ ११७ ॥ मंत्रः ॥अजपादनमस्तुभ्यंमृत्युबाधाव्यपोहक ॥ मृत्युयोगभवांबाधांनिवारयप्रसीदमे ॥ ॥ ११८॥ मृत्युयोगभवाद्रोगान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ इति पूर्वाभाद्रपददानशांतिविधिः ॥ २५ ॥

भाषा—पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होनेसे पूर्वाभाद्रपदकी शांति लिखतेहैं मार्कंडेयपुराणमें लिखाहै—जीवके घात करनेसे

भाषा–धनिष्ठानक्षत्रमें रोग होनेसे धनिष्ठाकी शांति लिखतेहैं भविष्योत्तरपुराणमें लिखाहै–किसीका अपमान करनेसे धनिष्ठानक्षत्रमें रोग होताहै १५ पंद्रह रोजतक पीडा रहती है तद्रोपकी शमनताके वास्ते ३तीनसेर वजनका कॉसेका पात्र लेके उसका मध्य चंदनसे लपनकरके सुका लेवे फिर स्वर्णकी शलाकासे उस पात्रके मध्यमें मूलोक्त मंत्र लिखके पांच शेर चावल घालके हरे कपडेसे आच्छादन करके उसमें २ सुवर्णकी मुद्रा रखके पश्चिमदिशाकी तरफ मुख करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इति धनिष्ठादानशांतिविधिः ॥ २३ ॥

अथशतभिषायांरोगसंभवे शतभिषादानशांतिर्लिख्यते ॥ शतभिषाभिधनक्षत्रेरोगःस्याज्जलदोषतः॥ रुद्रवासरजापीडातद्दोपशमनायच ॥१०९॥ रीत्याश्वपंचप्रस्थेनघटंकृत्वामनोहरम् ॥ प्रस्थत्रयंघृतंनीत्वाकर्षंस्वर्णंतुप्रक्षिपेत् ॥ ११० ॥ समंताच्चंदनेनैव लेपयेच्छुष्कमाचरेत् ॥ तत्रैवलेखयेन्मंत्रंसितवस्त्रेण छादयेत् ॥ १११ ॥ मन्त्रः ॥ वरुणायनमस्तुभ्यंदेवायवरदायिने ॥ रुद्रवासरजांपीडांनिवारयकलाधर ॥ ११२ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादानंदद्याद्द्विजातये॥ नैरोग्यतांव्रजेद्रोगीपरमायुः सजीवति॥११३॥

इति शतभिषादानशांतिविधिः ॥ २४ ॥

भाषा–शतभिषानक्षत्रमें रोग होनेसे शतभिषाकी शांति

तद्दोषके शमनके वास्ते १ सेर वजनका ताम्रपात्र लेके उसमें चणोंकी दाळ १ सेर भर घालके उसपर १ तोला सुवर्ण रखके पीला वस्त्रपर मूलोक्त मंत्र लिखके पात्र आच्छादन करदेवे फिर पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके सातवार नमस्कार करके वह सब वस्तु और सुवर्णकी मुद्रा ब्राह्मणकोदे देवे,यह दान देनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाताहै ॥ इत्युत्तराभाद्रपदशांतिविधिः॥ २६॥

अथरेवत्यांरोगसंभवेरेवतीदानशान्तिर्लिख्यते ॥
उक्तंचब्रह्मयामले ॥ रेवत्यांजायतेरोगःपर्वदोपसमुद्भवः ॥ षष्टिवासरजापीडातद्दोपशमनायच॥१२३ ॥ रक्तवर्णमयीधेनुंपीतवस्त्रेणछादिताम् ॥ कांस्यपात्रं शुभंकार्यंपंचप्रस्थप्रमाणकम् ॥ १२४ ॥ कर्षमात्रसुवर्णस्यपूष्णोमूर्तिंसमाचरेत् ॥ मंत्रंपात्रसमंतात्तु चन्दनेनलिखेद्बुधः ॥ १२५ ॥ मंत्रः ॥ पूषणेरेवतीशायदेवदेवायतेनमः ॥ षष्टिवासरजांबाधांनिवारय कृपाकर ॥ १२६ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वादद्याद्दानं द्विजातये ॥ रोगीनिर्मुक्ततांयातिपरमायुःसजीवति ॥१२७॥नक्षत्रसप्तविंशत्यांरोगेचशांतिमाचरेत्॥ दानंदद्याद्विधानेनरोगान्निर्मुक्ततांययौ॥१२८ ॥ऋक्षेपुवर्तमानेपुनित्यंदानंकरोतियः ॥ रोगंकदापि नो पश्येन्नीरोगःसर्वदाभवेत् ॥ १२९ ॥ आयुरारो- [illegible] सौख्यमाप्नुयात् ॥ १३० ॥

पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होताहै वह मृत्युयोगके माफिक मुनियोंने कहाहै तद्दोषकी शांतिके वास्ते ९ सेर वजनमें लोहका पात्र लाके उसमें ७ सेर तिल काले भर देवै फिर एक काली बकरी लाके उसको काला कपडा उढाके दो सेर तिलोंका तेल एक पात्रमें घालके रोगी अपना मुख देखके ७ सात बार मूलोक्त मंत्र पढके ऊपरको उडद फेंके फिर उत्तरको मुख करके लोहपात्र,बकरी, तैल सब वस्तु दान करके ब्राह्मणको दे देवे यह दान करनेसे रोगी रोगसे छूट जाताहै इसमें कुछ संशय नहीं ॥ इति पूर्वाभाद्रपदशांतिः ॥ २५ ॥

अथोत्तराभाद्रपदरोगसंभवेतद्दानशांतिर्लिख्यते ॥ उक्तंचवायुपुराणे ॥ रोगः स्याद्रुत्तराभाद्रेदेवदोषसमुद्भवः ॥ सप्तवासरजापीडातद्दोषशमनायच ॥ ॥ ११९ ॥ नीत्वाकर्षंसुवर्णंतुताम्रपात्रंचप्रस्थकम् ॥ चणकद्विदलंप्रस्थंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ १२० ॥ रुक्ममुद्राद्वयंन्यस्यपश्चिमाभिमुखोभवन् ॥ पीतवस्त्रेलिखेन्मंत्रंसप्तभिःप्रणतिं चरेत् ॥ १२१ ॥ मंत्रः ॥ अहिर्बुध्न्यनमस्तुभ्यमुग्रवेगनमोस्तुते ॥ सप्तवासरजांपीडांनिवार्यप्रसीदमे ॥ १२२ ॥ ब्राह्मणायदद्योदानंरोगनिर्मुक्ततांव्रजेत् ॥ इत्युत्तराभाद्रपददानशांतिविधिः ॥ २६ ॥

भाषा—उत्तराभाद्रपदनक्षत्रमें रोग होनेसे उत्तराभाद्रपदकी शांति लिखतेहैं, वायुपुराणमें लिखाहै,देवके दोषसे उत्तराभाद्रनक्षत्रमें सातदिनतक रहनेवाला रोग उत्पन्न होताहै

इतिसप्तविंशतिनक्षत्रेपुरोगसंभवेसप्तविंशतिनक्षत्रदा-
नशांतिविधिः समातोऽभूत् ॥ २७ ॥

भाषा—रेवतीनक्षत्रमें रोग होनेसे रेवतीकीशांति लिखतेहैं ब्रह्मयामलमें लिखाहै पर्वदोषसे रेवतीनक्षत्रमें होनेवाला रोग६० दिनतक तकलीफ देनेवाला होताहै. तद्दोषकी शांतिके वास्ते लालरंगकी गौ लाके पीला वस्त्रसे उसको आच्छादित करके ५ पांचसेर वजनका कांसीका पात्र लेके उसमें १ तोला सुवर्ण-की मूर्ति पुषा देवकी बनवाके स्थापन करदेवे फिर उस पात्रके चारोंतरफ चंदनसे मन्त्र लिखके उत्तरको मुख करके ब्राह्मणको दान दे देवे । यह दानकरनेसे रोगी रोगसे मुक्तहोकेबहुतदिनतक जीताहै इन सप्तविंशति २७नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें रोगहो उसी नक्षत्रकी शांति करनेसे रोगी तत्काल रोगसे मुक्त होजाताहै और जो पुरुष नित्य नक्षत्रोंका दान करता रहताहै उसके किसी समयमें रोग नहीं होता है उसकी आयु नीरोग होती है कुटुम्ब-में सुख रहताहै ॥ २७ ॥

इतिसप्तविंशतिनक्षत्राणां शांतिविधिः समाप्तः ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीमप्रेस. खेतवाडी—मुंबई

इतिसप्तविंशतिनक्षत्रेषुरोगसंभवेसप्तविंशतिनक्षत्रदानशांतिविधिः समाप्तोऽभूत् ॥ २७ ॥

भाषा–रेवतीनक्षत्रमें रोग होनेसे रेवतीकीशांति लिखतेहैं ब्रह्मयामलमें लिखा है पर्वदोषसे रेवतीनक्षत्रमें होनेवाला रोग६० दिनतक तकलीफ देनेवाला होताहै. तद्दोषकी शांतिके वास्ते लालरंगकी गौ लाके पीला वस्त्रसे उसको आच्छादित करके ५ पांचसेर वजनका कांसीका पात्र लेके उसमें १ तोला सुवर्ण-की मूर्ति पूषा देवकी बनवाके स्थापन करदेवे फिर उस पात्रके चारोंतरफ चंदनसे मन्त्र लिखके उत्तरको मुख करके ब्राह्मणको दान दे देवे । यह दानकरनेसे रोगी रोगसे मुक्तहोकेबहुतदिनतक जीताहै इन सप्तविंशति २७नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें रोगहो उसी-नक्षत्रकी शांति करनेसे रोगी तत्काल रोगसे मुक्त होजाताहै और जो पुरुष नित्य नक्षत्रोंका दान करता रहताहै उसके किसी समयमें रोग नहीं होता है उसकी आयु नीरोग होती है कुटुम्ब में सुख रहताहै ॥ २७ ॥

इतिसप्तविंशतिनक्षत्राणां शांतिविधिः समाप्तः ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,